कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 347, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 13 जनवरी 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

समिति के साथ की बैठक, वैज्ञानिकों से की बातचीत, औली में होने वाले गेम्स की भी चर्चा की

जोशीमठ: बेहतर से बेहतर मुआवजा दिया जाएगा

जोशीमठ। मुख्यमंत्री ने गुरुवार को जोशीमठ स्थित नरसिंह भगवान के मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना की और देश-प्रदेश के साथ जोशीमठ वासियों के कल्याण की कामना की। इसके बाद उन्होंने पारदर्शी वितरण एवं पुनर्वास पैकेज की दर निर्धारित करने की गठित समिति के साथ बैठक की। उन्होंने हित धारकों को बेहतर मुआवजा देने, वैज्ञानिकों से बातचीत की और औली में होने वाले गेम्स की चर्चा की। वह आज भी प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर स्थानीय लोगों से भेंट वार्ता करेंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी दो दिवसीय जोशीमठ प्रवास पर कल देर सायं जोशीमठ पहुंचे थे। मुख्यमंत्री धामी ने आज जोशीमठ में अपने दिन की शुरूआत नरसिंह मंदिर में भगवान की पूजा अर्चना से की। यहां उन्होंने दंडी स्वामी गोविंदानंद सरस्वती महाराज के सानिध्य में भगवान नरसिंह के द्वार पर गौ दान पूजा भी की। इस मौके पर श्री बद्रीनाथ के निवर्तमान धर्माधिकारी आचार्य भुवन चन्द्र उनियाल भी मौजूद रहे। इसके बाद मुख्यमंत्री ने जोशीमठ में भू धंसाव से प्रभावित परिवारों को अंतरिम पैकेज के पारदर्शी वितरण एवं पुनर्वास पैकेज की दर निर्धारित किए जाने को गठित समिति के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर गठित समिति के सदस्यों के सुझावों पर बाजार दर तय की जाएगी। प्रभावित हितधारकों के हितों का पूरा ध्यान रखते हुए बेहतर से बेहतर मुआवजा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रभावित लोगों को मानसिक रूप से भी सबल बनाना है। सरकार की ओर से अधिकतम जो हो सकता है, वह किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि

फरवरी में औली में गेम्स होने है। कुछ महीने बाद चारधाम यात्रा शुरू होने जा रही है। हमें यह भी देखना होगा की जोशीमठ से बाहर कोई गलत संदेश न जाए, ताकि स्थानीय लोगों की आजीविका प्रभावित न हो। इसका हम सबको ध्यान में रखते हुए काम करना है। मुख्यमंत्री ने सुनील आइटीबीपी कैंप में सेना, आईटीबीपी, एनडीआरएफ, और भू धंसाव की जांच में लगे विभिन्न प्रतिष्ठानों के वैज्ञानिकों, जिला प्रशासन, पुलिस एवं आवश्यक सेवाओं से जुड़े जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने कहा कि नागरिकों की सुरक्षा हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

आपदा की घड़ी में तालमेल बनाकर करें काम: धामी

सीएम धामी ने लोगों की सुरक्षा के दृष्टिगत सभी इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने भू धंसाव की जांच में लगे विभिन्न प्रतिष्ठानों के वैज्ञानिकों से भी वार्ता की और जोशीमठ में भू धंसाव कारणों में चल रहे अध्ययन और शोध के बारे में जानकारी ली। वैज्ञानिकों ने उन्हें अब तक की जांच के बारे में अवगत कराया।

उन्होंने स्थानीय जनप्रतिनिधियों, गण्यमान्य नागरिकों के साथ बैठक की। उन्होंने सभी को आपदा की घड़ी में शासन प्रशासन के साथ तालमेल बनाकर काम करने की बात कही। उन्होंने कहा कि जो लोग प्रभावित हैं, उनकी जान माल की सुरक्षा करते हुए उनके लिए आगे का रास्ता बनाना हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा की जिन लोगों के मकान, दुकान, व्यवसाय प्रभावित हुए है उन सभी को अंतरिम सहायता के रूप में 1.50 लाख तत्कालिक रूप से दिए जा रहे हैं। प्रभावित लोगों के पुनर्वास के लिए सरकार हर संभव मदद करेगी। कतिपय लोग जोशीमठ को लेकर गलत माहौल बना रहे हैं। इससे हमारे लोगों का नुकसान हो रहा है उनकी आर्थिकी प्रभावित हो रही है।

जोशीमठ: हर संभव मदद मुहैया कराने को तैयार: सेना प्रमुख

नई दिल्ली: सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने गुरुवार को जोशीमठ के मौजूदा हालात पर कहा कि हम स्थानीय प्रशासन को हर संभव मदद मुहैया कराएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर नागरिक प्रशासन की ओर से रेस्क्यू ऑपरेशन में सेना की मदद मांगी जाती है, तो हम पूरी तरह तैयार हैं। सेना प्रमुख जनरल पांडे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि चीन सीमा से लगे इलाकों में स्थित 20-25 सेना के भवनों में दरारें आई हैं। यहां के स्टाफ को अन्य जगह स्थानांरित किया गया है, जरूरत पड़ने पर ऊंचाई के इलाके औली में भेजा जाएगा। सीमा के करीबी इलाकों में कई सड़कों में भी दरारें आई हैं, जिन्हें बीआरओ के जरिए ठीक कराया जा रहा है। अग्रिम इलाकों तक हमारी पहुंच और परिचालन संबंधी तैयारियों पर कोई असर नहीं पड़ा है। उन्होंने कहा कि उत्तरी सीमाओं पर स्थिति स्थिर है, लेकिन अप्रत्याशित है। हम सात मुद्दों में से पांच को हल करने में सफल रहे हैं। हमने सैन्य और राजनयिक दोनों स्तरों पर चीन से बात करना जारी रखा है। किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए हमारे पास पर्याप्त भंडार है। एलएसी पर तैनात हमारे सैनिक दृढ़ तरीके से चीन के उन प्रयासों को रोकने में सक्षम रहे है।

'रामराज्य के विचार का वैश्विक सांस्कृतिक केंद्र बनेगा राम मंदिर'

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने महर्षि महेश योगी विश्वविद्यालय में गुरुवार को आयोजित संत समागम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सबके लिए हर्ष की बात है कि अब अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बन रहा है। वह मंदिर केवल भगवान श्रीराम का मंदिर मात्र नहीं होगा, बल्कि रामराज्य के विचार का वैश्विक सांस्कृतिक केंद्र बनेगा। रक्षामंत्री सिंह ने कहा कि महर्षि योगी ने जिस राम राज्य की परिकल्पना पिछली शताब्दी के

आठवें दशक में की थी, वह उनके लिए केवल विचार नहीं था। उसको

पीएम के रोड शो के दौरान सुरक्षा में सेंध

हुबली/नई दिल्ली। कर्नाटक के हुबली में गुरुवार को एक युवक एसपीजी का सुरक्षा घेरा तोड़कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नजदीक पहुंच गया और उन्हें माला पहनाने की कोशिश की। हालांकि, सुरक्षाकर्मियों ने उसे तुरंत वहां से हटा दिया। प्रधानमंत्री मोदी 26वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए हुबली में थे। रोड शो के दौरान प्रधानमंत्री मोदी अपनी कार के फ़ुटबोर्ड पर खड़े होकर भीड़ का अभिवादन कर रहे थे। वहीं सड़क के दोनों ओर खड़े लोग गर्मजोशी से फूल बरसा कर प्रधानमंत्री का स्वागत कर रहे थे।

भोपाल गैस कांड: केंद्र की क्यूरेटिव याचिका पर फैसला सुरक्षित

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की संविधान बेंच ने भोपाल गैस पीड़ितों को 7400 करोड़ रुपये का अतिरिक्त मुआवजा दिलवाने की मांग वाली केंद्र सरकार की क्यूरेटिव याचिका पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस संजय किशन कौल की अध्यक्षता वाली बेंच ने सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। सुनवाई के दौरान यूनियन कार्बाइड कॉरपोरेशन ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि वो 1989 में हुए समझौते के अलावा भोपाल गैस पीड़ितों को एक भी पैसा नहीं देगा। कोर्ट ने 11 जनवरी को केंद्र पर सवाल उठाते हुए कहा था कि त्रासदी की भयावहता पर किसी को कोई संदेह नहीं है। त्रासदी के बाद जो मुआवजे का भुगतान किया गया है। उसपर कुछ सवालिया निशान जरूर है। सुनवाई के दौरान केंद्र की ओर से अटार्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने कहा था कि इस तरह की भयावहता की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानवीय दुर्घटना में परंपरागत सिद्धांतों से परे हटकर विचार किया जाना चाहिए। तब कोर्ट ने कहा था कि जब इस बात का आकलन किया गया तो इस तरह का आकलन करने के लिए आखिर कौन जिम्मेदार था। जस्टिस कौल ने कहा कि कल भी हमने पूछा था कि जब केंद्र सरकार ने फैसले को लेकर पुनर्विचार याचिका दाखिल नहीं की है तो वह क्यूरेटिव पिटीशन कैसे दाखिल कर सकते हैं। कोर्ट ने कहा था कि शायद इस मामले को तकनीकी रूप से न देखा जाए, लेकिन हर एक विवाद का कहीं तो अंत होना ही चाहिए।

खुदरा महंगाई दर दिसंबर में घटकर 5.72 फीसदी पर आई

नई दिल्ली। दिसंबर में खुदरा महंगाई दर घटकर 5.72 फीसदी पर आ गई है, जो एक साल का निचला स्तर है। खुदरा महंगाई दर लगातार दूसरे महीने आरबीआई के तय दायरे के नीचे रही है। पिछले महीने नवंबर में यह 5.88 फीसदी रही थी।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने गुरुवार को जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी है। आंकड़ों के मुताबिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा महंगाई दर दिसंबर में घटकर 5.72 फीसदी पर आ गई है, जो नवंबर में 5.88 फीसदी रही थी। खुदरा महंगाई दर का यह एक साल के नीचले स्तर है। एनएसओ के आंकड़ों के मुताबिक खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर घटकर दिसंबर में 4.19 फीसदी पर आ गई, जो नवंबर 2022 में 4.67 फीसदी रही थी।

दिसंबर महीने में ग्रामीण इलाकों में खाद्य वस्तुओं की महंगाई 5.05 फीसदी रही है, जो नवंबर में 5.22 फीसदी थी। इसी तरह शहरी इलाकों में खाद्य महंगाई दर 2.80 फीसदी रही है, जो नवंबर में 3.69 फीसदी रही थी। साग-सब्जियों की महंगाई दर घटकर -15.08 फीसदी पर आ गई है।

10 मार्च तक बढ़ा समय, आगामी चैत्र नवरात्र पर नए कलेवर में नजर आएगा विंध्यधाम

विंध्य कारिडोर का सौंदर्य देखने के लिए अभी करना होगा

मीरजापुर। भव्य-दिव्य विंध्य कारिडोर का सौंदर्य देखने के लिए देश-दुनिया को अभी और इंतजार करना पड़ेगा। दरअसल, कार्यदायी संस्था का दावा था कि मकर संक्रांति तक परिक्रमा पथ यानी आस्था का गलियारा बनकर तैयार हो जाएगा, लेकिन अब इसकी समय सीमा बढ़ा दी गई है। हालांकि आगामी चैत्र नवरात्र पर विंध्य कारिडोर का अविस्मरणीय व अलौकिक स्वरूप देश-दुनिया के सामने होगा और विंध्यधाम नए कलेवर में नजर आएगा।

विश्व फलक पर शुमार विंध्य क्षेत्र

के धार्मिक व आध्यात्मिक विरासत से देश-दुनिया को परिचित कराने के उद्देश्य से विंध्यधाम के चतुर्दिक विकास व पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विंध्य कारिडोर योजना बनाई थी। यह मुख्यमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट है। विंध्य कारिडोर का 30 अक्टूबर 2020 को कैबिनेट की मंजूरी मिली थी और नवंबर 2020 से काम शुरू हो गया था। मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट को अमलीजामा पहनाने के लिए सर्वसम्मति भूमि अधिग्रहण किया गया। भूमि अधिग्रहण कर ध्वस्तीकरण किया गया। कारिडोर निर्माण का रास्ता साफ होने पर एक अगस्त 2021 को गृह मंत्री अमित शाह व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शिलान्यास कर निर्माण कार्य शुरू कराया।

छुट्टा पशुओं के खिलाफ सरकार उठाए कारगार कदम : रालोद

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मनजीत सिंह ने छुट्टा पशुओं से किसानों की हो रही फसलों की बबार्दी पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने इसे लेकर गुरुवार को बताया कि किसानों की खून-पसीने से सींची फसलों को छुट्टा जानवर तबाह और बर्बाद कर रहे हैं लेकिन सरकार द्वारा कोई कारगर कदम नहीं उठाये जा रहे हैं जिससे किसानों में घोर हताशा और निराशा है। श्री सिंह ने बताया कि किसान संदेश अभियान के तहत बकाया गन्ना मूल्य तथा गन्ने का नया लाभकारी मूल्य घोषित कराने की

मांग के साथ-साथ किसानों को आवारा पशुओं से निजात दिलाने की भी मांग सूबे के मुख्यमंत्री से की जायेगी। उन्होंने बताया कि 14 जनवरी को प्रदेश भर में प्रातः 10 बजे हैशटैग किया जायेगा तथा 21 जनवरी को किसान एक साथ सामूहिक रूप से मुख्यमंत्री को सम्बोधित पत्र अपने-अपने जनपदों के डाकघरों के माध्यम से भेंजेगे।

अखिलेश को निवेशक नहीं, गाली बकने वाले अच्छे लगते हैं : खन्ना

लखनऊ। अखिलेश यादव के बयान पर योगी सरकार के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने पलटवार करते हुए कहा कि अखिलेश यादव को प्रदेश की समृद्धि अच्छी नहीं लगती है। उन्हें गाली-गलौज करने वाले लोग अच्छे लगते हैं। वह उद्योग को बढ़ावा नहीं दे सकते। वह गाली बकने वालों को बढ़ावा देते हैं।

योगी सरकार के वरिष्ठ मंत्री सुरेश खन्ना ने गुरुवार को यहां जारी एक बयान में कहा कि समाजवादी सरकार में निवेशक डरते थे। वह यूपी में उद्योग नहीं करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव समझ चुके हैं कि प्रदेश में बड़े पैमाने पर निवेश आएगा। उद्योग लगेगा और सपा जैसी पार्टी का अस्तित्व खत्म हो जाएगा और वह युवाओं को भ्रमित नहीं कर पाएंगे।सेन फ्रांसिस्को की एक कंपनी सलोनी हार्ट फाउंडेशन ने 60 मिलियन के निवेश की बात की है। पीजीआई को देने के लिए और इसका एमओयू भी साइन हुआ। जिस तरह से हीरानंदानी ग्रुप ने लंदन में योगी सरकार की प्रशंसा की है। यह उन्हें विचलित करने वाला है। खन्ना ने कहा कि योगी सरकार में उत्तर प्रदेश का विकास हुआ। यूपी की बड़ी उपलब्धि है कि आज लोग यूपी में निवेश को उत्सुक हैं। लोग यहां उद्योग लगाना चाहते हैं। आज देश, विदेश के निवेशक प्रदेश में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। लोग इसे सुरक्षित मानते हैं और यह बात 10,11,12 फरवरी को लखनऊ में देखी जा सकेगी। उल्लेखनीय है कि फरवरी में उप्र ग्लोबल इन्वेस्टर समिट होने जा रहा है। खन्ना ने कहा कि गंगा क्रूज यूपी की समृद्धि का प्रतीक है और यह विश्व की सबसे लंबी यात्रा कराएगा, लेकिन विपक्ष इससे दुखी है। विपक्ष के नेता बौखलाए हैं। गंगा में परिवहन की शुरूआत होगी तो आस-पास के लोगों के आवागमन में आसानी होगी। साथ ही साथ उत्पाद का भी ट्रांसपोर्टेशन होगा और लोगों को रोजगार मिलेगा।

अखिलेश यादव की गलती नहीं है। जनता ने इनको इतना नकार दिया है कि योगी सरकार जो भी अच्छा करती है, उसमें इनको बुराई दिखती है और जनता के हित में उठाए गए सभी कदम इन्हें गलत लगते हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि समाजवादी सरकार में लोग यूपी में निवेश और उद्योग लगाने में डरते थे। आज यूपी में निवेश का सबसे अच्छा वातावरण है। अखिलेश यादव गाली बकने वाले नेताओं को प्रमोट करते और उनकी प्रशंसा करते हैं। और जो लोग बीजेपी को गाली बकते हैं, उन्हें प्रमोट करते हैं। उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर सवाल खड़े किए। उन्होंने वाराणसी में आये क्रूज पर भी सवाल खड़ा किया और कहा कि इससे लोगों का रोजगार छिन जाएगा। लोग यहां मुक्ति के लिए आते हैं लेकिन भाजपा सरकार यहां कमाने की व्यवस्था कर रही है। इसी को लेकर योगी सरकार के मंत्री खन्ना ने अखिलेश यादव पर पलटवार किया है।

बासमती चावल के लिए जारी किए व्यापक नियामक मानक

नई दिल्ली। भारत में पहली बार भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने बासमती चावल के लिए व्यापक नियामक मानक जारी किये हैं, जिन्हें 1 अगस्त 2023 से लागू किया जाएगा। नए मानकों में बासमती चावल में प्राकृतिक सुगंध विशेषता होनी चाहिए। इनके अनुसार यह कृत्रिम रंग, पॉलिशिंग एजेंट और कृत्रिम सुगंधों से भी मुक्त होना चाहिए। इन नए मानकों का उद्देश्य बासमती चावल के व्यापार में सुधार लाना और घरेलू व वैश्विक स्तर पर उपभोक्ता हितों की रक्षा करना है।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से पहले ही करीब 10 लाख करोड़ रुपये के एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

निवेश लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रही योगी सरकार

लखनऊ। योगी आदित्यनाथ सरकार ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से एक माह पहले ही करीब-करीब 15 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त कर लिए हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि सरकार ने 10 जनवरी 2023 तक करीब 10 लाख करोड़ रुपये के एमओयू भी साइन कर लिए हैं। यह वही राशि है जिसे पहले ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का लक्ष्य बनाया गया था। हालांकि, विदेशों में मिले बेहतरीन रिस्पॉन्स के बाद लक्ष्य को 10 लाख करोड़ से बढ़ाकर 17 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया। अभी देश के विभिन्न शहरों और प्रदेश के मंडल मुख्यालयों व कई जिलों में रोड शो, इन्वेस्टर्स समिट होना बाकी है। इसे देखते हुए पूरी

संभावना है कि प्रदेश सरकार संशोधित लक्ष्य को भी पूर्णतः प्राप्त कर लेगी और इतिहास रचेगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी पांच वर्षों में यूपी को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया जा रहा है।

दो विभागों ने पार किया एक लाख करोड़ का आंकड़ा: विदेशों में हुए रोड शो में यूपी के प्रतिनिधिमंडलों को मिले जबर्दस्त रिस्पॉन्स के बाद प्रदेश सरकार की ओर से सभी विभागों को निवेश जुटाने के लिए नए टारगेट दिए गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार 10 जनवरी तक सरकार ने 9.10 लाख करोड़ रुपये के एमओयू साइन कर लिए हैं। प्रदेश सरकार के दो विभागों ने एमओयू के माध्यम से सबसे ज्यादा निवेश हासिल किया। डिपार्टमेंट एडिशनल सोर्सेज ऑफ एनर्जी को 60 हजार करोड़ के निवेश का लक्ष्य मिला था।

माध्यमिक परीक्षा : अब नहीं बदल सकेंगे कापियां, नकल पर लगेगा अंकुश

मीरजापुर। माध्यमिक शिक्षा परिषद ने आगामी 16 फरवरी से हाईस्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा की तिथियां घोषित कर दिया है। जनपद में परीक्षा के आयोजन की तैयारियां आरंभ हो गई हैं। सूचितापूर्ण और पारदर्शी तरीके से सकुशल परीक्षा कराने के साथ ही नकल माफिया पर अंकुश लगाने की कवायद की जा रही है। इसके लिए इस वर्ष यूपी बोर्ड परीक्षा में मोनोग्राम व बार कोड अंकित उत्तर पुस्तिकाओं का प्रयोग किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की 10वीं और 12वीं की प्री बोर्ड परीक्षाएं आगामी 16 फरवरी से होगी। इसके लिए जनपद में 119 परीक्षा केंद्र बनाया गया है। पूर्व में आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षाओं में विभिन्न केंद्रों पर नकल होने की शिकायतें आती रहती थीं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित इंटर कालेजों में नकल होने व उत्तर पुस्तिकाओं के बदलने की शिकायत भी होती है। ऐसे में इस वर्ष नकल पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से माध्यमिक शिक्षा परिषद ने मोनोग्राम व बार कोड अंकित उत्तर पुस्तिकाओं का प्रयोग किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल की वर्ष 2022 की परीक्षा में 21 हजार 812 बालक और 20 हजार 846 बालिका सहित 42 हजार 658 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। वहीं इंटरमीडिएट की परीक्षा में 17 हजार 394 बालक और 16 हजार 410 बालिका सहित 33 हजार 804 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। इस वर्ष 39 हजार 206 बालक और 37 हजार 256 बालिकाएं सहित।

खबर संक्षेप

विद्यालय से घर आ रही छात्रा का अपहरण

मऊआइमा। विद्यालय से घर आ रही हाईस्कूल की छात्रा का रास्ते में एक युवक अपहरण कर ले गया।छात्रा की माता ने युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासनीय एक महिला का आरोप है कि उसकी पुत्री 11 जनवरी को विद्यालय गयी थी। छुट्टी के बाद घर आ रही थी। तभी रास्ते में बहला फुसलाकर एक युवक उसकी पन्द्रह वर्षीय पुत्री का अपहरण कर ले गया। तमाम पता करने के बाद गुरूवार को छात्रा की मां ने मऊआइमा थाने में ग्राम दांदूपुर निवासी मोहम्मद फैय्याज पुत्र दस्तागीर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

अलाव जलाने से राहगिरों में खुशी की लहर

मऊआइमा। इस भीषण शीतलहरी से हर कोई परेशान है। लोग अधिकतर घरों में रहना पसंद कर रहे हैं। बहुत जरुरी काम से ही घरों से निकल रहे हैं। बताते हैं कि नगर पंचायत क्षेत्र में जगह जगह अलाव जला हुआ है। अब ग्राम हरखपुर में नदीम सादिक ,डाक्टर यादव ,जुनैद ,रामलखन ,शफीक आदि के सहयोग से चौराहे पर अलाव जला दिया गया है। जिससे राहगीरों को काफी राहत मिल रही है।

देवरख में अवैध प्लाटिंग पर फिर चला बुल्डोजर

70 बीघे में अवैध तरीके से की गई प्लाटिंग की बाउंड्रीवाल को गिराया

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी के देवरख उपरहार अरैल में बुधवार को भी प्रयागराज विकास प्राधिकरण ने अवैध तरीके से की गई प्लाटिंग के खिकाफ अभियान चलाकर लगभग 70 बीघे में हुई बाउंड्री वाल को तोड़ा गया।

जोनल अधिकारी बीपी सिंह के नेतृत्व में अवैध प्लाटिंग के विरुद्ध बुधवार को भी कार्रवाई की गई। इससे पूर्व भी देवरख में ही लगभग 120 बीघे से अधिक अवैध तरीके से की गई प्लाटिंग की बाउंड्रीवाल को गिराया गया था। कार्रवाई से प्लाटिंग करने वाले एवं भू माफियाओं में खलबली मची रही। बुधवार को भी 70 बीघे में की गई बाउंड्री वाल को कई जेसीबी के माध्यम से गिराया गया। जोनल अधिकारी के मुताबिक 70 बीघे में की गई द्वारा की गई प्लाटिंग की बाउंड्री वॉल को गिराया गया। कार्यवाही के दौरान नैनी पुलिस की फोर्स, अवर अभियंता श्रीरंग दुबे, कुवंर आनंद सिंह, पीडीए प्रवर्तन दल की टीम समेत अन्य कर्मचारी व अधिकारी मौजूद रहे।

पीडीए की कार्रवाई में दीवार गिरने से किसान हुआ घायल

अखंड भारत संदेश

आरोप है कि पैसे न देने पर जेई के द्वारा कराई गई कार्यवाही

झूंसी। क्षेत्र के उस्तापुर में चल रही पीडिए की कार्यवाही के दौरान एक वृद्ध किसान पर दस फिट ऊंची बाउंड्री वाल गिरने से अफरा तफरी का माहोल उत्पन्न हो गया। पीडीए कर्मचारियो की मदद से किसान को उपचार के लिए एसआरएन ले जाया गया जहाँ घायल किसान खतरे से बाहर बताया जा रहा है। वही घायल किसान के परिजनों ने पीडीए के जेई पर आरोप लगाया है कि पैसे न देने पर यह कार्यवाही की गई है।

प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा लगातार अवैध प्लाटिंग व अवैध निर्माण करने वालों पर कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में गुरुवार को पीडीए का दस्ता जोनल अधिकारी अजय कुमार के नेतृत्व में जेसीबी के साथ झूंसी के उस्तापुर महमूदाबाद में पहुंचा जहा अवैध बाउंड्री, पिलर जाने लगा। गांव के ही किसान रामचंद्र पासी 64 की बाउंड्री तोड़ने जेसीबी पहुची तो वो विरोध करने लगे और कहा कि यह हमारी पुश्तैनी जमीन है जिस पर वर्षों पहले खेती के लिए बाउंड्री बनाई गई थी लेकिन पीडीए के अधिकारियों ने उनकी एक न सुनी जेसीबी के छुटे ही पूरी बाउंड्री भरभरा कर गिर गई और दीवाल के पास खड़ा किसान रामचंद्र उसके नीचे दब गया। मौके पर अफरा-तफरी का माहौल उतपन्न हो गया पीडीए के कर्मचारियों के सयोग से किसान को अस्पताल ले जाया गया। घायल किसान के चचेरे भाई सत्यपाल ने पीडीए के जेई पर आरोप लगाया कि बुधवार को उसको ऑफिस में बुला कर निर्माण के लिए 5 लाख रुपए की मांग की गई थी। पैसे न देने पर यह कार्यवाही की गई।

ताला तोड़कर नगदी समेत शादी का कीमती सामान किया पार

अखंड भारत संदेश

सहसों। सात फरवरी को थी बहन की शादी, कैसे होगी बहन की शादी से भरी कड़ाके की ठंड में अंधेरी रात का फायदा उठाते हुए अज्ञात चोरों ने चकिया घरहरा गांव में बुधवार की रात घर का ताला तोड़कर नगदी समेत शादी के लिए रखा घर में कीमती सामान पार कर दिए। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों क्षेत्र के चकिया घरहरा गांव निवासी दीपक कुमार पुत्र स्वर्गीय लालचंद ने अपने बहन की शादी सात फरवरी को तय कर रखी है यानी कि सात फरवरी को बारात आनी है। उसी की तैयारी के लिए गहने, नगदी एवं कीमती कपड़े की खरीदारी कर रखी थी। बुधवार की रात मां बेटी तथा पुत्र दीपक बाहर के दरवाजे में ताला बंद कर अपने अपने कमरे में सोने चले गए। कोहरे से भरी ठंड की रात में अंधेरे का फायदा उठाते हुए अज्ञात चोरों ने दरवाजे का ताला तोड़कर घर के अंदर घुस गए। आहट सुनकर बहन रविता जग गई जब तक वह शोर मचा कर घरवालों को जगाती कि चोरों ने मुंह दबाकर नशीला पदार्थ सुंघा दिया। जिससे वह बेहोश होकर बरामदे में गिर पड़ी। मौका पाकर चोरों ने घर के अंदर रखा 50,000 रुपये नकदी, हजारों रुपए के आभूषण एवं लगभग 10000 रुपये के कीमती साड़ी व कपड़े तथा पीतल के बर्तन चोरों ने चोरी कर फरार हो गए । सुबह दीपक उठा तो बहन को बेहोश देखकर वह आश्चर्य चकित रह गया और उसकी आंखें फटी रह गईं। तत्काल मां को जगाया तथा कमरे में जाकर देखा तो कमरे का पूरा सामान बिखरा हुआ था। जांच पड़ताल करने पर पता चला कि शादी की तैयारी के नकदी रुपए समेत सारे गहने व कपड़े चोरों ने साफ कर दिए। शोर, पुकार व रोने की आवाज सुनकर पास पड़ोस के लोग मौके पर पहुंचे और पूछने लगे तो दीपक ने कहा कि अब कैसे होगी बहन की शादी। फिलहाल पीड़ित दीपक ने चोरी की लिखित तहरीर पुलिस चौकी में देकर कार्रवाई की मांग की है।

पुलिस की लचर नीति से ग्रामीणों में आक्रोश

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। ग्रामीणों की जनपंचायत में पुलिस द्वारा प्राथमिकी पंजीकृत नहीं किये जाने को लेकर शिकायत की जाती रही हैं।जिसको गंभीरता से लेते हुए जनसुनवाई फाउंडेशन द्वारा हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया । पीड़ित पक्ष जिनके साथ अन्याय हुआ है और फरियाद लेकर थानाध्यक्ष मेजा एवं चौकी प्रभारी प्रभारी कोहड़ार के पास बार-बार चक्कर लगा रहे हैं। बावजूद इसके प्राथमिकी पंजीकृत नहीं हो रही है। मोबाइल नंबर -9794400394, पर अपना आवेदन प्रेषित कर सकते हैं ।जिसे लेकर संबंधित विभागीय अधिकारियों से मिलकर या फि र मुख्यमंत्री तक आवेदन को पहुंचाकर अपराध को नियंत्रित करने का प्रयास किया जायेगा। फाउंडेशन के समन्वयक जयप्रकाश द्विवेदी ने बताया कि चौकी कोहड़ार अन्तर्गत विगत कई महीनों से लगातार छिनैती , सेंधमारी व चोरी की घटनाएं कारित हो रही हैं किन्तु चौकी प्रभारी की कारगुजारी के कारण प्राथमिकी तक पंजीकृत नहीं हो पाती है। जिससे अराजक तत्वों का मनोबल बढ़ा हुआ है। यहां तक कि यदि पीड़ित अपनी फरियाद लेकर पुलिस विभाग के बड़े अधिकारियों के पास जाता है तो चौकी प्रभारी एवं थानाध्यक्ष द्वारा पीड़ित पक्ष को ही अपराधी बताकर मुकदमे में फंसाने की कोशिश की जाती है। ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्हें संबंधित विभागीय अधिकारियों के समक्ष रखकर जांच कराने की जरूरत है। जनपंचायत में उपस्थित ग्रामीण राजकुमार मिश्र द्वारा आपबीती बताते हुए कहा गया कि दिनांक पहली जनवरी 23की रात्रि 9बजे डकैतों द्वारा अल्टो कार के सामने बाइक खड़ी करके डेढ़ लाख रुपए लूट लिया गया था। रहजनी करने वाले नामजद डकैतों के घर से पीड़ित की निशानदेही पर बिना नंबर प्लेट की डिस्कवर मोटरसाइकिल को पुलिस द्वारा कब्जे में लिया गया था, किन्तु प्राथमिकी तक पंजीकृत नहीं की गई बल्कि डकैतों को 151की धारा में चलान दिखाकर बाइज्जत बरी कर दिया गया जब पीड़ित द्वारा प्राथमिकी न पंजीकृत करने का कारण व डकैती में लूटे गए पैसे की रिकवरी न कराये जाने को लेकर संबंधित थाना प्रभारी से पूछा गया तो यह कहते हुए कि डकैती की प्राथमिकी पंजीकृत नहीं की जायेगी उल्टा पीड़ित पर हीआरोप लगाया जाने लगा। इसी तरह बाइक चोरी से पीड़ित विवेक सिंह की प्राथमिकी भी पंजीकृत नहीं किए जाने की बात भी प्रमाणित हुई। साथ ही थाना मेजा व चौकी-कोहड़ार अन्तर्गत भोजपुरवा गांव निवासी महराजदीन की पम्पिंगसेट व नरेंद्र कुमार मिश्र के पम्पिंगसेट तथा जगनायक प्रसाद का मोनोब्लाक की भी चोरी विगत 3माह में हुई हैं किन्तु प्राथमिकी पंजीकृत नहीं की गई। इसी तरह तख?ऊतारा निवासी डाक्टर बिहारी के घर में सेंध लगा कर चोरी हुई थी किन्तु पुलिस प्रशासन द्वारा चोरों को पकड़ने की बात तो दूर एफआईआर तक दर्ज नहीं की गई। थानों में सक्रिय दलालों द्वारा मुंह मांगी रकम ही एकमात्र प्राथमिकी पंजीकृत कराने वाले विकल्प को देखते हुए भुक्तभोगियों को सन्तोष करना पड़ता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी दशरथ प्रसाद मिश्र ने बताया कि संबंधित थाना प्रभारी मेजा,ए.सी.पी.मेजा, चौकी प्रभारी कोहड़ार से बार-बार आग्रह किया गया कि क्षेत्र में हो रही अराजकता को गंभीरतापूर्वक लेते हुए कार्यवाही सुनिश्चित करें किन्तु शासन की मंशा मुताबिक पुलिस अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पा रही है। कोहड़ार मंडल के भा.ज.पा.अध्यक्ष गोविन्द प्रसाद मिश्र एवं विधायक राजमणि कोल ने भी क्षेत्रीय घटनाओं की प्राथमिकी पंजीकृत न किये जाने पर नाराजगी जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री तक आवेदन प्रेषित करने की जरूरत पर बल दिया है। जनपंचायत के दौरान उपस्थित ग्रामीणों के समक्ष विकास मापी सूचकांक की प्रश्नावली को पढ़कर स्वास्थ्य, शिक्षा, उन्नत खेती, ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले विकास कार्यों सहित स्वच्छता अभियान व ग्राम योग की जीवन में उपयोगिता विषय पर भी परिचर्चा की गई।

युवा दिवस के रूप में मनी स्वामी विवेकानन्द की जयंती

सहसों। युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी सहसों कार्यालय पर गुरुवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई गई। स्वामी विवेकानंद को याद करते हुए उनकी जयंती युवा दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर एक संगोष्ठी भी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता करते हुए संस्था के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश केशरवानी ने कहा स्वामी विवेकानंद का जीवन और संदेश प्रत्येक युवाओं को आत्मसात करना चाहिए। शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में भाषण देकर दुनिया भर में लोकप्रिय हो गए इस भाषण से सनातन धर्म को दुनिया में अलग पहचान मिली तब से लेकर आज तक उनके विचार युवाओं को प्रभावित करते रहे हैं। वेदांत दर्शन का प्रचार करने के लिए1897में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की उनके विचारों एवं दूरदर्शिता की सराहना युगो युगो तक होती रहेगी उनका उद्बोधन उठो जागो लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत युवाओं में नई ऊर्जा का संचार करने वाला होता है स्वामी विवेकानंद जी संपूर्ण विश्व के युवाओं के प्रेरणा स्रोत है युवा वर्ग को चाहिए कि वे उनकी जीवनी और उनके महान उद्देश्य समय प्रबंधन के महत्व को समझे और अपने मानव जीवन को सार्थक बनाएं। संगोष्ठी का संचालन इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह ने किया। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य तथा काफी संख्या में आदि लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

देश की दिशा और दशा बदलने में युवाओं की अहम भूमिका : डॉ अनिल

घूरपुर। विश्व में अपना परचम गतिमान करने वाले भारत देश की सही मायने सुरक्षा 21 वी शताब्दी में युवाओं के हाथ में है। यदि देश का युवा जगरुक हो जाये तो सोने की चिड़िया कहलवाने वाला यह देश फिर से विश्व गुरु बन सकता है । उक्त बातें क्षेत्र के अमिलिया गांव में स्वामी विवेकानंद सरस्वती के जन्म दिवस पर पंतजलि संस्थान की स्वाभिमान भारत इकाई द्वारा आयोजित युवा दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि डॉ अनिल पांडेय ने कही। उन्होंने कहा कि आज के अधिकांश युवक देश के संस्कार और संस्कृति दोनो से भटक गया है ,वह गांव की माटी परिपाटी सामाजिक ज्ञान से दूर होता जा रहा है। अभिवावकों के अंदर ऊर्जा भरते हुए उन्होंने कहा कि उनके सुपुत्र कहा और कैसे लोगों से संपर्क में है यह उन्हें जानकारी होनी चाहिए। अपने बच्चों के भीतर देश के संस्कार और संस्कृति का भाव भरना चाहिए तब जाकर युवाओं की सोच बदलेंगी। कहा कि आज का युवक तमाम तरह के मादक पदार्थों के सेवन में संलिप्त होकर अपनी और अपने परिवार को गहरी खाई में धकेल रहा है । कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दू युवा वाहिनी के अध्यक्ष अमित प्रताप सिंह ने की । कार्यक्रम दस प्रश्नोतरी का आयोजन किया गया जिसके सफल प्रतिभागियों को पंतजलि संस्थान की ओर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को वीरेंद्र सिंह जिला प्रभारी स्वाभिमान युवा भारत, डॉ रमेश , विजय यादव, प्रशांत, डॉ सूर्या यादव , बबलू यादव,जिला पंचायत सदस्य बृजेश यादव,अभिषेक त्रिपाठी आदि ने संबोधित किया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले अतिथियों को पतंजलि योग पीठ का अंग वस्त्रम व स्वामी विवेकानंद का चित्र लगा मोमेंटो देकर सम्मानित भी किया गया ।

सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. टीएन त्रिपाठी का निधन

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई के सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ ताड़क नाथ त्रिपाठी का बीमारी से निधन हो गया। सोनभद्र के मूल निवासी ताड़क नाथ त्रिपाठी लंबे समय से बीमार चल रहे थे गुरुवार को सुबह 11 बजे उनका इलाज के दौरान वाराणसी में निधन हो गया। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई के प्राचार्य प्रो0 राजीव मालवीय की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, छात्र छात्राओं ने मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित किया।

शंकरगढ़ पुलिस के हत्थे चढ़े जानलेवा हमले के वारंटी

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने दो वारंटियों को गिरफ्तार किया है। एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र के रानीगंज पगुवार व नारीबारी से दो वारंटियों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्त में आए वारंटी आशीष सिंह पुत्र मुंशीलाल (निवासी रानीगंज पगुआर, शंकरगढ़) और मोहम्मद इलियास पुत्र शफीक अहमद (निवासी नारीबारी, शंकरगढ़) का चालान भेज दिया गया है। एक वारंटी के खिलाफ धारा 307 और दूसरे के खिलाफ 323, 504, 50, 325, 354 के तहत केस दर्ज है। यह गिरफ्तारी एसआई प्रवेश कुमार यादव, एसआई संतोष कुमार सिंह, कांस्टेबल दीप कुमार, इंद्रजीत यादव ने की है।

प्रियंका गांधी महा सचिव उत्तर प्रदेश का मनाया जन्मदिन

करछना। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महासचिव एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस की पभारी प्रियंका गांधी जी का ४९ वां जन्म दिवस एकता दिवस के रुप मे श्री मती इन्दिरा गांधी विद्यालय जगौती करछना प्रयागराज मे मनाया गया विद्यालय के प्रबंधक डा दिनेश कुमार सोनी ने कहा कि प्रियंका गांधी जी निडर निर्भीक और साहसी कुशल वक्ता महिला है प्रियंका गांधी में अपनी दादी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी का अक्स परछाई दिखाई देती है भारत की जनता व कांग्रेस जनों को अपनी नेता पर गर्व है।

अलादीन रेस्टोरेंट में अवैध हुक्का बार का संचालन करते धराये

नैनी। नैनी कोतवाली पुलिस आयुक्त प्रयागराज रमित शर्मा के निर्देशन में अपराध व अपराधियो के विरुद्ध चलाये गये अभियान के क्रम में पुलिस उपायुक्त यमुनानगर सौरभ दीक्षित के निर्देश के क्रम में प्रभारी निरीक्षक थाना नैनी बृजेश सिंह के कुशल नेतृत्व में गठीत पुलिस द्वारा अलादीन रेस्टोरेंट में अबैध रूप से हुक्का बार का संचालन करते हुये 02 नफर अभियुक्त 1, नावेद सिद्दीकी पुत्र कलीमुद्दीन निवासी चकरघुनाथ मिजार्पुर अरैल चौराहा थाना नैनी जनपद प्रयागराज 02,आमिर पुत्र इसरार आलम निवासी मानीउमरपुर थाना मऊआइमा जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर मौके से 06 अदद हुक्का,06 अदद पाइप, 06 अदद डिब्बा फ्लेवर तम्बाकू युक्त,01 अदद पैकेट चारकोल खुला हुआ ,07 अदद छोटी सिकड़ी चारकोल बरामद कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी।

बमबाजी की घटना कारित कर दहशत फैलाने वाले दो अभियुक्त धराये

नैनी। नैनी कोतवाली प्रयागराज।पुलिस आयुक्त प्रयागराज रमित शर्मा के निर्देशन में अपराध व अपराधियो के विरुद्ध चलाये गये अभियान के अंतर्गत पुलिस उपायुक्त सौरभ दीक्षित के निर्देश व सहायक पुलिस उपायुक्त करछना के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक थाना नैनी बृजेश सिंह के कुशल नेतृत्व में गठीत पुलिस टीम द्वारा बमबाजी की घटना कारित कर दहशत फैलाने वाले 02 अभियुक्त 01, मनीष तिवारी पुत्र दिनेश तिवारी निवासी 118/2 काजीपुर थाना नैनी जनपद प्रयागराज 02,गौरव शुक्ला पुत्रजय कांत शुक्ला निवासी अरई पोस्ट कटरा थाना कोइरौना भदोही हाल पता-एम आई जी बी एडी ए नैनी थाना नैनी जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर आवश्यक विधीक कार्यवाही की गयी।

पुरानी रंजिश में मार पीट तोडफोड़ लूट मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। पुरानी रंजिश को लेकर पडोसी दम्पत्ति ने एक घर पर ईट पत्थर चलाए। तथा तोड फोड लूटपाट किए। पुलिस ने दम्पत्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर ली है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम शेखपुर निवासी आशीष कुमार पुत्र बच्चू लाल का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर पडोसी दम्पत्ति उसके घर पर चढ आए ईट पत्थर चलाए तोड फोड किए और मोबाइल को लूट कर जान से मारने की धमकी देते हुए मारे पीटे । आशीष कुमार ने मऊआइमा थाने में सन्त लाल और उनकी पत्नी नाम अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

छात्र ने ट्रेन के आगे लगाई छलांग मौत

करछना। थाना क्षेत्र के भीरपुर रेलवे स्टेशन के सामने दिल्ली हावड़ा रेल रूट मार्ग पर ट्रेन के आगे कूदकर 9वीं कक्षा की छात्र ने जान दे दी। जानकारी के मुताबिक क्षेत्र के मझुआ गांव निवासी हेमराज पटेल का 17 वर्षीय बेटा नवदीप पटेल उर्फ चौहान गुरुवार सुबह 8 बजे के करीब घर से साइकिल लेकर स्वजनों को बिना कुछ बताए ही निकला था। जहां नौ बजे के करीब घर से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित भीरपुर रेलवे स्टेशन के सामने साइकिल खड़ी कर ट्रेन के आगे छलांग लगा दी। जिसे देख वहीं पर काम कर रहे रेल कर्मियों में अफरा तफरी मच गई। घटना के बाद स्थानीय लोग भी मौके पर पहुंच गए। सूचना होने पर जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची ।वही उपस्थित लोगों से मृतक की पहचान नवदीप पटेल के रूप में किया गया। घटना की जानकारी पुलिस ने फोन के माध्यम से स्वजनों को देते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया।

मिनी मैराथन के विजेता बने करन निषाद बालिकाओं में कोमल निषाद रही अव्वल

अखंड भारत संदेश

नैनी। स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिवस के अवसर पर युवा मोर्चा यमुनापार प्रयागराज द्वारा यंग इंडिया रन मिनी मैराथन का आयोजन किया गया। मैराथन की शुरूआत बारा विधायक वाचस्पति, कोरांव विधायक राजमणि कोल, करछना विधायक पियूष रंजन निषाद, प्रदेश महामंत्री महिला मोर्चा डा० कृतिका अग्रवाल, पूर्व विधायक प्रभा शंकर पांडेय, प्रदेश मंत्री महिला मोर्चा आकांक्षा सोनकर व डा० देवी सिंह पटेल जी ने सयुक्त रूप से हरी झंडी दिखा कर किया। मैराथन अरैल सेल्फी प्वाइंट से सुरु होकर इलेक्ट्रॉनिक बस अड्डा, लेप्रोसी चौराहा से हो कर वापस सेल्फी प्वाइंट पर समापन हुआ। पांच किलो मीटर मिनी मैराथन) जिसमे 535 धावकों में भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान पर करन निषाद रहे। जबकि द्वितीय स्थान गणेश कुमार एवं तृतीय स्थान निलेश यादव रहे। जिन्हें क्रमशः 11 हजार, 5100 और 2100 नकदी धनराशि एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। बालिकाओं में कोमल निषाद,अंजली पटेल,रिंकी निषाद क्रमश प्रथम , द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को टी शर्ट, पदक, शील्ड एवं प्रमाण पत्र वितरित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सुधाकर पांडेय और संचालन महामंत्री जयव्रत सिंह व शिव पांडेय ने किया। इस दौरान युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष विवेकानंद सिंह, सौरभ सिंह, रामप्रकाश तिवारी, राजकुमार मिश्र, सी पी पांडेय, जिला मंत्री रवि निषाद, राहुल मिश्र, महेंद्र पटेल, नरेश सोनकर,कार्यालय प्रभारी कार्तिकेय कुशवाहा,ओपी विश्वकर्मा, दीप द्विवेदी, शिव तिवारी, रोचक मिश्र, संदीप सिंह, सुशील तिवारी, मिथिलेश मौर्य सहित कई लोग मौजूद रहे।

धनाभाव के चलते अमृत सरोवर का कार्य प्रभावित

अखंड भारत संदेश

करछना। विकासखंड करछना के अंतर्गत गांवों में तालाबों को सवारने का कार्य सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में एक है जिसे सरकार ने प्रभावी ढंग से गांव में तालाबों को अमृत सरोवर का निर्माण कार्य कायाकल्प कराने में प्रयासरत है वही मनरेगा योजना के अंतर्गत बनने वाले गांव में अमृत सरोवर कार्य पूरी तरह प्रभावित हों रहें हैं बता दें कि विकासखंड करछना के अंतर्गत विभिन्न गांवों में लगभग 40 गांव में अमृतसर सरोवर का निर्माण कार्य कराए जाने का प्रस्ताव पारित किया गया है लेकिन वही सरकार द्वारा धन उपलब्ध ना होने के कारण यह योजना पूरी तरह ठप पड़ी हुई है अधिकांश गांव में अधूरे कार्य के बाद पैसे की कमी के कारण कार्य बाधित हैं जिसके चलते यह योजना कच्छप गति से चल रही है कुछ प्रधानों का कहना है कि सरकार द्वारा निर्देशित किया गया कि गांव में तालाबों का कायाकल्प कर अमृत सरोवर के नाम से जाना जाने लगेगा जिसके तहत व्यापक पैमाने पर गांव में चिन्हित कर अमृत सरोवर कार्य शुरू कराया गया था बता दें कि चार-पांच महीने से अमृत सरोवर स्वीकृति के बाद भुगतान के अभाव में कार्य अधर में लटके हैं पंचायत सचिव कमल सिंह ने बताया कि ग्राम पंचायत नीबी में 8.50 लाख रुपए का 3 माह पूर्व अमृत सरोवर कार्य स्वीकृत किया गया था अभी तक ?4000 मजदूरी का भुगतान हो सका है लाखों रुपए का कार्य प्रधान द्वारा अपने से करा दिया गया है लेकिन योजना के अंतर्गत पैसे के लिए आगे का कार्य ठप पड़ा हुआ है उन्होंने बताया कि आगे मनरेगा योजना में धन उपलब्ध होने पर आगे सरोवर का कार्य पूर्ण करा दिया जाएगा इसी तरह अधिकांश गांव में मनरेगा योजना के अंतर्गत बनने वाले अमृत सरोवर कार्य धन के अभाव में कार्य बाधित हैं खंड विकास अधिकारी देव कुमार ने बताया कि सरकार की यह योजना तेजी से गांव में अमृत सरोवर का कार्य कराया जा रहा है तथा कुछ गांव में भुगतान को लेकर कार्य लंबित हैं जिसे जल्द पूर्ण करा लिया जाएगा।

आवास देने के नाम पर ग्राम प्रधान ने दिव्यांग से माँगी सुविधा-शुल्क

बारा। सरकार द्वारा गरीबों को पक्की छत देने के उद्देश्य से भले ही प्रधानमंत्री आवास जैसी योजना संचालित की गई हो,लेकिन यह योजना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले ग्राम प्रधानों की भेंट चढ़ गई है।इतना ही नहीं, पात्रों को छोड़, धन उगाही करके अपात्रों को आवास योजना का लाभ दिया गया है।कुछ इसी तरह की शिकायत बारा तहसील के विकासखंड जसरा के असरवई गाँव के रहने वाले दिव्यांग पति-पत्नी ने उपजिलाधिकारी बारा के समक्ष पेश की, कि ग्राम प्रधान के द्वारा आवास योजना का लाभ देने के लिए सुविधा-शुल्क की माँग की गई है।असरवई गाँव की रहने वाली उर्मिला देवी ने बताया कि उनके पति दिव्यांग हैं और जब वह दोनों ग्राम प्रधान पीताम्बर लाल बिन्द से प्रधानमंत्री आवास देने की गुहार लगायी तो ग्राम प्रधान ने उनसे आवास देने के नाम पर बीस हजार रुपये की माँग कर डाली। असमर्थता जताने पर अभी तक आवास योजना का लाभ नहीं दिया गया। उर्मिला देवी ने बताया कि इसी बात की शिकायत करने वह तहसील मुख्यालय पर पहुंचकर उपजिलाधिकारी से शिकायत की और गाँव में अपात्रों को दिये गए आवास योजना की जाँच कराकर गरीब लोगों को आवास दिलाने की गुहार लगायी। यह जसरा ब्लाक के केवल एक गाँव की कहानी नहीं है, बल्कि कई ग्राम सभाओं में भी इसी तरह से अपात्रों को पीएम आवास योजना का लाभ दिया गया है तो वहीं गरीब आज भी वही टूटी फूटी झोपड़ी में रहने को मजबूर बना हुआ है।

खबर संक्षेप

विद्यालय का 29वां वार्षिक उत्सव आज

सहसों। टीपी मेमोरियल विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सराय तकी झूंसी का 29वां वार्षिकोत्सव आज यानी 13 जनवरी शुक्रवार को विद्यालय प्रांगण में प्रातः 10 बजे से होना है। जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा मनमोहक रंगारंग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की जाएगी। जिसमें मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज पीएन सिंह एवं विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेलरहेंगे। यह जानकारी विद्यालय के प्रबंधक लक्ष्मीकांत उपाध्याय ने दी।

बाइक सवार अधेड़ सड़क हादसे में घायल

थाना क्षेत्र के सिंगरामऊ गांव निवासी राम शिरोमणि पांडे 70 वर्षीय गुरुवार को दोपहर किसी काम से बाइक लेकर नेशनल हाईवे के सर्विस रोड के रास्ते से नरायनपुर गांव जा रहे थे। जैसे ही वह बेरूई गांव के सामने पहुंचे कि अचानक बाइक के सामने कुत्तों का झुंड आपस में लड़ते हुए बाइक से टकरा गया। जिससे वे बाइक से अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर पड़े जिसमें राम शिरोमणि पांडे के हांथ व पैर में काफी चोटें आ गईं। मौके पर पास का ही एक युवक पहुंचकर उन्हें सड़क के किनारे सुरक्षित स्थान पर करते हुए परिजनों को सूचित किया।

माघ मेले के द्वितीय स्नान पर्व को सुरक्षित ढंग से संपन्न कराने को अधिकारियों ने की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माघ मेले के द्वितीय स्नान पर्व मकर संक्रांति को सुरक्षित ढंग से संपन्न कराने के दृष्टिगत अपर पुलिस महानिदेशक भानु भास्कर की अध्यक्षता एवं पुलिस आयुक्त रमित शर्मा, मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत तथा अन्य संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति में आयुक्त कार्यालय स्थित गांधी सभागार में सुरक्षा व्यवस्था एवं आपदा प्रबंधन संबंधित बैठक संपन्न हुई।सर्वप्रथम मकर संक्रांति के स्नान पर्व के दृष्टिगत प्रयागराज के विभिन्न रेलवे स्टेशनों एवं बस अड्डों पर भीड़ प्रबंधन हेतु होल्डिंग एरिया विकसित करने पर चर्चा की गई। इस कार्य हेतु उचित स्पॉट्स चिन्हित कर लोगों को अस्थाई रूप से वहां रोकने की सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। अधिक भीड़ के समय प्रयागराज जंक्शन पर बने हुए चारों होल्डिंग एरिया को एक्टिव करने तथा रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डों पर अनावश्यक भीड़ को जाने से रोकने हेतु मेला क्षेत्र में लगी विभिन्न एलईडी स्क्रीन पर ट्रेनों के आगमन प्रस्थान संबंधित जानकारी उपलब्ध कराने की व्यवस्था बनाने के सुझाव दिए गए। इस कार्य हेतु रेलवे के अधिकारियों के साथ बैठक कर अंतर विभागीय समन्वय स्थापित करने के भी निर्देश दिए गए। वरिष्ठ अधिकारियों ने रेलवे द्वारा बनाए गए कंटीन्जेसी प्लान का भी अवलोकन किया तथा भीड़ प्रबंधन से संबंधित सभी अंतर विभागीय वरिष्ठ अधिकारियों की सूची बनाकर उनके फोन नंबर के साथ सभी को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। प्रयागराज शहर में बनाए जा रहे 14 होल्डिंग एरिया की जिम्मेदारी अपर जिलाधिकारी नगर को दी गई है। बाहर से आने वाले सभी यात्रियों की सघन चेकिंग करने एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर पी0ए0 सिस्टम के माध्यम से यात्रियों व श्रद्धालुओं को जागरूक किये जाने की व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए गए।कोविड-19 के दृष्टिगत मास्क धारण करने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जारी निदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने को भी कहा गया है। इसी क्रम में मेले के सभी 17 प्रवेश द्वारों एवं सभी स्नान घाटों पर कोविड हेल्पडेस्क की व्यवस्था की गई है जो सुचारू ढंग से काम कर रही हैं।श्रद्धालुओं के तात्कालिक उपचार हेतु एंबुलेंस एवं निकटतम अस्पताल के चिन्हीकरण के संबंध में चर्चा करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को हर परिस्थिति हेतु मेडिकल रिस्पांस टीम तैयार रखने, हर चीज का स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर बनाने, आपातकालीन स्थिति में ग्रीन कॉरिडोर का प्रयोग करने, स्नान पर्व पर एंबुलेंस की संख्या बढ़ाने तथा उन्हें स्ट्रैटेजिक लोकेशन पर खड़े करने के निर्देश दिए गए। इस वक्त मेला क्षेत्र हेतु लगभग 30 एंबुलेंस की व्यवस्था की गई है परंतु भीड़ को देखते हुए वरिष्ठ अधिकारियों ने निजी अस्पतालों से सहायता लेते हुए इनकी संख्या अधिक से अधिक बढ़ाने के निर्देश दिए हैं।इसी क्रम में मुख्य चिकित्सा अधिकारी को स्नान पर्व से पहले चिकित्सा विभाग का एक रिहर्सल करने, भगदड़ के दृष्टिगत एक कंटीजेंसी प्लान तैयार करने तथा ठंड ,हार्ट, लंग संबंधित बीमारियों की दवाई अनिवार्य रूप से अपनी डिस्पेंसरी में उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं।अग्नि दुर्घटना से लोगों को बचाने हो हेतु मेला क्षेत्र में 14 फायर स्टेशन की व्यवस्था की गई है तथा जल पुलिस द्वारा 50 मोटर बोर्ड एवं 100 नावों की व्यवस्था की गई है जिसका प्रयोग मेले की सुरक्षा व्यवस्था बनाने में किया जाएगा। बैठक में पुलिस महानिरीक्षक चन्द्र प्रकाश, अपर पुलिस आयुक्त आकाश कुलहरि, जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री, मेलाधिकारी अरविन्द कुमार चैहान सहित सभी सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

मकर संक्रांति पर्व से पहले, नावों पर लाइफ जैकेट रखवाने का निर्देश

अखंड भारत संदेश

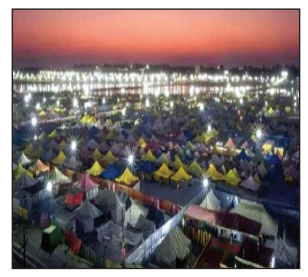

प्रयागराज। मकर संक्रांति का स्नान पर्व इस दफा 15 जनवरी को पड़ रही है। 14 जनवरी की रात में सू? मकर राशि में प्रवेश करेंगे। इसीलिए मकर संक्रांति 15 जनवरी को मनाई जाएगी। पंडित त्रियुगीकांत मिश्र ने बताया कि 14 जनवरी की रात सूर्यके मकर राशि में प्रवेश करने के कारण संक्रांति का पर्व 15 जनवरी को मनाया जाएगा।पंडित त्रियुगीकांत मिश्र ने बताया कि मकर संक्रांति के दिन दान, पुण्य और गंगा स्नान का बहुत बड़ा महत्व है। सूर्य के उदय से पहले स्नान कर अक्षत और फूल डालकर सूर्य देव को जल चढ़ाएं। बताया इस वर्ष मकर राशि में बुध और शनि पहले से ही विराजमान हैं। सूर्यदेव के पहुंचना काफी शुभ संकेत है।दूसरी तरफ माघ मेले के दूसरे प्रमुख स्नान पर्व मकर संक्रांति की तैयारियों को लेकर माघ मेला प्राधिकरण तैयारियों में जुटा हुआ है। किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न होने पाए, इसके लिए सभी सुरक्षा इंतजामात खंगाले जा रहे हैं। मंडलायुक्त, जिलाधिकारी भी अनवरत मेलाक्षेत्र का भ्रमण कर रहे हैं। मेलाधिकारी अरविंद चौहान ने मकर संक्रांति के स्नान पर्व पर सुरक्षा के विशेष इंतजाम के लिए निर्देशित किया है। मेलाधिकारी ने निर्देशित किया है कि मेला क्षेत्र में जितनी भी नावें लगाई गई हैं, सभी पर अनिवार्य रूप सेलाइफ सेविंग जैकेट रखी जाए। बिना लाइफ जैकेट के किसी भी नाव का संचालन नहीं किया जाएगा। इसके अलावा मकर संक्रांति के पर्व पर किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए जल पुलिस व गोताखोरों को एलर्ट रहने के लिए कहा गया है। बताते चलें कि माघ मेला क्षेत्र में कुल 16 स्नानघाट बनाए गए हैं, जिनकी लगभग लंबाई 1800 मीटर के आसपास है।

संगम पर यात्रियों को मिलेगी लिफ्ट और एस्केलेटर की सुविधा

फाफामऊ पर बनेगा एक और एफओबी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संगम रेलवे स्टेशन पर आने वाले दिनों में यात्री सुविधाओं में और इजाफा होगा। उत्तर रेलवे द्वारा यहां यात्रियों को लिफ्ट और एस्केलेटर की सुविधा दी जाएगी। रेलवे प्रशासन ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। साथ ही वर्ष 2025 में लगने वाले कुंभ के पहले प्रयाग जंक्शन और फाफामऊ जंक्शन पर यात्रियों को एक और नए फुट ओवर ब्रिज की भी सौगात मिलेगी। प्रयागराज में चल रहे माघ मेला और वर्ष 2025 में लगने वाले कुंभ मेले की तैयारियों को जायजा लेने के लिए बृहस्पतिवार को प्रयागराज पहुंचे उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के डीआरएम सुरेश कुमार सपरा ने बताया आने वाले दिनों में मंडल के तीनों स्टेशन पर यात्री सुविधा में और इजाफा होगा। कहा कि प्रयागराज संगम, प्रयाग जंक्शन और फाफामऊ में स्टेशन पर काफी काम होने हैं।प्रयागराज संगम रेलवे स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का विस्तार अब स्टेशन के बाहर तक होगा। इसी पुल पर चढ़ने एवं उतरने के लिए लिफ्ट और एस्केलेटर भी लगाया जाएगा। संवाददाताओं से हुई बातचीत में डीआरएम ने कहा कि प्रयागराज संगम रेलवे स्टेशन पर रिटायरिंग रूम और फूड प्लाजा भी इसी वित्तीय वर्ष में शुरू करने की योजना है। प्रयागराज संगम स्टेशन के सभी प्लेटफार्म पर टॉयलेट और वाटर बूथ भी लगाए जाएंगे।प्रयागराज जंक्शन की तर्ज पर ऑनलाइन चार्टिंग के भी डिस्प्ले बोर्ड लगाए जाएंगे। इन सभी कार्यों के लिए 14 करोड़ रुपये का प्रस्ताव बनाया गया है। इस दौरान एडीआरएम अश्विनी श्रीवास्तव, सीनियर डीसीएम रेखा शर्मा आदि मौजूद रहीं।

कुंभ के पहले मिल जाएंगे दो और फुट ओवर ब्रिज

डीआरएम ने बताया कि फाफामऊ में एक और फुट ओवर ब्रिज का निर्माण होगा। यह पुल छह मीटर चौड़ा होगा। इसके अलावा प्रयाग जंक्शन के लखनऊ छोर पर भी एक एफओबी बनाने की तैयारी है। यह नया एफओबी 10 मीटर चौड़ा होगा। नए एफओबी के निर्माण के बाद यहां पुराना एफओबी जो छह मीटर चौड़ा है उसे ध्वस्त किया जाएगा। प्रयाग में बनाए जाने वाले एफओबी में रैंप भी बनाया जाएगा। ताकि दिव्यांग एवं बुजुर्ग यात्रियों को एफओबी में चढ़ने एवं उतरने के दौरान दिक्कत न हो। इसके पूर्व डीआरएम ने लखनऊ मंडल के अफसरों के साथ प्रयागराज संगम और प्रयाग जंक्शन का निरीक्षण किया। प्रयागराज संगम में स्टेशन प्रबंधक वीके यादव और प्रयाग में अर्जुन तिवारी से स्टेशन पर कराए जाने वाले कार्यों के बारे में पूछा।

सीएम से विद्युत आउटसोर्स कर्मचारी मीटर रीडर कर्मचारियों ने की फरियाद

करछना। विद्युत आउट सोर्स कर्मचारियों ने विभागीय अधिकारियों के द्वारा किए जा रहे शोषण को लेकर मुख्यमंत्री से फरियाद करते हुए न्याय की मांग की पत्र के माध्यम से बताया गया की आप के पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम के पूरे प्रयागराज मंडल में विद्युत मीटर रीडिंग का ठेका कंपनी मेसर्स स्टर्लिंग टेक्नोलोजी एंड सर्विसेस का नवंबर 2021 से है। इसके यहां लगभग 1550+ मीटर रीडर कर्मचारी कार्य कर रहे है ओर अभी तक इसने किसी भी कर्मचारी का भविष्य निधि में पैसा नहीं जमा किया है, विभाग के उच्च अधिकारियों के मिली भगत से इनका बिल पास होता है जो की किसी कर्मचारी का ईपीएफ और ईएसआईसी का भुगतान किए बिना। कर्मचारियों की स्थिति बहुत आर्थिक ओर मानसिक खराब हैं, कर्मचारियों ने सीएम से जल्द न्याय दिलाने की अपील की है।

महर्षि भारद्वाज की निकाली गई शोभा यात्रा, झूमे श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज विद्वता परिषद की ओर से महर्षि भरद्वाज की भव्य शोभायात्रा गुरुवार को निकाली गई। शोभायात्रा सुबह 9:00 से बालसन चौराहे के महर्षि भारद्वाज आश्रम से लेकर संगम नोज पर जाकर खत्म हुई। इसमें शहर के बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। जगह-जगह महर्षि भारद्वाज के प्रतिमा पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया।जानकी दास महाराज सिगबेरपुर पीठाधीश्वर ने कहा कि महर्षि भारद्वाज प्रयागराज के गौरव थे। हजारों वर्ष पूर्व उन्होंने गुरुकुल की स्थापना की थी। उनका भारतीय शिक्षा पद्धति में बहुत बड़ा योगदान रहा। लगभग 10,000 शिष्य उनके आश्रम में पढ़ते थे।आज उनकी माघ कृष्ण पक्ष की पंचमी पर शोभायात्रा निकाली जा रही है, जो भरद्वाज आश्रम से संगम तीर्थ तक जाएगी। वहां विधिवत आरती-पूजन होकर समापन होगा।**भगवान राम को भी पथ प्रदर्शित करने वाले महर्षि भारद्वाज थे** : जानकी दास ने कहा कि हम प्रयागराज वासियों के जो आधार हैं, वह महर्षि भारद्वाज ही हैं। भगवान राम को भी पथ प्रदर्शित करने वाले महर्षि भारद्वाज थे। उनकी शोभायात्रा जयंती हम लोग प्रत्येक साल 12 जनवरी को मनाते हैं।

न्यूज झरोखा

यूआईटी में स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर का शुभारम्भ

नैनी। छात्रों को टेबल टेनिस, बिलियर्ड्स, कैरम और बैडमिंटन जैसे इनडोर और आउटडोर खेलों के साथ संगीत में भी आगे बढ़ने और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के उद्देश्य से यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (यूआईटी), नैनी ने गुरुवार को कॉलेज परिसर में स्टूडेन्ट्स एक्टिविटी सेंटर (एसएसी) का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि और प्रयागराज के करछना विधानसभा सीट से भाजपा के वर्तमान विधायक पीयूष रंजन निषाद ने यूनाईटेड ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस (यूजीआई) के वाइस चेयरमेन सतपाल गुलाटी और यूआईटी के प्राचार्य प्रो संजय श्रीवास्तव की उपस्थिति में फीता काटकर और दीप प्रज्वलित कर केंद्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि ने सभी छात्रों को अपना आशीर्वाद दिया और कहा कि छात्रों के समग्र विकास के लिए सह पाठ्यचर्या गतिविधियों में भाग लेना बहुत आवश्यक है। उन्होंने छात्रों से सेंटर में उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाने और खेल और संगीत में भी उत्कृष्टता हासिल करने की अपील की। वाइस चेयरमैन ने सभी छात्रों को अपनी शुभकामनाएं दीं और उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं और सहायता प्रदान करने का वादा किया। प्रो श्रीवास्तव ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और स्टूडेन्ट्स एक्टिविटी सेंटर के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि को सम्मान के प्रतीक के रूप में वाइस चेयरमैन और प्रिंसिपल यूआईटी द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। बीजेपी विधायक ने यूनाइटेड इनक्यूबेशन हब (एचयूबी) का भी दौरा किया और यहां उपलब्ध सुविधाओं की प्रशंसा की। इस अवसर पर यूआईटी के स्पैरो बैंड के सदस्यों ने कुछ मंत्रमुग्ध कर देने वाले गीतों की प्रस्तुति भी दी। मानस पांडे ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

कोहरे के चलते निरस्त चल रही हरिद्वार एक्सप्रेस पटरी पर लौटी, 302 ने कराया रिजर्वेशन

प्रयागराज। कोहरे की वजह से निरस्त चल रही हरिद्वार एक्सप्रेस का संचालन बृहस्पतिवार से शुरू हो गया। ट्रेन शुरू होने की जानकारी यात्रियों को समय से न मिल पाने की वजह से बृहस्पतिवार को इसमें महज 302 यात्रियों का ही रिजर्वेशन प्रयागराज संगम से विभिन्न स्थानों के लिए हुआ। उधर, प्रयागराज संगम से बस्ती जाने वाली मनवार संगम एक्सप्रेस भी शुक्रवार से शुरू हो रही है।प्रयागराज संगम से योगनगरी ऋषिकेश जाने वाली हरिद्वार एक्सप्रेस सप्ताह में तीन दिन मंगलवार, बृहस्पतिवार एवं रविवार को चलती है। कोहरे की वजह से रेलवे द्वारा इसे एक दिसंबर 22 से 28 फरवरी 23 तक के लिए बंद किया गया था। इस वजह से लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हरिद्वार जाने वाले लोगों को दिक्कत हो रही थी। उधर, माघ मेले को लेकर भी हरिद्वार एवं रुहेलखंड के तमाम जिलों से काफी लोग प्रयागराज आते हैं।इस वजह से उत्तर रेलवे ने हरिद्वार एक्सप्रेस के पुनः संचालन को मंजूरी दे दी। इसी तरह बृहस्पतिवार से ही 04383 प्रयागराज संगम-जौनपुर पैसेंजर का भी संचालन शुरू हो गया, जबकि 14231/14232 मनवार संगम एक्सप्रेस शुक्रवार 13 जनवरी और 14307 प्रयागराज संगम-बरेली का संचालन शनिवार 14 जनवरी से शुरू हो जाएगा।

बीएसएनएल के दफ्तर में लगी आग

प्रयागराज। सिविल लाइन थाने के पास स्थित बीएसएनएल के दफ्तर मे गुरुवार को भीषण आग लग गई। इससे हजारों फाइलें जलकर राख हो गईं। बीएसएनएल के इसी भवन के दूसरे तल पर प्रवर्तन निदेशालय का दफ्तर भी है। आग लगने के बाद हड़कं मच गया। भूतल पर लगे आग को फायर विभाग ने बुझाया।सिविल लाइन थाने के पास स्थित बीएसएनएल दफ्तर में आग लग गई। ग्राउंड फ्लोर स्थित लेखा विभाग में भड़की आग से कई फाइलें जलकर राख हो गईं। इसी बिल्डिंग में ऊपरी तल पर प्रवर्तन निदेशालय का दफ्तर भी स्थित है।

शिक्षक भर्ती मामले में हाईकोर्ट ने प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा से पूछा कितने समय में करेंगे आदेश का अनुपालन

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव दीपक कुमार एवं प्रयागराज के परीक्षा नियामक प्राधिकारी सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी के खिलाफ दायर अवमानना याचिका पर राज्य सरकार से जानकारी मांगी है। कोर्ट ने पूछा है कि कितने समय में आदेश का अनुपालन करेंगे। याचिका की अगली सुनवाई आठ फरवरी को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल ने अरुणेंद्र प्रताप सिंह चौहान की अवमानना याचिका पर दिया है। गलत उत्तर कुंजी जारी करने के कारण कोर्ट ने याची को एक नंबर अतिरिक्त देने का आदेश दिया था, जिसका पालन नहीं किया गया। याचियों के अधिवक्ता अनुराग त्रिपाठी एवं राहुल कुमार मिश्रा ने बहस की।

हाईकोर्ट ने खारिज की यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण जमीन घोटाले के आरोपी की जमानत अर्जी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हाईकोर्ट ने यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण भूमि खरीद घोटाले के आरोपित ओएसडी वीरपाल सिंह को अग्रिम जमानत देने से इंकार कर दिया है।यह आदेश जस्टिस डीके सिंह ने वीरपाल सिंह की अर्जी पर दिया है। सीबीआई के वरिष्ठ अधिवक्ता ज्ञान प्रकाश व संजय यादव ने अर्जी का विरोध किया।

सस्ती जमीनें खरीदकर प्राधिकरण को काफी महंगे दामों में बेचीं

यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के सीईओ सहित तमाम अधिकारियों पर आरोप लगा था कि उन्होंने अपने रिश्तेदारों के नाम किसानों की बेशकीमती जमीनें सस्तें दामों में खरीदी और फिर उसे प्राधिकरण को महंगे दाम में बेच दिया। धोखाधड़ी व भ्रष्टाचार के आरोप में वीरपाल सिंह समेत कई अधिकारियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई थी। इसके बाद सीबीआई ने विशेष अदालत गाजियाबाद में घोटाले में लिप्त कई अधिकारियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। जिसमें अग्रिम जमानत पर रिहाई की मांग में अर्जी दी गई थी। कोर्ट ने अर्जी खारिज कर दी है।

प्राधिकरण के कई अधिकारी घोटाले में शामिल

पहले पुलिस ने गौतमबुद्धनगर के कासना थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। सह अभियुक्त प्राधिकरण के सीईओ, पीसी गुप्ता के खिलाफ चार्जशीट दाखिल करते हुए कहा कि कई अन्य अधिकारी भी घोटाले में लिप्त हैं। पुलिस ने विशेष अदालत भ्रष्टाचार निरोधक मेरठ में 18 सितंबर 2018 को चार्जशीट दाखिल की। इसके बाद आठ अन्य अधिकारियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की गई।

राज्य सरकार ने 14 अक्टूबर 2019 को मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी थी

96 करोड 33 लाख 65 हजार 575 रुपये की जमीन यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने खरीदी। इसके लिए एक कमेटी गठित की गई थी, जिसे 7 फीसदी जमीन रिहायशी क्षेत्र के लिए चिन्हित किया जाना था। आगरा, मथुरा, अलीगढ़,व हाथरस जिले में रिहायशी जमीन चिह्नित की जानी थी। याची कमेटी का ओएसडी था। दो तहसीलदार व प्रोजेक्ट मैनेजर सदस्य थे। आरोप है कि 2-3 माह पहले सीईओ सहित अधिकारियों व उनके संबंधियों ने जमीनें खरीदी और ऊंचे दाम पर उसी जमीन को प्राधिकरण को बेच दी। सीबीआई ने अपने आरोप पत्र में कहा है कि इसमें अधिकारियों की मिलीभगत शामिल है।इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आरोप की गंभीरता को देखते हुए अग्रिम जमानत देने से इन्कार कर दिया।

प्रयागराज जनपद क्षेत्र में मिले तीन अज्ञात शव

अखंड भारत संदेश

लगातार मिल रहे अज्ञात शव की शिनाख्त ना होने से प्रयागराज पुलिस के कार्यशैली पर तमाम सवाल खड़े हो रहे हैं

प्रयागराज। जनपद प्रयागराज क्षेत्र के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में महिला और पुरुष के तीन अज्ञात शव फिर मिले हैं इसके पहले भी प्रयागराज जनपद क्षेत्र में कई महिला पुरुष के अज्ञात शव मिल चुके हैं अज्ञात शव के खुलासे के प्रति थाना पुलिस गंभीर नहीं है।

जानकारी के मुताबिक जीआरपी रामबाग थाना क्षेत्र में 10 जनवरी को एक अज्ञात महिला उम्र लगभग 62 वर्ष का शव मिला है पुलिस ने शिनाख्त के लिए शव पोस्टमार्टम हाउस मे सुरक्षित रख दिया है काफी प्रयास के बाद महिला की शिनाख्त नहीं हो सकी है। दूसरा अज्ञात शव शाहगंज थाना क्षेत्र का है कई माह पूर्व एक अज्ञात पुरुष उम्र लगभग 62 वर्ष अचेत अवस्था में मिला था पुलिस ने अचेत व्यक्ति को मोतीलाल नेहरु चिकित्सालय में भर्ती कराया था जहां 11 जनवरी को उसकी मौत हो गई पुलिस ने शिनाख्त के लिए शव पोस्टमार्टम हाउस प्रयागराज मे सुरक्षित रख दिया है तमाम प्रयास के बाद भी व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाया । जनपद के धूमनगंज थाना क्षेत्र में 11 जनवरी को एक अज्ञात पुरुष उम्र लगभग 45 वर्ष का शव मिला पुलिस ने शिनाख्त के लिए पोस्टमार्टम मे शव सुरक्षित रख दिया है धूमनगंज क्षेत्र में मिले अज्ञात पुरुष के शव की भी शिनाख्त पुलिस नहीं कर सकी है आखिर अज्ञात शव की शिनाख्त के लिए पुलिस द्वारा क्या प्रयास किए जा रहे हैं जिससे अज्ञात शव की शिनाख्त नहीं हो पा रही है। प्रयागराज क्षेत्र में लगातार अज्ञात शव कहां से लाए जाते हैं इन्हें फेंकने वाले कौन हैं इनकी शिनाख्त काफी प्रयास के बाद पुलिस क्यों नहीं कर पा रही है क्या पुलिस केवल पोस्टमार्टम हाउस में शव सुरक्षित रखने तक की अपनी जिम्मेदारी समझती है या फिर शव की शिनाख्त करा कर अज्ञात शव के मौत के कारण को खोजने का प्रयास पुलिस करेगी मौत के क्या कारण है और मौत के जिम्मेदार कौन हैं उन तक भी पुलिस के हाथ नहीं पहुंच पा रहे हैं जिससे अज्ञात शव ठिकाने लगाने वालों के हौसले बुलंद हैं लगातार मिल रहे अज्ञात शव की शिनाख्त ना होने से प्रयागराज पुलिस के कार्यशैली पर तमाम सवाल खड़े हो रहे हैं।

13 साल की बच्ची से कई बार किया दुष्कर्म, गर्भवती होने पर हुई जानकारी, आरोपी गिरफ्तार

प्रयागराज। खुल्दाबाद थाना क्षेत्र के अकबरपुर इलाके में 50 साल के नसीम ने अपने ही पड़ोसी की 13 साल की बच्ची के साथ कई बार दुष्कर्म किया। बच्ची के गर्भवती होने पर घर वालों को मालूम चला तो हड़कंप मच गया। बृहस्पतिवार देर रात आरोपी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में एफआईआ दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। अकबपुर में नूरी मस्जिद के पास रहने वाले नसीम का पड़ोस के एक घर में आना जाना था। पड़ोसी की 13 साल की बच्ची भी नसीम के घर आती जाती थी। नसीम ने तीन महीने पर बच्ची को लालच देकर और डरा धमकाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। वह बार बार बच्ची को घर बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म करने लगा। बच्ची पिछले कुछ समय से बुरी तरह से डरी और सहमी रहने लगी। बुधवार को बच्ची की तबियत खराब हुई तो घर वाले उसे डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने शक के आधार पर बच्ची के कई टेस्ट किए। इसके बाद पता चला कि वह गर्भवती है। घर वालों के पैरों तले जमीन खिसक गई। इसके बाद बच्ची ने हैवान बन चुके नसीम के बारे में पूरी जानकारी दी कि कैसे उसने धमकाकर गलत काम किया। 50 साल के नसीम की उम्र के कारण घर वालों ने कभी उस पर शक नहीं किया था। रात में ही पुलिस को सूचना दी गई। इंस्पेक्टर अनुराग शर्मा ने बताया कि नसीम के खिलाफ दुष्कर्म और पाक्सो एक्ट में रिपोर्ट दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

भारी वाहनों की नो इंट्री 16 जनवरी तक रहेगी लागू

मकर संक्रांति के मद्देनजर किया गया डायवर्जन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मकर संक्रांति पर्व के मद्देनजर शहर में भारी कॉमर्शियल वाहनों की इंट्री बृहस्पतिवार से बंद हो गई। रोक 16 जनवरी की रात 12 बजे तक जारी रहेगी। नो इंट्री प्वाइंट पुलिस चौकी बम्हरौली, टीपी नगर तिराहा, सहसों चौराहा, फाफामऊ थाना,नवाबगंज बाईपास, हबूसा मोड़, 40 नंबर गुमटी, रामपुर चौराहा, घूरपुर थाना गेट, सोरांव बाई पास पर बनाए गए हैं।रीवा मार्ग की ओर से आने वाले ट्रकों को थाना घूरपुर, गौहनिया, मिजार्पुर मार्ग की ओर से आने वाले ट्रकों को रामपुर तिराहा, वाराणसी मार्ग की ओर से आने वाले ट्रकों को हबूसा तिराहा, जौनपुर मार्ग से आने वाले ट्रकों को सहसों तिराहा, प्रतापगढ़ मार्ग से आने वाले ट्रकों को सोरांव बाईपास और लखनऊ मार्ग से आने वाले ट्रकों को नवाबगंज बाईपास से बाहर निकाला जाएगा। मेले में आने वाले श्रद्धालु अपने वाहन माघ मेला क्षेत्र में बने हेलीपैड पार्किंग के साथ प्लाट नंबर 17, काली सड़क पर यातायात पुलिस लाइन के सामने व बगल में बनी पार्किंग, पांटून पुल वर्कशाप एवं गल्ला मंडी दारागंज में पार्क करेंगे।भीड़ अधिक होने पर यह होगी व्यवस्था मिजार्पुर, रीवा की ओर से आने वाले वाहनों को लेप्रोसी चौराहा के बगल में नव प्रयागम पार्किंग, एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट पार्किंग, जौनपुर, वाराणसी की ओर से आने वाले वाहनों को कटका तिराहा से डायवर्ट कर मेला कछार, त्रिवेणीपुरम पार्किंग, कानपुर की ओर से आने वाले वाहनों को सीएमपी कॉलेज, केपी कॉलेज, जीआईसी मैदान पार्किंग और लखनऊ व प्रतापगढ़ की ओर से आने वाले वाहनों को कर्नलगंज इंटर कॉलेज, मूकबधिर कॉलेज, भारत स्काउट व एमएनएनआईटी पार्किंग में पार्क कराया जाएगा।

अभविप ने राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई स्वामी विवेकानंद की जयंती

कई इंटर कालेजों में आयोजित हुए कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर के निर्मल तिराहे पर स्थित स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा की साफ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा सफाई की गई और राष्ट्रीय कलामंच द्वारा दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि एएसपी विद्याधर मिश्र ने कहा कि विश्व में सनातन सभ्यता के ध्वजवाहक एवं भारतीयता के महान प्रतीक स्वामी विवेकानंद की जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि स्वामी जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को बंगाल के कोलकाता नगर में हुआ था। उनका बाल्य नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था, जो कालांतर में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए।

स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभविप पदाधिकारी।

धर्म, दर्शन, इतिहास, कला, सामाजिक विज्ञान एवं साहित्य के ज्ञाता स्वामी विवेकानंद की ख्याति वेदांत के विख्यात एवं प्रभावी आध्यात्मिक प्रचारक के रूप में संपूर्ण विश्व में हुई। 11 सितंबर 1893 को अमेरिका के शिकागो नगर में हुए धर्म संसद में जब उन्होंने भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन का प्रसार किया था तब उनके भाषण से पूरा विश्व स्तब्ध रह गया था।

सरोजनी इंटर कालेज में संगोष्ठी में प्रांत उपाध्यक्ष डा.विकास कुमार ने कहा की स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेकर युवाओं में राष्ट्र भक्ति व ऊर्जा का संचार कर भारत के पुनरुत्थान हेतु अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना 1949 में की गई। जो अपने स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण करने की ओर अग्रसर है। इस मौके पर प्रांत उपाध्यक्ष डा धर्मेंद्र प्रताप सिंह, जिला कोषाध्यक्ष अजीत प्रताप सिंह, जिला संयोजक रमेश सिंह पटेल, प्रांत सह छात्रा प्रमुख ज्योति जायसवाल, जिला सहसंयोजक यशस्वी सिंह ने प्रमुखता से स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र को विद्यार्थियों के समक्ष रखा। इसी तरह पट्टी में स्टैंडर्ड कोचिंग, कमल बहादुर इंटर कालेज, गड़वारा के सरस्वती विद्या मंदिर, जेठवारा में अष्टभुजा इंटर कालेज, शिशिर कोचिंग, सरोजनी इंटर कालेज, ओम कोचिंग क्लासेज आदि स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए।

धूमधाम से मनाई गई स्वामी विवेकानंद की जयंती

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतपगढ़। गुरुवार को पट्टी नगर स्थित स्नातकोत्तर महाविद्यालय में नशा मुक्त रैली निकालकर के स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई गई। युवा दिवस के रूप में मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम की शुरूआत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अखिलेश पांडे ने स्वामी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक कि आप अपने उद्देश्य को पूरा न कर लो। इस अवसर पर डॉक्टर के पी सिंह डॉक्टर मिथिलेश त्रिपाठी डॉक्टर अनिल यादव, डॉक्टर दिलीप सिंह, डॉक्टर सुनील विश्वकर्मा, डॉक्टर शिव शंकर पांडे सहित कई अध्यापक मौजूद रहे।

डा0 बीएन कपूर के श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित लोग।

25वीं पुण्यतिथि पर याद किये गये जनपद के प्रख्यात चिकित्सक डा0 कपूर

डा0 कपूर नाम पर बना है शहर में कपूर चैराहा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के प्रख्यात चिकित्सक रहे डा0 बीएन कपूर की 25वीं पुण्यतिथि पर जिले के उनके पुराने शुभचिंतकों एवं शहर के प्रबुद्धजनों ने उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बता दें कि डा0 बीएन कपूर के नाम पर बने शहर के कपूर चैराहे पर उनकी क्लीनिक पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में डा0 संजय कपूर, राजेष कुंदनानी, पीबीपीजी कालेज के पूर्व प्राचार्य बृजभानु सिंह, नदीम जाफरी, बषीर पहलवान, सूफी भाई, हर्षवर्द्धन शुक्ला, सुरेन्द्र प्रकाष चावला, बसंत त्रिपाठी सहित बड़ी संख्या में लोगों ने डा0 बीएन कपूर के चित्र पर पुष्प अर्पित किया।

बता दें कि केजीएमसी के गोल्ड मेडलिस्ट रहे डा0 बीएन कपूर जिले के माने-जाने चिकित्सक थे जो रिक्षे से मरीजों को देखने जाया करते थे। उनकी योग्यता व सरलता के सभी कायल थे। डा0 कपूर की मृत्यु के बाद उनके इकलौते पुत्र डा0 संजय कपूर ने न केवल उनका मेडिकल का कार्य संभाला, बल्कि रोटरी क्लब और इनरव्हील क्लब को जिले में मजबूती दी, लेकिन वह अचानक दिल्ली चले गये जिससे उनके समर्थकों को बड़ा धक्का लगा था। वह तीन दिन पहले आए तो उन्होंने बताया कि वह एयर इण्डिया से रिटायर्ड हो गये हैं। अब वह प्रतापगढ़ में रहने का फैसला लिया है। यह सुनकर वहां उपस्थित लोगों में खुषी के आंसू झलक उठे।

दौड़ प्रतियोगिता में राजकुमार व वर्षा सिंह रहीं अव्वल

भाजयुमो द्वारा यंग इण्डिया रन प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता युवा मोर्चा प्रतापगढ़ द्वारा यंग इंडिया रन प्रतियोगिता के तहत 5 किलो मीटर की दौड़ गुरुवार को खेल स्टेडियम से शुरू होकर मीराभवन, सगरा मोड़, विकास भवन, ट्रेजरी चैराहा, अंबेडकर चैराहा, कम्पनी गार्डेन, होते हुए पुनः मीरा भवन से स्टेडियम पर संपन्न हुई।

इस प्रतियोगिता में बालक वर्ग के प्रथम स्थान पर राजकुमार, द्वितीय स्थान अमजद खान, तृतीय स्थान संदीप पाल बालिका वर्ग में प्रथम स्थान वर्षा सिंह, द्वितीय स्थान प्रिंशी

खेल स्टेडियम में आयोजित प्रतियोगिता में बोलते जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र

यादव, तृतीय स्थान अनुराधा रानी रही शील्ड, ट्रैक सूट एवम नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। सांत्वना पुरस्कार सचिन यादव, अंतिम यादव, सुभाष, अंजली पाल, दीक्षा सिंह, साक्षी पाल दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष भाजपा हरिओम मिश्र, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य गौरव वत्स, अति विशिष्ठ अतिथि सदर विधायक राजेंद्र मौर्य, क्रीड़ा अधिकारी पूनम लताराज, आदित्य शुक्ला, देशराज रहे। अध्यक्षता भाजयुमो जिलाध्यक्ष अंशुमान सिंह ने किया। इस मौके पर जिला महामंत्री नीतिश श्रीवास्तव, सुजीत पाण्डेय, अविनाश सिंह, मदन पाल, सुमित पाण्डेय रितेश सिंह, सुनील सरोज, रोहित त्रिपाठी, विनय मिश्रा, रोहित सिंह, राहुल मौर्या, रोशन सिंह, सी पी सिंह, शैलेश मिश्र, विकल पाण्डेय, अतुल शुक्ला, निहाल सिंह, मनोज यादव, विकास विक्रम सिंह आदि कार्यकत्ता मौजूद रहे।

मेडिकल कालेज के कार्यों से प्रभावित नए प्रिंसिपल ने दिए सुझाव

कुर्सी संभालने के बाद पहली बार निरीक्षण पर निकले नए प्रिंसिपल ने लिया कार्यो का जायजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के डाक्टर सोनेलाल पटेल स्वशासी मेडिकल कालेज का नए प्रिंसिपल डाक्टर सलिल श्रीवास्तव ने गुरुवार को यहां के पूर्व प्राचार्य डाक्टर आर्य देशदीपक के साथ पहली बार मेडिकल कालेज का निरीक्षण किया। इस दौरान नई बिल्डिंग और पुरुष अस्पताल के वार्डो और विभागों की हकीकत देखी गई। डाक्टर देशदीपक ने उन्हें सारी चीजों से अवगत कराया। घंटे भर चले निरीक्षण के दौरान नए प्रिंसिपल पूर्व में हुए कार्यों से काफी प्रभावित हुए। उन्होंने इसकी और बेहतरी के लिए अपने सुझाव भी दिए है। मेडिकल

मेडिकल कालेज का निरीक्षण करते नए प्रिंसिपल डा0 सलिल श्रीवास्तव

कालेज में हुए कार्य के लिए उन्होंने डाक्टर आर्य देशदीपक की तारीफ भी की।

बता दें कि मेडिकल कालेज में नए वार्ड के लिए बनाई जा रही बिल्डिंग का कार्य गत वर्ष पूरा होना था। दिसंबर महीने में बिल्डिंग कालेज प्रशासन को हैंडओवर होनी थी। जो किन्हीं कारणों से नहीं हो पाई। इसी बीच प्राचार्य डाक्टर आर्य देशदीपक का कार्यकाल यहां पर पूरा हो गया। उन्हें हरदोई मेडिकल कालेज का प्रिंसिपल बनाकर शासन ने भेज दिया। हरदोई उनका गृह जिला होने के नाते यह पर तैनाती उनके लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं थी। सिद्धार्थ नगर से आए डाक्टर सलिल श्रीवास्तव को उनके स्थान पर यहां का नया प्राचार्य बनाकर भेजा गया। गुरुवार को बिल्डिंग और अन्य चीजों को हैंड ओवर करने के सिलसिले में आए पूर्व प्राचार्य डाक्टर देशदीपक ने नवागत प्राचार्य सलिल के साथ मिलकर बिल्डिंग और अस्पताल का निरीक्षण कर सुपुर्द करने की प्रक्रिया शुरू की। इस बारे में नए प्राचार्य डाक्टर सलिल श्रीवास्तव ने बताया कि बिल्डिंग को हैंड ओवर करने की तैयारी है। इसी सिलसिले में पूर्व प्राचार्य के साथ निरीक्षण किया गया। मरीजों को बेहतर सुविधा देने के लिए वे और डाक्टर प्रयासरत हैं। इस दौरान सीएमएस डा सुरेश सिंह और हड्डी विभाग के अध्यक्ष डाक्टर सचिन कुमार मौजूद थे।

सनातन धर्म के प्राण है स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदः योगी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती के मीडिया प्रभारी डाक्टर शैलेन्द्र योगी उर्फ योगीराज सरकार ने पट्टी नगर स्थित डाक बंगले में एक प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन कर कहा कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद महाराज जी भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के प्राण है। इस अवसर पर उन्होंने दो दर्जन से अधिक कलमकारों को अंगवस्त्रम और रुद्राक्ष के साथ सम्मानित भी किया। सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए योगीराज सरकार ने कहा कि पत्रकार समाज को दिशा दिखाता है। देश का पत्रकार ही एक ऐसा चैथा स्तम्भ है जो सदैव गरीब से गरीब और कमजोर कमजोर ब्यक्ति की आवाज बन कर अपनी कलम की ताकत से उसकी बात शासन प्रशासन तक पहुचाता है और न्याय दिलाता है। और बताया कि ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती माघ मेला में 17 जनवरी से लेकर 21 जनवरी सुबह छह बजे तक प्रवास पर रहेंगे। शंकराचार्य जी के दर्शन के लिए माघ मेला में हजारों की संख्या में पट्टी से क्षेत्रवासी पहुंच रहे हैं।

अधिवक्ताओं का आंदोलन जारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज एसडीएम के स्थानांतरण को लेकर वकीलो का आंदोलन गुरूवार को भी यहां जारी दिखा। आठवें दिन भी वकीलों ने न्यायिक कामकाज का बहिष्कार जारी रखा। वकीलों के कोर्ट बहिष्कार के चलते न्यायिक कामकाज ठप होने से वादकारी तहसील से वापस लौटते दिखे। वहीं संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश की अध्यक्षता मे हुई आमसभा में वकीलों ने साफ तौर पर कहा है कि एसडीएम का तबादला न होने तक उनका आंदोलन जारी दिखेगा। अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी ने कहा कि जिला प्रशासन को अधिवक्ताओं का सम्मान करते हुए गतिरोध समाप्त करने की पहल करनी चाहिये।

सड़क सुरक्षा नियमों का सभी से करायें कड़ाई से अनुपालनः डीएम

डीएम की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में कलेक्टेज्ट सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं को नियंत्रित एवं कम करने के लिये सड़क सुरक्षा नियमों का सभी से कड़ाई से अनुपालन करायें।

उन्होने परिवहन एवं पुलिस के अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी अधिकारी समय-समय पर चेकिंग अभियान चलायें तथा शराब पीकर वाहन चलाने व तेज रफ्तार तथा बिना हेलमेट, बिना सीटबेल्ट व ओवर लोडिंग के वाहन चलाने वालों के विरूद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाये। शहरों के मुख्य मार्गो पर ई-रिक्शा (बैट्री संचालित वाहन) के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि ई-रिक्शा का रूट निर्धारित करें जिससे जाम की स्थिति उत्पन्न न हो। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि टैक्सी स्टैण्ड, बस स्टैण्ड आदि के पार्किंग स्थल चिन्हित करें, सड़कों पर कोई पार्किंग स्थल न बनाया जाये इसका विशेष ध्यान दें। स्कूली वाहनों की फिटनेस की जांच, फिटनेस समाप्त स्कूली वाहनों को संचालित न किये जाने तथा स्कूली बच्चों को सुरक्षित परिवहन प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि स्कूलों के जो भी कन्डेक्टर, ड्राइवर है उनका मेडिकल चेकअप तथा चरित्र सत्यापन कराया जाये, स्कूली वाहनों के फिटनेस की जांच करायें और यदि अनफिट हो तो उनको बाहर करें। जिलाधिकारी ने बेसिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्कूलों में जो भी वाहन अनफिट है अपने स्तर से आवश्यक कार्यवाही करें, विद्यालयों में बैठक करायें। मोटराइज्ड एवं नॉन मोटराइज्ड वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप अथवा फ्लोरेसेंट पेन्ट लगाये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित कराये जाने के सम्बन्ध में भी चर्चा की गयी। लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियन्ता डीके अहिरवार ने बताया कि जनपद में कुल 52 ब्लैक स्पाट है इसमें 12 लोक निर्माण विभाग के है, शेष एनएच और एनएचआई के हैं। जिलाधिकारी ने सभी ब्लैक स्पाट को शीघ्र समाप्त कराने का निर्देश दिया। हाईवे एवं सड़कों पर अवैध कट के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि नियमानुसार अवैध कट का अवलोकन करें और जहां पर दुर्घटनाओं की स्थिति दिखे वहां पर अवैध कट को बन्द कर दिया जाये। डिवाइडर के ऊपर अतिक्रमण करने वालों को चिन्हित कर आवश्यक कार्यवाही करें। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, स्वास्थ्य विभाग, नगर पालिका, सूचना विभाग सहित अन्य विभागों को यातायात नियमों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने का निर्देश दिया। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, लोक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता एन0के0 यादव, प्रान्तीय खण्ड के अधिशाषी अभियन्ता डी0के0 अहिरवार, एआरटीओ दिलीप गुप्ता सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

नई ऊर्जा के साथ अपना लक्ष्य निर्धारित करें युवाः अपर जिला जज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश एवं जिला जज प्रदीप कुमार सिंह के आदेश के क्रम मे राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर चिंतामणि स्मारक विधि महाविद्यालय गोंडे, प्रतापगढ़ में विधि छात्रों को संबोधित करते हुए अपर जिला जज नीरज कुमार बरनवाल सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने कहा कि युवा अपने लक्ष्य का निर्धारण कर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें।

उन्होंने कहा कि युवा अपने अधिकारों के बारे में जानें, साथ ही वंचित समुदाय एवं कमजोर लोगों को कानूनी रूप से जागरूक करें। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का कथन था कि उठो जागो आगे बढ़ो और तब तक संघर्ष करते रहो जब तक सफलता न प्राप्त हो जाए। इसे युवाओं को आत्मसात करने की जरूरत है। उन्होंने युवाओं को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39 के अंतर्गत निशुल्क विधिक सहायता से संबंधित प्रावधानों के बारे में जानकारी दिया। 11 फरवरी 2023 राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आपसी सुलह समझौते के आधार पर अपने मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से निस्तारित कराया जा सकता है। इस अवसर पर वरिष्ठ पैनल अधिवक्ता जेल विजिटर विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि युवा हमारे देश की शक्ति हैं। अच्छे संस्कार एवं अच्छे व्यवहार के द्वारा देश हमारा और प्रगति करेगा, आज के दिन स्वामी विवेकानंद के विचारों से लोग प्रेरणा लेते हैं। इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ हरि शंकर सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत है, जिनकी जयंती के उपलक्ष में राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया जाता है। सभी के प्रति आभार महाविद्यालय के प्राचार्य नीलम पाण्डेय ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन पीएलवी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण राम प्रकाश पाण्डेय, संचालक लीगल एड क्लीनिक ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्रा दृष्टि सिंह, अविरल मिश्रा, नितिन सिंह, मोहम्मद अजहर ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में रविशंकर मिश्र, पी एल वी अमन त्रिपाठी, अजय सिंह, डॉक्टर हरिशंकर सिंह, रवि पाण्डेय, आदित्य ओझा, अनिल उपाध्याय, प्रियंका शाही, अनिल वर्मा, विनोद कनौजिया आदि लोग मौजूद रहे।

चिंतामणि स्मारक विधि महाविद्यालय में आयोजित हुआ कार्यक्रम

चिंतामणि स्मारक विधि महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में अतिथि का स्वागत करतीं प्राचार्य।

नवागत डीआईओएस ने ग्रहण किया कार्यभार

प्रतापगढ़। जिले में माध्यमिक शिक्षा विभाग के नवागत जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ डॉ ओपी राय ने जनपद पहुंचकर कार्यालय में जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। डीआईओएस इससे पहले बलिया डायट के उप प्राचार्य के रूप में रहे। उसके पहले कुशीनगर, वाराणसी, गाजीपुर आदि जनपदों में जिला विद्यालय निरीक्षक के रूप में कार्य कर चुके हैं। कार्यभार गहण करने के बाद उन्होंने कहा कि माध्यमिक शिक्षा विभाग में पठन-पाठन एवं बोर्ड परीक्षा को सकुशल एवं शुचिता पूर्ण ढंग से संपन्न कराने की हमारी प्राथमिकता है। इस अवसर पर बधाई देने वालों में डॉ विंध्याचल सिंह, डॉ मोहम्मद अनीस, कौशल पांडेय, राघवेंद्र शुक्ला, डॉ अनूप सिंह, श्याम शंकर, अभिषेक मिश्रा, कपिल तिवारी सहित कार्यालय के कर्मचारी, विद्यालयों के प्रधानाचार्य और शिक्षक उपस्थित रहे।

अभय ने अपनों के साथ देखी अपनी फिल्म डेढ़ लाख का दूल्हा

अभिनेता का सदर विधायक ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दो हफ्ते से चल रही फिल्म डेढ़ लाख का दूल्हा देखने के लिए बृहस्पतिवार को फिल्म के निमार्ता-निर्देशक और कलाकार अभय प्रताप सिंह प्रतापगढ़ पहुंचे। अपने इष्ट मित्रों के साथ उन्होंने अपनी फिल्म दोपहर के शो में देखा। जिले के इस कलाकार का स्वागत सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने भी किया।

बता दें कि जिले के बिहार गंज बाजार निवासी अभय प्रताप सिंह थिएटर के साथ बढ़ते हुए टीवी कलाकार के रूप में मुंबई में जाने-माने चेहरा बन चुके हैं। उन्होंने अपने निर्देशन में डेढ़ लाख का दूल्हा फिल्म बनाई जो इस समय नगर के इकलौते सिनेमा घर में चल रही है। वह अपने साथियों के साथ नगर मुख्यालय आए और दोपहर के शो में फिल्म देखा। नगर के बाबागंज स्थित एक होटल में रुके थे जहां पर सदर के विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य अपने प्रतिनिधि अरुण मौर्य के साथ पहुंचकर कलाकार का स्वागत किया। सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने कहा कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार फिल्मों के लिए विशेष काम कर रही है। प्रदेश के कलाकारों के लिए भविष्य में सरकार ऐसी योजनाएं ला रही है जिससे उत्तर प्रदेश में ही फिल्मों का निर्माण पूरी तरह से संभव हो पाएगा। विधायक ने कलाकार अभय के लिए हर संभव अपनी ओर से सहयोग का आश्वासन भी दिया।

अभिनेता का स्वागत करते सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य।

टैबलेट पाकर खिले मेधावियों के चेहरे

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर के राहाटीकर स्थित रनवत सिंह कॉलेज ऑफ फामेर्सी में गुरूवार को डीफार्मा उत्तीर्ण इक्सठ छात्र-छात्राओं को समारोहपूर्वक टैबलेट प्रदान किया गया। समारोह में रनवत सिंह कालेज ऑफ फामेर्सी के चेयरमैन अशोक सिंह ने कहा कि राज्य सरकार के द्वारा निशुल्क टैबलेट छात्र-छात्राओं को नये तकनीकी ज्ञान से लैस करके कार्यकुशलता बढाने व सफलता के लक्ष्य को हासिल करने मे सहायक होगा। वहीं चेयरमैन के हाथों टैबलेट पाकर मेधावियों के चेहरे खिले नजर आये। कार्यक्रम का संयोजन असरफ ने किया। प्राचार्य विजयचंद्र यादव ने योजना के उददेश्य पर प्रकाश डाला। इस मौके पर कुलदीप मिश्र दीपक, शुभम सोनी, साक्षी त्रिपाठी, दिनेश यादव व आकाश मौर्या आदि रहे। इधर नगर स्थित हेमवती नंदन बहुगुणा पीजी कालेज मे भी मेधावियों को टैबलेट प्रदान किया गया। एमए के छात्र छात्राओं को टैबलेट मिलने से उनमे खुशी देखी गयी। इस मौके पर डा. राजेन्द्र मिश्र, प्रो. आलोक दुबे, डा. फणीन्द्र मिश्र आदि रहे।

खबर संक्षेप

निरोधात्मक कार्यवाही में 15 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना पश्चिम शरीरा से छः थाना चरवा से एक थाना संदीपन घाट से तीन थाना कड़ाधाम से दो थाना सैनी से तीन कुल 15 अभियुक्तो को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त अजीज पुत्र प्रताप शाह निवासी खेसहन थाना गाजीपुर जनपद फतेहपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

शराब के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मेहयाघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्ता आशा देवी पत्नी दरोगा निषाद निवासी घोघपुर थाना महेवाघाट को गिरफ्तार कर कब्जे से 08 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

राम वनगमन मार्ग के कार्यो में तेजी से प्रगति करें सुनिश्चित : डीएम

जिलाधिकारी ने एनएचएआई एवं सेतु निगम द्वारा कराये जा रहें कार्यों को तेजी से पूर्ण कराने के दिये निर्देश

उपस्थित विभिन्न विभाग के अधिकारियों को संबोधित करते जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने उदयन सभागार में एन0एच0ए0आई0 एवं सेतु निगम के द्वारा जनपद में किये जा रहें कार्यों तथा राम वनगमन मार्ग की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। जिलाधिकारी ने समीक्षा के दौरान एन0एच0-2 के चौड़ीकरण कार्य में अपेक्षित प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए एन0एच0ए0आई0 के अधिकारियों को तेजी से प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। उन्होंने निमार्णाधीन सेतु, शुजातपुर के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा के दौरान उप जिलाधिकारी, सिराथू को भूमि से सम्बन्धित आ रही समस्याओं को निस्तारित करने के निर्देश दियें। उन्होंने सेतु निगम के अधिकारियों को निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश दियें। उन्होंने राम वनगमन मार्ग की प्रगति की समीक्षा के दौरान भूमि अधिग्रहण के तहत परिसम्पत्तियों के मूल्याँकन में अपेक्षित प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए अधिशासी अभियंता को भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश देते हुए कहा कि एक ए0ई0 को भी नामित किया जाय इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय, प्रभागीय वनाधिकारी डॉ0 राम सिंह यादव एवं सभी उप जिलाधिकारीगण सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

विचैलिए की मदद से लड़की खरीदने आया युवक हुआ गिरफ्तार

कौशाम्बी। बिचैलियों की मदद से लड़की खरीदने आए तीन संदिग्ध युवकों को पिपरी कोतवाली क्षेत्र के डीहा घूरी में मंगलवार की रात ग्रामीणों ने पकड़ लिया। ग्रामीणों ने युवकों की पिटाई कर पुलिस को सौंप दिया। पुलिस ने हिरासत में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक पिपरी कोतवाली इलाके के डीहा घूरी गांव में मंगलवार की शाम तीन युवक पहुंचे। क्षेत्र के दरियापुर व स्थानीय इलाके के रहे बिचैलियों की मदद से वह शादी करने की बात कहते हुए लोगों से बात चीत करने लगे। इस बीच दो लडकियों को दिखाया गया। दहेज बिना शादी होने की बातें लकड़ी पक्ष से हुई। रिश्ता आगे बढ़ने की बात आई तो वह इसी साथ विदाई कराने को कहा। इस पर लड़की पक्ष के लोगों को शक हुआ और वह उनके साथ रिश्ता करने से मना कर दिए। परिजनों के रिस्ता करने से मना करने पर अपने जिद पर अडे लोग मारपीट पर आमादा हो गए। ग्रामीणों ने मामले की शिकायत पुलिस में की तो युवक मौके से भागने का प्रयास किया। लेकिन ग्रामीणों ने दौडा कर युवको को दबोच लिया। हांला कि मौका पाकर बिचौलिया भाग निकला। इस संबंध में पिपरी इंस्पेक्टर श्रवण कुमार सिंह का कहना है कि पकड़े गए युवकों ने संतराम चौहान पुत्र सीबू, शेर सिंह पुत्र वकील सिंह निवासीगण मजलिस पुरतौली थाना भोत्या जनपद मुजफ्फरनगर, मेन पाल पुत्र संतराम निवासी कपूलपुर रायघटी थाना लगग जनपद हरिद्वार के रूप में अपना परिचय दे रहे हैं। पूंछ ताछ करते हुए मामले की छानबीन की जा रही है।

आक्रोशित महिलाओं ने बंद कराया पाइप लाइन बिछाने का कार्य

कई दर्जन महिलाओं ने टाउन एरिया का किया घेराव,गाँव के अंदर पाइप लाइन बिछाने की किया मांग

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा के जिम्मेदार प्रशासन के मनमानी रवैये के खिलाफ नगर के विभिन्न वार्डो के निवासी किसी न किसी दिन घेराव नारेबाजी करते रहते हैं लेकिन नगर पंचायत प्रशासन अपनी मनमर्जी करने पर उतारू है तमाम मानक विहीन कार्य कराए गए हैं अभी 2 दिन पहले वार्ड नं 6 कृष्णा नगर की दर्जनों महिलाओं ने टाउन एरिया का घेराव कर अपनी विभिन्न मांगों को लेकर प्रदर्शन किया था। आज गुरुवार वार्ड नं 7 मौलाना आजाद नगर की कई दर्जन महिलाओं पुरुषों ने मौलाना आजाद नगर में 9 लाख रुपये से निमार्णाधीन पानी टंकी बोर और 400 मीटर अनावश्यक रूप से पाइप लाइन बिछाने पर प्रदर्शन और नगर पंचायत अझुवा कार्यालय का घेराव किया है वार्ड 7 मौलाना नगर वासियों ने आरोप लगाया

पाइपलाइन बिछाए जाने का विरोध करती महिलाएं

कि उनके वार्ड में पीने के पानी की बड़ी समस्या है वार्ड में 9 लाख की लागत से हो रहे पानी टँकी बोर और पाइप लाइन बिछाने से शुद्ध पीने का पानी मिलने लगेगा किंतु नगर पंचायत का चहेता कमाऊ इलाहाबादी ठेकेदार अपनी मनमर्जी पर उतारू है मौजूद महिलाओं और पुरुषों ने मौका मुआयना करवाते हुए बताया कि जहाँ 300 के अधिक लोगों की आबादी है उधर पाइप लाइन केवल 200 मीटर बिछाया जा रहा जबकि टाण्डा रोड लाइन पर सड़क किनारे मात्र 3 घरों के लिए पाइप लाइन 200 मीटर बिछाई है ! मजेदार बात यह है कि मात्र 3 इंच जमीन के नीचे मानक विहीन पतला पाइप बिछाया जा रहा ।मौके पर पहुंची महिलाओं ने काम कर रहे मजदूरों से कम रुकवा दिया है वार्ड नं 7 मौलाना आजाद नगर की महिलाओं ने प्रदेश सरकार और जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए नगर पंचायत प्रशासन और ठेकेदार पर कार्रवाई की गुहार लगाई है। वहीं अधिशाषी अधिकारी सुभाष चंद्र सिंह ने कहा कि वार्ड वासियों के अनुसार पाइप लाइन बिछाया जाएगा यदि ठेकेदार मानक विहीन कार्य करवा रहा है तो समुचित कार्रवाई की जाएगी प्रदर्शन करने वालों में जय चन्द्र, मोसना बानो, सरवरी बेगम, माला देवी ,सुरेखा ,गीता देवी ,सुरेश नीलू सहित कई दर्जन महिला पुरुष मौजूद रहे।

टायरों के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मोहब्बतपुर पइसा अंतर्गत अनिल कुमार सरोज पुत्र बासदेव निवासी ग्राम घटमापुर थाना मोहब्बतपुर पइसा की दुकान (गुमटी) से ताला तोड़कर पुराने टायर ट्यूब आदि चोरी करते हुए तीन अभियुक्तों अजीज अहमद पुत्र स्व0 मो0 हबीब निवासी 132/280 टीपी नगर बाबू पुरवा थाना बाबूपुरवा जनपद कानपुर नगर रहीम अहमद पुत्र स्व0 मो0 हबीब निवासी मुन्शी का पुरवा डाक खाना थाना बाबूपुरवा जनपद कानपुर नगर व सहजाद आलम पुत्र मसूर आलम निवासी बेगम पुरवा मकान नं0 131/369 टीपी नगर थाना बाबूपुरवा जनपद कानपुर नगर को ग्रामीणों द्वारा पकड़कर थाना मोहब्बतपुर पइन्सा पुलिस को सुपुर्द किया गया अभियुक्तो के कब्जे से छोटा हाथी पिकअप गाड़ी मय चोरी के टायर बरामद कर तथा अभियुक्तों की जमा तलासी सभी के पास से 01-01 अदद नाजायज चाकू बरामद किया गया पूछताछ के दौरान अभियुक्तों द्वारा कनवर बॉर्डर के पास की दुकान से 10 अदद टायर एवं खागा क्षेत्र की दुकान से 11 अदद टायरों की चोरी करना बताया गया तथा अभियुक्तो को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

पहाड़पुर सुधवर से हाईटेंशन लाइन के तार खोल ले गए चोर

कौशांबी मनौरी। 132 केवीए पवार हाउस से मनौरी सराय अकिल कस्बे को बिधुत सप्लाई दी गई थी 8 साल से विधुत सप्लाई बंद थी 132 केवीए मनौरी बिजली घर से सराय अकिल कस्बे को सप्लाई की 33 केवीए एचटी लाइन की तार पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया ग्रामीणों ने बिजली विभाग को तार चोरी होने की जानकारी दी है। बिजली अफसरों ने घटना स्थल का निरीक्षण कर चरवा पुलिस को चोरों के खिलाफ शिकायत की है। अफसरों के मुताबिक जिस एचटी लाइन की तार काटी गई है उसकी सप्लाई कई साल से बंद पड़ी थी। चायल तहसील क्षेत्र के पहाड़पुर सुधवर गांव में बुधवार की दोपहर ग्रामीणों ने बिजली की एचटी लाइन के पोल के बीच बिजली की तार बेतरतीब तरीके से जमीन पर पड़ी देखी। कुछ दूर जाकर देखा तो 4 पोल से करीब 1 किलोमीटर दूरी की बिजली की तार गायब थी इसकी सूचना मनौरी 132 केवीए बिजली घर के अधिकारियों को ग्रामीणों ने दी। जेई बलवंत सिंह ने बताया कि 132 केवीए मनौरी से 70 के दशक में सरायअकिल कस्बे को 33 केवीए की बिजली की सप्लाई लाइन खींची गई थी। इसके जरिए सराय अकिल कस्बे सहित आसपास के ग्रामीण इलाके में बिजली पहुंचाई जा रही थी। पिछले 7-8 साल पहले पुरखास में नया विद्युत सब स्टेशन तैयार होने के बाद इस 33 केवीए की एचटी लाइन की सप्लाई बंद कर दी गई। इंस्पेक्टर चरवा अलोक कुमार ने बताया कि बिजली की एचटी लाइन से तार खोले जाने के मामले की सूचना बिजली विभाग की ओर से मौखिक दी गई है। संबंधित मामले में लिखित तहरीर प्राप्त होने पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर अभियुक्त उदय भान पासी पुत्र हरि मोहन पासी निवासी केसवापुर थाना मंझनपुर को उमरा पुलिया के पास से एक अदद चोरी की मोटरसाइकिल पैंसन प्रो के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

18 वी राष्ट्रीय जंबूरी प्रतियोगिता में लहराया परचम

कौशाम्बी। 18 वी राष्ट्रीय जम्बूरी भारत स्काउट और गाइड 4 जनवरी से 10 जनवरी 2023 तक रोहत पाली मारवाड़ राजस्थान में आयोजित की गई 18वी जंबूरी प्रतियोगिता में जिला संस्था के विशेष सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर प्रादेशिक मुख्यालय आवंटित बैंड प्रतियोगिता के साथ ही अन्य प्रतियोगिताओं में जिले के सभी स्काउट गाइड ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की और राष्ट्रीय पटल पर उत्तर प्रदेश की अगुवाई में ए ग्रेड हासिल किया। जनपद कौशांबी से स्काउट छोटेलाल, गौरव सिंह श्री देश बन्धु इंटर कॉलेज बैशकांटी , सर्वेश कुमार कृषक इंटर कॉलेज हिनौता, अनूप कुमार, रुद्र प्रताप धर्मा देवी इंटर कॉलेज केन कनवार गाइड पूनम, शिखा, अनामिका, रानी श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा ने प्रतिभाग किया। इस उपलब्धि में श्याम बाबू जिला संगठन कमिश्नर स्काउट, अभय सिंह जिला स्काउट मास्टर व वंदना कुशवाहा ट्रेनिंग काउंसलर का विशेष योगदान रहा। सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर कमलेश द्विवेदी, जिला मुख्यायुक्त/जिला विद्यालय निरीक्षक संतोष कुमार मिश्रा, जिला कमिश्नर चुन्नी लाल सरोज, संगीता व जिला सचिव राम सुन्दर सिंह ने इस उपलब्धि पर सभी को बधाई दी है।

एक जमीन का बैनामा लेकर दो जमीन पर कब्जा कर रहे

कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के मखऊपुर गांव में दबंगों ने अनुसूचित जाति की महिला से एक जमीन का बैनामा लेकर दो जमीन पर कब्जा करना शुरू कर दिया है मामले की शिकायत पीड़ित परिवार ने संपूर्ण समाधान दिवस में कर दबंगों पर कार्यवाही की मांग की है संपूर्ण समाधान दिवस में दिए शिकायती पत्र के मुताबिक अनुसूचित जाति के गंगा राम की पत्नी रामकली वा बेटे बीरेन्द्र कुमार राजेन्द्र कुमार निवासी मखऊ पुर थाना पिपरी ने आराजी संख्या 193 का बैनामा किया है लेकिन दबंग उसकी 194 नंबर जमीन पर बने मकान को भी कब्जा कर रहे हैं। पीड़ित परिवार ने अधिकारियों को बताया कि भूमाफिया राजेश पाल शत्रुधन पाल रणधीर पाल तन्नू प्रधान आदि ने कुछ दिन पहले जालसाजी करके मेरी संक्रमणीय भूमिधर आसं० 193 रक्या 0.2150 हे0 में बना पक्का मकान जबरन कब्जा करके मेरी माँ को डरा धमकाकर 13 अप्रैल 2021 को बैनामा करवा लिया अब उपरोक्त लोग उसकी संक्रमणीय भूमिधर आराजी संख्या 194 रक्बा 0.14900 में बना पक्का आर०बी० मकान पर कब्जा करने की नियत बनाए हैं पीड़ित परिवार का कहना है कि 17 दिसम्बर 2022 को ईट बालू गिराकर शेष भूमि पर निर्माण करा रही थी तो उपरोक्त विपक्षी आकर मुझे व मेरे बेटे को गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लगे तथा जबरन मेरा मकान व जमीन को कब्जा करके मेरे घर के अन्दर रखा समान बाहर फेंक दिया जिसकी शिकायत थाने पर किया गया लेकिन थाना पिपरी पुलिस ने कोई कार्यवाही नही की।

कड़ाके की ठंड में खुल रहे इं. कॉलेज बन सकते हैं बच्चों की मौत का सबब !

पूरे दिन नहीं होते सूर्यदेव के दर्शन पूरा जिला बन गया बर्फ का घर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रदेश में भयंकर शीतलहर एवं ठंड के यलो एलर्ट के बावजूद जिले में 9 से 12 तक के सभी स्कूल कालेज पूरी तरह से खुले हैं , जिला प्रशासन के अधिकारियों ने अभी तक कोई आदेश जारी नहीं किए हैं , आस पास के जनपदों में सभी स्कूल कॉलेज ज्यादातर बंद कर दिये गये है । इस हाड़ कंपा देने वाली ठंड मे बच्चे आखिर कैसे करेंगे पठन-पाठन का कार्य कर पा रहे होंगे यह एक बहुत बड़ी चिंता का विषय है। योगी सरकार के आदेशों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है जो खुद पर एक बहुत बड़ा दावा है। स्कूल कॉलेज व चौराहों के आस - पास भी कहीं पर अलाव जलते नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। राहगीरों व स्कूली बच्चों के लिए ठंड से बचाव के लिए कोई भी पुख्ता इंतजाम नहीं किये गये हैं । जनपद में सभी प्राइवेट स्कूल व कॉलेज है खुले हैं जो किसी भी समय बच्चों के लिए काल बन सकते हैं। अभिभावकों ने जिला प्रशासन का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराकर स्कूल, कॉलेज बंद करने की अपील की है।

शिकायत के बावजूद नहीं रुका सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा

करारी कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के सोनवारा गांव के दबंग सुरेश पाल वा बच्चू पाल जबरन सोनवारा 11नम्बर सरकारी जी एस जमीन पर कब्जा करने पर आमादा है ग्रामीणों ने सूचना कई बार चौकी इंचार्ज गुरौली को दिया लेकिन गुरौली चौकी कब्जा हटवाने में नाकाम दिख रही है बेरौचा ग्राम प्रधान ने भी इसकी सूचना 11/04/22 को चौकी इंचार्ज गुरौली को 9 माह पूर्व दिया गया था कब्जा हटवाने के सम्बन्ध में उसके बाद अभी तक कब्जा मुक्त कराने में गुरौली चौकी पुलिसअसमर्थ है गांव सोनवारा के सुरेश पाल वा बच्चू पाल अभी तक कब्जा करता चला आ रहा है लोगों का कहना है कि सरकारी जमीन में पहले जानवर बाधता है फिर चारो तरफ लकड़ी रखता है उसके बाद बाउंड्री बना के कब्जा कर रहा है यह सिलसिला हर साल चलता है सरकारी जमीन पर कब्जा एक साल पूर्व कच्ची नाली को फावड़े से तोड मरोड़ कर उस पर कब्जा करने में कामयाब हो गया शिकायत के बाद भी नही की गई कोई कार्यवाई दबंग सुरेश पाल के हौसले और बुलंद हो गए। दबंग सुरेश वा बच्चू पाल सोनवारा का सिलसिला कब खत्म होगा जानवर बाधने लकड़ी रखना उपली पाथना गैरी बनाना फिर बाउंड्री बनाना फिर घर निर्माण करना जैसी कब्जा करने वाली समस्या का पुलिस विभाग कब तक करेगी खात्मा।

जनपद के क्षय उन्मूलन की स्थिति को जाँच रहा विभाग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। देश को वर्ष 2025 तक क्षय (टीबी) मुक्त बनाने के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में लगातार काम हो रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत नेशनल सर्टिफिकेशन के लिए जनपद में सर्वेक्षण शुरू हुआ है। यह जानकारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ सुष्णेंद्र ने दी। सीएमओ ने बताया कि जिले में टीबी पर होने वाली गतिविधियों और उनके नतीजों को बारीकी से परखा जा रहा है। क्षय उन्मूलन के संकेतकों (इंडीकेटर) पर खरे उतरने वाले जिलों को स्वर्ण (गोल्ड), रजत और कांस्य की श्रेणी में स्थान दिया जाएगा। जिला क्षय रोग अधिकारी एस.के झा ने बताया कि जनपद में 7 जनवरी से सर्वेक्षण शुरू हुआ है। इसके लिए जिले के 10 गांवों को चिन्हित किया गया है। इसमें नादेमयी, गनपा, कुर्रो, रामनगर, भैला

मानक पर खरे उतने पर होगा जनपद का सम्मान

मकदूमपुर, बंधवा , मलाक नगर, बलीपुर टाटा, सराय अकिल, और सेवेधा शामिल हैं। इन गांवों में स्वास्थ्य विभाग की देखरेख में डिस्ट्रिक्ट लेवल एनुवल सर्वे (डीएलएएस) के वार्लंटियर्स के सहयोग से सर्वेक्षण अभियान चल रहा है। इस दौरान टीम टीबी जांच की सुविधा, मरीजों के नोटिफिकेशन (सरकारी/प्राइवेट), टीबी मरीजों की एचआईवी जांच, निक्षय पोषण योजना के तहत भुगतान की स्थिति, ड्रग सेल और मरीजों की संख्या में आ रही कमी की दर को देख रही है।उन्होंने बताया कि टीम को मदद करने वाले वार्लंटियर्स को जिला स्तर पर प्रशिक्षित किया गया है। जिला स्तरीय इस वार्षिक सर्वेक्षण में संभावित मरीजों के बलगम की नैट पर उसी दिन जांच कराई जा रही है। सर्वे में जिन गाँवों में पिछले वर्षों में एक भी टीबी मरीज नहीं पाए गए हैं, उनको टीबी मुक्त गाँव में शामिल किया जाएगा। विश्व क्षय रोग दिवस मार्च 2023 पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम के दौरान सफल जिलों को सम्मानित किया जाएगा। डॉ झा ने बताया कि सर्वे की प्रगति और कार्य को देखने के लिए स्टेट टीम ने किया दौरा किया और टीम के साथ गावं का भ्रमण भी किया उन्होंने सर्वे टीम को कार्य में आ रही दिक्कतों के बारे में जाना और समाधान किया। डीपीपीएमसी अजीत कुमार ने बताया कि 6 दिनों में सभी टीम ने सर्वे के तहत 200 से 250 घर का सर्वे किया है जिसमे से लगभग 20 सैम्पल का कलेक्शन किया गया हैं जिसमे सभी की रिपोर्ट नेगेटिव आई है` उन्होंने बताया कि हर टीम को एक हजार घर का सर्वे करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं।

नहरों की मनमानी सफाई के चलते किसानो के खेतों में भरा पानी : अजय सोनी

करारी कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी ने बुधवार को जिले की कई नहरों के कट जाने से किसानो के खेतों में हुए जलभराव का स्थलीय जायजा लिया और किसानो से मुलाकात की। इस अवसर पर किसानों के खेतों में पानी भर जाने से हुए नुकसान पर अजय सोनी ने सिंचाई विभाग की लापरवाही पर आक्रोश व्यक्त किया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत बुधवार को समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी अपने कार्यकताओं के साथ किसानों के खेतों में नहर की पटरी कट जाने से हुए जलभराव को देखने मंझनपुर ब्लॉक के भेलखा के पास पहुंचे। मौके पर मौजूद रहे कई किसानो ने अजय सोनी को बताया कि महंगे दामों पर खाद और बीज खरीदकर खेतों की बुआई की। साथ ही सिंचाई और ट्रैक्टर से बुवाई करने में हजारों रुपए खर्च हुए लेकिन सिंचाई विभाग की लापरवाही के चलते भेलखा माइनर कटने से खेतों में पानी भर गया।जिससे सारी फसल बर्बाद हो गई और गरीब किसानो के आजीविका के लाले पड़ने की स्थिति उत्पन्न हो गई। अजय सोनी ने किसानो को आश्वस्त किया कि जल्द ही इस मुद्दे पर आंदोलन किया जाएगा और नुकसान के मुआवजे की मांग की जायेगी। इस अवसर पर अजय सोनी ने कहा कि सिंचाई विभाग द्वारा नहरों की मनमानी सफाई के चलते किसानो के खेतों में पानी

निरीक्षण करते समर्थ किसान पार्टी नेता

भर गया है। नहरों की सफाई में विभागीय अधिकारी और ठेकेदारों ने भारी धांधली की है। इसी के साथ अजय सोनी ने जिला प्रशासन कौशांबी और जिला प्रशासन फतेहपुर से दोषी ठेकेदारों एवं अधिकारियों पर उचित कार्यवाही करने की मांग की। साथ ही कौशांबी जिले के जिन जिन किसानों के खेतों में नहर कटने से पानी भर गया है, उन्हे चिन्हित कर उनको मुआवजा दिए जाने की मांग की।इस अवसर पर बचानी पाल, वीरेंद्र तिवारी, राकेश सोनकर सुंदर लाल सरोज, मुन्ना यादव आदि लोग मौजूद रहे।

विवेकानंद की जयंती पर खेलकूद का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ रवि किशोर त्रिवेदी की अध्यक्षता तथा क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी स्वाती पाण्डेय, ग्राम प्रधान देवरा व सचिव ग्राम पंचायत मनोज सिंह के सहयोग से गुरुवार को ग्राम देवरा मे राष्ट्रीय युवा दिवस (स्वामी विवेकानंद जी की जयंती) के अवसर पर खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया खेलकूद के अंतर्गत बालक /बालिका की 400, 800 एवं 1500 मीटर दौड़ तथा कबड्डी व बालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बालक वर्ग की 400 मीटर दौड़ में लालाराम-प्रथम, गुरदीप सिंह- द्वितीय एवं अभिषेक पाण्डेय तृतीय स्थान पर रहे। इसी प्रकार बालिका वर्ग की 400 मीटर की दौड़ में विनीता सरोज- प्रथम, रेशमा देवी -द्वितीय व अनिता देवी तृतीय स्थान पर रहीं। बालक वर्ग की 800 मीटर की दौड़ में मानिक चन्द्र- प्रथम ,शुभम सिंह- द्वितीय एवं आशीष पाल तृतीय स्थान

विवेकानंद जयंती के अवसर पर उपस्थित मुख्य विकास अधिकारी खिलाड़ी वा अन्य

पर रहे। बालिका वर्ग की 800 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में शोभा देवी-प्रथम,खुशबू- द्वितीय एवं अर्चना सिंह तृतीय स्थान पर रहीं। बालक वर्ग की 1500 मीटर दौड़ की प्रतियोगिता में मानसिंह -प्रथम, रामनिवास पांडेय- द्वितीय एवं अभय पाण्डेय तृतीय स्थान पर रहे। बालिका वर्ग की 1500 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में तमन्ना- प्रथम, मंजिली -द्वितीय एवं संजना तृतीय स्थान पर रहीं। वॉलीबॉल प्रतियोगिता के बालक वर्ग में टेवा टीम- विजेता व टेंगाई टीम- उप विजेता रही। इसी प्रकार बालीबाल बालिका वर्ग की प्रतियोगिता में पवैया टीम- विजेता तथा देवरा टीम -उपविजेता रहीं बालक वर्ग की कबड्डी प्रतियोगिता में वीकेडी टीम - विजेता तथा पवैया टीम- उपविजेता रही।इसी प्रकार बालिका वर्ग की कबड्डी प्रतियोगिता में महादेव टीम-विजेता तथा वीकेडी टीम -उप विजेता रही।

संपादकीय

विकास पर बल और तीर्थ यात्राओं को बढ़ावा

अयोध्या और काशी के बाद अब प्रदेश सरकार मथुरा, वृंदावन में भी भव्य कॉरिडोर बनाने की ओर अग्रसर है इसके साथ ही प्रदेश में तीर्थयात्राओं को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश के सभी छोटे व स्थानीय महत्व के धार्मिक स्थलों का विकास भी किया जा रहा है, जिससे तीर्थ यात्राओं को बढ़ावा तो मिलेगा ही रोजागर के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे। प्रदेश सरकार निवेश लाने के लिए जो अभियान चला रही है उसके केंद्र बिंदु में तीर्थ पर्यटन एक महत्वपूर्ण बिंदु रखा गया है जिसके कारण निवेशक बड़ी संख्या में पर्यटन के क्षेत्र में निवेश के लिए आगे आ रहे हैं। यह प्रदेश सरकार की मेहनत का ही परिणाम है कि इस बार आंग्ल नववर्ष पर प्रदेश के सभी प्रमुख मंदिरों व धार्मिक केंद्रो पर भारी भीड़ उमड़ी।प्रदेश के प्रमुख आस्था केन्द्रों अयोध्या, मथुरा, काशी सहित तमाम छोटे बड़े आस्था केंद्रों पर भक्तों का अभूतपूर्व आगमन देखा गया । भक्तों का उत्साह इतना प्रबल था कि कड़ाके की ठंड का उन पर प्रभाव नहीं हो रहा था। आम हिंदू जनमानस नव्य काशी में बाबा भोलेनाथ का दर्शन करने के लिए आतुर था।काशी विश्वनाथ मंदिर में नया कारिडोर बनने के बाद विगत वर्ष से अब तक11 करोड़ से अधिक श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं।यही स्थिति अयोध्या नगरी में भी रही। वहीं लखनऊ के चंद्रिका देवी मंदिर में भी दो लाख से अधिक भक्त दर्शन करने के लिए पहुंचे।यहां पर दर्शन करने के लिए आये दर्शनार्थियों का मानना था कि योगी सरकार आने के बाद यहाँ अच्छी व्यवस्था हो गई है विशेषकर सड़कें अच्छी हो गई हैं और यातायात की सुविधा भी सुलभ है। प्रदेश में तीर्थ यात्राओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए अब प्रदेश सरकार ब्रज के सभी गुमनाम धार्मिक स्थलों का विकास तो करेगी ही मथुरा के बांके बिहारी जी का भव्य कारिडोर बनाने की ओर भी बढ़ चली है।प्रदेश सरकार पांच एकड़ क्षेत्र में 506 करोड़ रूपए से वहां भव्य और दिव्य परिसर तैयार करायेगी।नए परिसर में परिक्रमा मार्ग स्थित जुगल घाट से मुख्य प्रवेश द्वार होगा।परिसर का स्वरूप ऐसा तैयार किया गया है कि उसके अंदर प्रवेश करते ही आराध्य की छवि श्रद्धालु निहार सकेंगे।परिसर के लिए भवन सर्वे का कार्य पूरा कर लिया गया है।यहां बनने वाले प्रस्तावित परिसर में करीब आठ सौ वर्ग मीटर का कान्हा की लीलाओं के चित्रों से सुसज्जित गलियारा होगा और इसी गलियारे पर श्रद्धालुओं की दर्शन के लिए कतार लगेगी।इसी में मंदिर से जुड़ा प्रथम तल होगा।मंदिर आने के लिए 20 से 25 मीटर चौडे. रास्ते बनेंगे जिसमें पहला रास्ता सीधे मंदिर तक पहुंचेगा।नए परिसर में करीब 900 मीटर का परिक्रमा मार्ग भी होगा। कुल मिलाकर बांके बिहारी मंदिर का गलियारा बहुत ही भव्य बनाए जाने का प्रस्ताव पारित हो चुका है। गलियारे का प्रथम तल 2,380 वर्ग मीटर का होगा।1,150 वर्ग मीटर में प्रतीक्षालय बनाया जाएगा।जुगल घाट, विद्यापीठ चौराहा और जादौन पार्किंग से तीन प्रवेश द्वार बनाये जाएंगे।1,800 वर्ग मीटर में यात्री प्रतीक्षालय का निर्माण होगा। बांके बिहारी मंदिर में प्रस्तावित परिसर में 800 वर्ग मीटर में पूजा सामग्री की दुकान भी खोली जाएंगी। ब्रज के तीर्थों का विकास करने के लिए उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद की ओर से जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है उसमें एक ह्वताज बीबीह्ल और रसखान का समाधि स्थल भी है।यह दोनों ही भगवान कृष्ण के अनन्य भक्तों में से एक हैं जो मुस्लिम समुदाय के होते हुए भी भगवान कृष्ण को मानते थे।इन मुस्लिम भक्तों के समाधि स्थल पूरी तरह से खंडहर हो चुके थे जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है।ताज बीवी और रसखान के समाधि स्थल का जीर्णोद्धार हो जाने के बाद यहां पर भी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है।यहां पर 500 लोगों के लिए ओपन थिएटर बनाया गया है जिसमें ताज बीवी और रसखान के जीवन कार्यों पर षो आयोजित किए जाते हैं।इस कार्यक्रम की लोकप्रियता को देखते हुए अब ब्रज के सभी गुमनाम धार्मिक स्थलों को विकसित करने का फैसला लिया गया है और जिस पर तीव्र गति से काम जारी है। तीर्थ यात्रियों के आवागमन कि सुविधा के लिए आगरा और मथुरा का हेलीपैड दो से तीन माह में तैयार हो जाएगा।लखनऊ में रमाबाई उद्यान के सामने हेलीपैड तैयार है और अयोध्या का अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट जून तक पूरा हो जाने की संभावना है। प्रदेश मे तीर्थाटन को बढ़ावा देने के लिए पुराणों में वर्णित नैमिषारण्य धाम के लिए नैमिषारण्य तीर्थ विकास बोर्ड की घोषणा की गई है जिसके अंतर्गत नैमिषारण्य का भी विकास किया जाएग। इस तीर्थ विकास बोर्ड की बैठक भी हो चुकी है साथ ही यहाँ पर ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने के साथ कई प्रकार के कार्य किए जाएंगे। प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह का कहना है कि बुंदेलखंड के किलों, महलों को विकसित करके पर्यटकों को इनमें ठहरने का निर्णय लिया गया है।पर्यटन का वार्षिक कैलेंडर जारी करते हुए मंत्री ने कहा कि रेल, जल व वायु कनेक्टिविटी का विस्तार करके पर्यटकों को प्रदेश की ऐतिहासिक, धार्मिक व पौराणिक महत्व के स्थलों की ओर आकर्षित किया जा रहा है।पर्यटन मंत्री का कहना है कि पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार सृजन की असीमित संभावनाएं है। सुविधाओं के विकास के कारण प्रदेश पर्यटकों विशेष रूप से तीर्थ यात्रियों की पहली पसंद बन रहा है। आगामी 1 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में अयोध्या में भव्य राम मंदिर का उद्घाटन होते ही अयोध्या सहित प्रदेश के तमाम धार्मिक केंद्रों पर भारी भीड़ उमड़ेगी यह अभी से तय है क्योंकि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह त्रिपुरा की एक जनसभा में जनता से अपील कर चुके हैं किआप लोग भव्य राम मंदिर के दर्शन करने के लिए अभी से टिकट बुक करवा लें।

क्यों जरूरी है पर्यावरण आधारित विकास की

ललित गर्ग

पर्यावरण एवं प्रकृति की दृष्टि से हम बहुत ही खतरनाक दौर में पहुंच गए हैं क्योंकि संभव है कि मानव की गतिविधियां ही इसके विनाश का कारण बन जाएं। आज के दौर में समस्या प्राकृतिक संसाधनों के नष्ट होने, पर्यावरण विनाश एवं प्राकृतिक आपदाओं की हैं। सरकार की नीतियां, उपेक्षाएं एवं विकास की अवधारणा ने ऐसी स्थितियों को खड़ा कर दिया है कि सरकार की बजाय न्यायालयों को बार-बार अपने डंडें का इस्तेमाल करना पड़ रहा है। जोशीमठ एवं चंडीगढ़ ऐसी ही स्थितियों के ताजे गवाह बने हैं। जोशीमठ की भूमि में पड़ी दरारे एक बड़ी त्रासदी के साथ वहां रहने वाले लोगों के जीवन-संकट का कारण बनी है। यह पर्यावरण एवं प्रकृति की उपेक्षा एवं तथाकथित अनियोजित विकास का परिणाम है, ऐसे ही अनियोजित विकास के कारण चंडीगढ़ जैसे महानगर किसी बड़े संकट को भविष्य में झेलने को विवश न हो, इसके लिये चंडीगढ़ में रिहाइशी इलाकों के स्वरूप में बदलाव को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसला दिया है, वह दूरगामी महत्त्व का है। यह न सिर्फ चंडीगढ़ को एक विरासत के रूप में बचाने की फिक्र है, बल्कि एक तरह से विकास के नाम पर चलने वाली उन गतिविधियों पर भी टिप्पणी है, जिसकी वजह से कोई शहर आम जनजीवन से लेकर पर्यावरण तक के लिहाज से बदइंतजामी का शिकार हो जाता है। आधुनिक राजसत्ताओं को पर्यावरण की दुश्मन माने तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आर्थिक एवं भौतिक तरक्की अक्सर प्रकृति एवं पर्यावरण के विनाश का कारण बनती रही है। हमें विकास की कार्ययोजनाएं पर्यावरणीय आधारित बनानी होगी।

आज देश ही नहीं, दुनिया में जोशीमठ में खड़े हो रहे व्यापक प्राकृतिक आपदा के संकट से जुड़े सवाल चर्चा का कारण बने हुए है। इस संकट के मद्देनजर वहां के लोगों की मुश्किलों को समझा जा सकता है। लेकिन स्थानीय स्तर पर जिस तरह का संकट पैदा हुआ है, उसमें प्राथमिक स्तर पर वहां की सरकार और संबंधित विभागों की जिम्मेदारी बनती है कि वे इसका तात्कालिक और दीर्घकालिक समाधान निकालें। सबसे बड़ी जरूरत है कि जोशीमठ की स्थितियों से सबक लेते हुए सरकार विकास के स्वरूप पर चिन्तन करें। वर्त्तमान में मानव की गतिविधियों से जितनी मिट्टी, पत्थर और रेत अपनी जगह से हटाई जाती है, वह सभी प्राकृतिक कारणों से हटने वाली कुल मात्रा से बहुत अधिक है। हरेक वर्ष जितने कंक्रीट का उत्पादन किया

जाता है उससे पूरी पृथ्वी पर 2 मिलीमीटर मोटी परत चढ़ाई जा सकती है। प्लास्टिक का उत्पादन कुछ वर्षों के भीतर ही इतना किया जा चुका है कि इसके अवशेष माउंट एवरेस्ट से लेकर मरिआना ट्रेंच-महासागरों में सबसे गहराई वाला क्षेत्र तक मिलने लगा है। विश्व के आधे पेड़ काटे जा चुके हैं, और बहुत बड़ी संख्या में प्रजातियां मानव की गतिविधियों के कारण विलुप्त हो रही हैं। वायुमंडल से प्राकृतिक कारणों से जितनी नाइट्रोजन हटती है, उससे अधिक औद्योगिक उत्पादन, विकास कार्यों और कृषि से हट जाती हैं। जोशीमठ में खड़ी हुई प्राकृतिक आपदा एकाएक नहीं हुई है, इस प्राकृतिक संकट को महसूस करते हुए वहां हो रहे भूस्खलन और धंसाव की समस्या को लेकर पिछले पचास वर्षों में कई अध्ययन कराए गए, लेकिन उनकी रिपोर्ट को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। वैज्ञानिकों ने हर बार आगाह किया, लेकिन इसके बाद भौगोलिक-तकनीकी अध्ययन कराने की ओर से आंखें फेर ली गई। असल में सरकारें न केवल जोशीमठ बल्कि सर्वत्र प्राकृतिक संकटों के समाधान की दिशा में कोई कदम उठाने की बजाय ऐसी ही उपेक्षा एवं उदासीनता बरती है। जोशीमठ एवं अन्य पहाड़ी क्षेत्रों के मसलों को छोटा मत मानिये। ये ऐसे मसले हैं जो आने वाले वक्त में पर्यावरण एवं प्रकृति के साथ-साथ जन-विनाश के साथ सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों को काफी हद तक प्रभावित करेंगे। जोशीमठ के आम जनता को यह हक है कि वह सबसे पहले अपने ऊपर सीधे असर करने वाले इन संकटों के लिये जागरूक होकर स्थानीय स्तर पर उन संस्थाओं से अपनी जिम्मेदारी निभाने की मांग करें, जिन्हें लोकतंत्र में इसी काम के लिए बनाया गया है। दरअसल, जोशीमठ त्रासदी ने लोकतंत्र के इन स्तंभों को लेकर जो सवाल खड़े किए हैं, उन्हें समझने की जरूरत है। विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, हालांकि हर विकास के अपने सकरात्मक और नकरात्मक नतीजे होते है। लेकिन जब पहाड़ी निवासियों के लाभ के लिए विकास किया जा रहा हो, तो पर्यावरण का ख्याल रखना भी उतना ही जरुरी है। अगर बिना पर्यावरण की परवाह किये विकास किया गया तो पर्यावरण पर इसके नकरात्मक प्रभाव उत्पन्न होंगे, जिससे यह उस स्थान पर रहने वाले निवासियों पर भी हानिकारक प्रभाव डालेगा। जनहानि की व्यापक संभावनाओं के साथ-साथ सम्पूर्ण विनाश की आशंकाएं रहती हैं। सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, यह काफी जरूरी है कि हम पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठायें। इस तरीके से यह सिर्फ ना वर्तमान के जनसंख्या के लिए लाभकारी होगा बल्कि भविष्य की आने वाले पीढ़ियां भी इसका लाभ ले सकेंगी और यही सतत एवं सकारात्मक विकास का मुख्य लक्ष्य है। इसलिए सतत विकास का पर्यावरणीय आधार अहम है। इसी बात की गहराई को समझते हुए चंड़ीगढ की विरासत एवं भविष्य के पर्यावरण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अपना दखल दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने चंडीगढ़ शहर के फेज एक में एकल आवासीय इकाइयों को मंजिल आधारित अपार्टमेंट में बदलने पर रोक लगा दी है। अब इस इलाके में एक समान अधिकतम ऊंचाई के साथ मंजिलों की संख्या तीन तक सीमित रहेगी। चंडीगढ़ में जिस स्वरूप में इमारतों का निर्माण कराया, वे आमतौर पर एक अलग संदेश देती हैं। मगर अफसोस की बात यह है कि वक्त के साथ इन इमारतों में भी सुविधा के मुताबिक कई तरह के बदलाव किए गए

गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने चंडीगढ़ शहर के फेज एक में एकल आवासीय इकाइयों को मंजिल आधारित अपार्टमेंट में बदलने पर रोक लगा दी है। अब इस इलाके में एक समान अधिकतम ऊंचाई के साथ मंजिलों की संख्या तीन तक सीमित रहेगी। चंडीगढ़ में जिस स्वरूप में इमारतों का निर्माण कराया, वे आमतौर पर एक अलग संदेश देती हैं। मगर अफसोस की बात यह है कि वक्त के साथ इन इमारतों में भी सुविधा के मुताबिक कई तरह के बदलाव किए गए। जाहिर है, इस तरह के बदलाव केवल सीमित असर नहीं डाल रहे थे, बल्कि विस्तृत होकर शहर के ढांचे एवं पर्यावरण पर भी प्रभाव डालने वाले थे। इसी क्रम में सन 2001 में एक नियम के तहत चंडीगढ़ में आवासीय भूखंडों को अपार्टमेंट के रूप में निर्माण या उपयोग करने की इजाजत दे दी गई थी। अन्य महानगरों में भी पिछले कुछ दशकों से शहरों में विकास के नाम पर जिस तरह की बेलगाम गतिविधियां चल रही हैं, उसके मद्देनजर इस फैसले को दरअसल देश के पहले नियोजित शहर चंडीगढ़ की विरासत को बचाने के साथ अन्य महानगरों के लिये जागरूक हो जाने की दिशा में एक बड़ा कदम कहा जा सकता है। अदालत ने भी इसकी अहमियत का जिक्र करते हुए कहा कि यह रोक चंडीगढ़ की विरासत की स्थिति के साथ-साथ स्थिरता के मद्देनजर जरूरी है; सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच एक उचित संतुलन बनाने की भी आवश्यकता है। सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच उचित संतुलन बनाने के प्रयास किये होते तो जोशीमठ का संकट खड़ा नहीं होता। उपचारात्मक कार्य नहीं हो पाए और आज स्थिति सबके सामने है। पुराने भूस्खलन क्षेत्र में बसे जोशीमठ में पूर्व में अलकनंदा नदी की बाढ़ से भू-कटाव हुआ था। साथ ही घरों में दरारें भी पड़ी थीं। वर्ष 1976 से लेकर 2022 तक की अनेक अध्ययनों की संस्तुतियों में जोशीमठ क्षेत्र का भूगर्भीय सर्वेक्षण, भूमि की पकड़, धारण क्षमता, पानी के रिसाव के कारण समेत कई अध्ययन कराने की जरूरत बताई गई। वैज्ञानिकों के अनुसार जोशीमठ सिस्मिक जोन पांच में आता है और भूकंप व भूस्खलन की दृष्टि से काफी संवेदनशील स्थान है। इन तथ्यों को लेकर राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी) की तपोवन विष्णुगढ़ जल विद्युत परियोजना और हेलंग बाईपास का निर्माण कार्य को लेकर सवाल उठते रहे। अब जबकि जोशीमठ में पानी सिर से ऊपर बहने लगा है और हाल में वैज्ञानिकों के दल ने दोबारा सर्वेक्षण कर अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपी है, तब जाकर सरकार की नींद टूटी है। सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में इस संकट को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग करते हुए कहा गया है कि मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र की कीमत पर कोई भी विकास नहीं होना चाहिए। जिसमें पर्यावरण संरक्षण के लिए विशिष्ट प्रावधान है। पर्यावरण से संबंधित समस्याओं और मसलों पर भारत सरकार ने अनेक प्रयत्न एवं नीतियां लागू करते हुए जोखिमों को कम करने एवं सामने आने वाले संकटों के समाधान के लिये तैयारी की है, लेकिन इन तैयारियों की नाव में छिद्र होना, संकट को कम करने की बजाय बड़ा कर रहा है।

कुदरत की पीर, जोशीमठ की तस्वीर

-डॉ सत्यवान सौरभ

जोशीमठ में उभरता संकट विकासात्मक परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने के दौरान नाजुक हिमालयी पर्वतीय प्रणाली की विशेष और विशिष्ट विशेषताओं और विशिष्टताओं का सम्मान करने में विफलता की बात करता है। उत्तराखंड के इस शहर में 600 से अधिक घरों में कथित तौर पर दरारें आ गई हैं, जिससे कम से कम 3,000 लोगों की जान खतरे में है। उत्तराखंड के जोशीमठ में जमीन का धंसना मुख्य रूप से राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी) की तपोवन विष्णुगढ़ जल विद्युत परियोजना के कारण है और यह एक बहुत ही गंभीर चेतावनी है कि लोग पर्यावरण के साथ इस हद तक खिलवाड़ कर रहे हैं कि पुरानी स्थिति को फिर से बहाल कर पाना मुश्किल होगा। उन्होंने कहा कि बिना किसी योजना के बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे का विकास हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति और भी कमजोर बना रहा है। जोशीमठ की स्थिति यह एक बहुत ही गंभीर चेतावनी है कि लोग पर्यावरण के साथ इस हद तक खिलवाड़ कर रहे हैं कि पुरानी स्थिति को फिर से बहाल कर पाना मुश्किल होगा। जोशीमठ समस्या के दो पहलू हैं। पहला है बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे का विकास, जो हिमालय जैसे बहुत ही नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र में हो रहा है और यह बिना किसी योजना प्रक्रिया के हो रहा है, जहां हम पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम हैं। दूसरा पहलू, जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख कारक है। भारत के कुछ पहाड़ी राज्यों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दिख रहे हैं। उदाहरण के लिए, 2021 और 2022 उत्तराखंड के लिए आपदा के वर्ष रहे हैं।हमें पहले यह समझना होगा कि ये क्षेत्र बहुत नाजुक हैं और पारिस्थितिकी तंत्र में छोटे परिवर्तन या गड़बड़ी से गंभीर आपदाएं आएंगी, जो हम जोशीमठ में देख रहे हैं।

सरकार ने 2013 की केदारनाथ आपदा और 2021 में ऋषि गंगा में आई बाढ़ से कुछ भी नहीं सीखा है। हिमालय एक बहुत ही नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र है। उत्तराखंड के ज्यादातर हिस्से या तो भूकंपीय क्षेत्र पांच या चार में स्थित हैं, जहां भूकंप का जोखिम अधिक है। हमें कुछ मजबूत नियमों को बनाने और उनके समय पर कार्यान्वयन की आवश्यकता है। हम विकास के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन आपदाओं की कीमत पर ऐसा करना ठीक नहीं हैं। जोशीमठ में मौजूदा संकट मुख्य रूप से मानवजनित गतिविधियों के कारण है। जनसंख्या में कई गुना वृद्धि हुई है। बुनियादी ढांचे का विकास अनियंत्रित ढंग से हो रहा है। पनबिजली परियोजनाओं के लिए सुरंगों का निर्माण विस्फोट के माध्यम से किया जा रहा है, जिससे भूकंप के झटके आते हैं, जमीन धंस रही है और दरारें आ रही हैं। जलविद्युत का विकास महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश को ऊर्जा का एक नवीकरणीय स्रोत प्रदान करता है और राज्य के लिए एक राजस्व स्रोत है। हालांकि, पन बिजली परियोजनाओं की संख्या और खराब निर्माण के कारण बाढ़ का प्रभाव और बढ़ गया है। उदाहरण के लिए- उत्तराखंड के चमोली जिले में ऋषि गंगा परियोजना। पर्वतों का अपना स्वयं का सूक्ष्म जलवायु होता है। इसके अनोखे जीवों और वनस्पतियों की प्रजनन अवधि कम होती है और ये अशांति के प्रति संवेदनशील होते हैं। ऐसे में, अस्थिर और अवैज्ञानिक पर्यटन, होटल और लॉज की अनियंत्रित तरीके से बढ़ जाना, इस प्राकृतिक संतुलन को पहले से ही प्रभावित कर रहा है। अस्थिर आर्थिक और जनसंख्या वृद्धि के साथ वनों की कटाई, पशुओं द्वारा अत्यधिक चराई, और सीमांत मिट्टी की खेती के कारण मृदा अपरदन, भूस्खलन, और आवास और आनुवंशिक विविधता के तेजी से नुकसान जैसे कई कारकों के कारण पहाड़ों में पर्यावरणीय गिरावट की ओर जाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण बर्फ पिघलने से नई हिमनद झीलें बनती हैं। इससे मौजूदा वाले की मात्रा भी बढ़ जाती है। इससे हिमनद-झील के फटने से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। हिमालय में 8,800 हिमनद झीलों में से 200 से अधिक को खतरनाक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हिमालय के शहरों का विकास हो रहा है और मैदानी शहरों के समान जड़ें दिखने लगी हैं। कचरा और प्लास्टिक का जमाव, अनुपचारित सीवेज, अनियोजित शहरी विकास और स्थानीय वायु प्रदूषण नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

हिमालयी क्षेत्र में कस्बों के निर्माण और डिजाइन को स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए और इसमें भूकंपीय संवेदनशीलता और सुंदरता भी शामिल होना चाहिए। उदाहरण के लिए, 1976 की मिश्रा समिति की रिपोर्ट ने स्पष्ट रूप से बताया कि जोशीमठ एक पुराने भूस्खलन क्षेत्र पर स्थित है और यदि विकास निरंतर अनियंत्रित तरीके से जारी रहा, तो यह समाप्त हो सकता है।

वन आधारित अर्थव्यवस्था का निमार्णः हिमालयी क्षेत्र के खड़े जंगल, जैव विविधता के एक महत्वपूर्ण भंडार हैं, जो मिट्टी के कटाव और बढ़ती बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करते हैं। क्षेत्र के स्थायी जंगलों की इन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए "भुगतान" करने की रणनीति विकसित करना और यह सुनिश्चित करना कि आय स्थानीय समुदायों के साथ साझा की जाती है, आगे बढ़ने का एक तरीका होगा। ध्यातव्य है कि 12वें और 13वें वित्त आयोग ने अपनी रिपोर्ट में खड़े जंगलों के लिए राज्यों को मुआवजा देने की अवधारणा को शामिल किया है। जलविद्युत परियोजनाओं में ऊर्जा की जरूरतों और पारिस्थितिकीय संतुलन को ध्यान रखना होगा, इस क्षेत्र में जल आधारित ऊर्जा संबंधी नीति का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। ऐसी नीति में अनिवार्य पारिस्थितिक प्रवाह प्रावधान (कमजोर मौसम में कम से कम 50%), एक दूरी मानदंड (5 किमी) निर्धारित किया जाना चाहिए, साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए, कठोर प्रवर्तन उपाय और दंड लागू होने चाहिए, जिससे परियोजना के निर्माण से पहाड़ की स्थिरता या स्थानीय जल प्रणालियों को नुकसान न हो। स्थानीय जैविक कृषि को बढ़ावा देना होगा ताकि प्रत्येक हिमालयी राज्य ने अपने क्षेत्र के अनूठे उत्पादों को अपनी आर्थिक ताकत के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया है। लेकिन इन राज्यों को प्रमाणीकरण में कठिनाइयों और यहां तक कि वन कानूनों जैसी विभिन्न बाधाओं के कारण अपनी अनूठी ताकत का उपयोग करने में कठिनाई हो रही है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पहाड़ी क्षेत्रों में सतत शहरीकरण को देखते हुए पर्वतीय शहरों में नगरपालिका उपनियमों को उन क्षेत्रों में निर्माण गतिविधि पर प्रतिबंध लगाने के लिए प्रावधान करना चाहिए, जो खतरनाक क्षेत्रों या कस्बों की नदियों, झरनों और वाटरशेड के करीब के क्षेत्रों में आते हैं। यद्यपि कई मामलों में ये प्रावधान उपनियमों में मौजूद हैं, लेकिन इन्हें कड़ाई से लागू नहीं किया गया है।

यह रेवड़ी कल्चर कहीं देश को बर्बाद न कर दे

बलदेव राज भारतीय

2024 का मैदान सजने लगा है। एक एक करके सभी धुरंधर अपना अपना लंगोट कसने लगे हैं। जैसे एक खिलाड़ी या टीम खेल के मैदान में उतरने से पहले मैदान का चक्कर लगाते हैं, उसी प्रकार 2024 के खिलाड़ियों द्वारा मैदान का चक्कर लगाना शुरू हो गया है।इस चक्कर के दौरान जनता के बीच अपनी उपस्थिति को दर्ज करवाने के लिए कई प्रकार की घोषणाएं की जाने लगी हैं। हम यह फ्री देंगे, हम वो फ्री देंगे। तुम देने वाले कौन होते हो भाई? सब कुछ कहां से दोगे या कहां से बांटोगे? क्या तुम्हें मालूम भी है कि तुम क्या कर रहे हो? आखिर यह रास्ता किधर जाता है भाई? यहां सब कुछ बांटा जा रहा है। नेता लोग देश के लोगों को बांटने से लेकर देश की संपदा तक को बांटने में लगे हैं। अपनी जुगत भिड़ाने में लगे नेता वोट की खातिर देश को बेचने में भी गुरेज नहीं करते। देश में मुफ्त की रेवड़ी बांटने वाले ये नेता लोग आखिर जनता को किस रास्ते पर डालने जा रहे हैं? एक नेता जी फ्री बिजली पानी की घोषणा करते हैं तो दूसरे नेता जी बेरोजगारों को छह हजार रुपए महीने बेरोजगारी भत्ता देने का वादा कर देते हैं। एक साल में किसानों को छह हजार दे रहे हैं तो दूसरे ने महीने में छह हजार का वादा कर रहे है। एक अढ़ाई हजार रुपए बुढ़ापा पेंशन दे रहा है तो दूसरा पांच हजार रुपए बुढ़ापा पेंशन का वादा कर रहा है। एक मुफ्त अनाज दे रहा है तो दूसरा मुफ्त अनाज की मात्रा बढ़ाने और अन्य मद बढ़ाने का भी वादा कर रहा है। जिस घर में बिजली, पानी, राशन सरकार मुफ्त में दे दे। बेरोजगार को छह हजार भत्ता दे दे, किसान पिता को छह हजार महीना किसानी भत्ता दे दे। साठ साल से ऊपर के बुजुर्ग को पांच हजार पेंशन दे दे। उनकी साल में राशन पानी से लेकर बिजली तक सारी जिम्मेदारियां सरकार अपने आप उठा लेती है।

उन्हें काम करने की आवश्यकता ही क्या रहेगी? जब कोई काम होगा नहीं तो फिर उत्पादन कैसे संभव होगा? उत्पादन नहीं होगा तोड्ड. वस्तुओं की आपूर्ति कैसे हो सकेगी? जब वस्तुओं की पूर्ति घटेगी और मांग बढ़ेगी तो महंगाई बढ़ना अवश्यंभावी है। इसके बावजूद भी लोग काम करने के लिए तैयार नहीं होंगे। क्योंकि उन्हें नेता लोग मुफ्त के खाने की आदत डाल चुके होंगे। फिर कोई नेता उनकी पेंशन, उनका बेरोजगारी भत्ता, उनके राशन पानी से लेकर दैनिक खर्च तक उठाने को तैयार हो जाएगा। यानि देश में अकर्मण्य लोगों की एक ऐसी फौज खड़ी हो जायेगी जो देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने में सहायक सिद्ध होगी। दूसरी बात यह समझ नहीं आती कि नेता लोग इतने बड़े बड़े वादे किस आधार पर करते हैं। क्या उनकी स्वयं की आय इतनी है जिससे वे इन वादों को पूरा कर सकें। यदि नहीं तो फिर वो किस आधार पर इतने बड़े बड़े वादे करते हैं? क्या जनता के टैक्स से लिया गया पैसा इस प्रकार लुटाया जाएगा? यदि कोई नेता इस प्रकार का वादा करता है तो उसे वह वादा अपनी आय से पूरा करना चाहिए न कि सरकारी खजाने से। सरकारी खजाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सरकारी कर्मचारियों की पेंशन तो सरकार को बोझ लगती है परंतु बिना कोई काम लिए मुफ्त की रेवड़ियां बांटना खजाने पर किसी प्रकार का बोझ नहीं डालता। इस प्रकार लोगों को आलसी या कामचोर बनाकर आखिर ये नेता लोग क्या जताना चाहते हैं कि ये आम जनता का भला चाहने वाले दीनबंधु, दीनानाथ, दीनदयाल हैं। लोगों के द्वारा लिए गए ऋण को माफ कर देना, लोगों को बैंकों से लिए गए ऋण को न भरने के लिए प्रोत्साहित करता है। बिजली बिलों की माफी भी लोगों को बिजली बिलों को न भरने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये मुफ्त की योजनाएं एक दिन देश को आर्थिक संकट और फिर से पराधीनता की ओर ले जाएंगी। तब कौन जिम्मेदार होगा देश की बरबादी का? ये नेता लोग तो तब भी देश की बरबादी का कारण एक दूसरे पर फेंकते नजर आएंगे।कुछ लोग जो ऐसी योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं वे दो रुपए किलो आटा लेकर दुकानदारों को दस या पंद्रह रुपए किलो के हिसाब से बेच देते हैं। दुकानदार भी इस प्रकार के ऑफर को हाथों हाथ लेते हैं क्योंकि दुकानदार उस आटे को पच्चीस रुपए प्रति किलोग्राम बेच कर उस पर मोटा मुनाफा कमा लेते हैं। परंतु वह आटा वहां तक तब भी नहीं पहुंच पाता जिन्हें वास्तव में उसकी सही आवश्यकता है।

आज सरकार जितनी योजनाएं चला रही है, यदि पूरी ईमानदारी के साथ उन योजनाओं को लागू कर दिया जाए तो मतलब ही नहीं देश में कोई भूखा सो जाए।

अभी हाल ही में इन घोषणाओं के बीच मैंने नहीं सुना कि किसी ने घोषणा की हो कि वे सब कुछ फ्री देने की योजनाओं को बंद कर उन्हें इस काबिल बनाएंगे कि देश का कोई भी नागरिक रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत सेवाओं से वंचित न हो। हर हाथ को रोजगार दिया जायेगा। दैनिक अनिवार्य वस्तुओं को सस्ते दामों पर उपलब्ध करवाया जायेगा। हर प्रकार की कालाबाजारी रोकी जायेगी। भ्रष्टाचार को कम किया जाएगा। कोई भी दल यदि इस प्रकार की घोषणा कर भी देता है तो वह यह नहीं बताता कि वह किस प्रकार इन घोषणाओं को कार्यान्वित करेगा। आसान लगता है सभी दलों को फ्री की घोषणाएं कर वोटों को अपनी ओर खींचना। लेकिन सब कुछ फ्री करने वाले इन दलों के पास अपनी इन फ्री की घोषणाओं के लिए बजट कहां से आयेगा, शायद इस बात को तो ये सोचते भी नहीं। क्योंकि वोटो से आगे इन कुछ दिखाई भी नहीं देता।

हाय! यह कैसा जमाना है?

डॉ. सुरेश कुमार

वे पहुँचे हुए नेता थे। इतना पहुँचे हुए कि एक फोन करने पर सारे के सारे अधिकारी हाथ बाँधकर उनके आगे खड़े हो जाते थे। दुकानदार उनके फोन करने से पहले ही उनकी गतिविधि को भांपकर जरूरी सामान उनके घर भिजवा देते थे। उनकी आँखें, भौंहें, नाक, मुख सबकी संरचना कुछ इस तरह से बन गई थी उन्हें कुछ कहने या करने की जरूरत नहीं थी। उन्हें देखते ही सामने वाले की हालत टाँय-टाँय फिस्स हो जाती थी। उनका व्यक्तित्व गरीब की थाली से रोटी-नून तक छिनने में नहीं हिचकिचाता था। इन्हीं सारे गुणों को देखते हुए एक पहुँचे हुए दल ने उन्हें टिकट देने में अपनी भलाई समझा। जैसे ही पहुँचे हुए नेता को टिकट मिलने की घोषणा हुई, उनका खौफ लोगों पर सातवें आसमान पर सिर चढ़कर बोलने लगा। लोग ऊपर से प्यार दिखाने के बहाने उनके नरमुंडों के कटआउट पर दूध की गंगा बहाते कभी भोज कार्यक्रम आयोजित करते। चारों ओर धूम मची थी। किंतु यही लोग भीतर-भीतर अपने भविष्य की कल्पना कर सहम जाते। एक दिन नेता अपने चमचों के साथ एक स्कूल पहुँचे। वहाँ जाकर जोरदार भाषण झाड़ते हुए कहा झ्र बच्चों हमें बड़ा का आदर करना चाहिए। उनका कहा मानना चाहिए। उनके साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से साक्षात भगवान की सेवा करने का पुण्य मिलता है। बच्चों ने जोरदार तालियाँ बजाई। स्कूल प्रबंधन ने उनका मान-सम्मान किया। सभी अध्यापक और बच्चे हाथ जोड़कर उनके आगे ऐसे खड़े हो गए मानो साक्षात प्रभु धरती पर उतर आए हों।

स्कूल संचालक को छह लाख रुपये जमा करने के उप श्रमायुक्त ने दिये आदेश

स्कूल संचालक की खिसकी है हवा, सांसद के लगा रहा तेल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय के दबंग किस्म के एक स्कूल संचालक के खिलाफ उप श्रमायुक्त/उपकर निर्धारण एवं उपकर संग्राहक अधिकारी चित्रकूटधाम मंडल बांदा एके सिंह ने भेजे नोटिस में कहा है कि भवन एवं अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण उपकर अधिनियम 1996 के तहत पूरे भारत में भवन निर्माण में 26 मार्च 1998 से धारा तीन के तहत भारत सरकार श्रम मंत्रालय ने परियोजना लागत का एक प्रतिशत धनराशि उपकर के रुप में जमा करने का प्राविधान किया है।

गुरुवार के पहले भेजी नोटिस में उपकर संग्राहक अधिकारी एके सिंह ने जिला मुख्यालय के स्कूल संचालक से कहा है कि उन्होंने स्कूल भवन का निर्माण नियोजन एवं सेवा शर्तों के अधिनियम 1996 के तहत नहीं कराया है। न अभी तक भवन एवं निर्माण अधिनियम 1996 की धारा 46(1) व सपठित नियम 27(3) के तहत भवन निर्माण शुरू करने की सूचना नही दी है। ये धारा 48 के तहत दंडनीय अपराध है। इसके तहत अधिकतम तीन माह का कारावास एवं दो हजार के जुमार्ने का प्राविधान है। उन्होंने स्कूल संचालक से कहा कि विकास प्राधिकरण से प्राप्त मानचित्र अनुमोदन प्रमाण पत्र निर्माण अवधि के वित्तीय वर्षों आडिट बैलेंस सीट, निर्माण अवधि के वित्तीय वर्षों की आयकर रिटर्न एवं आयकर विभाग में जमा किये गये विवरण की प्राप्त रसीद निर्माण लागत आदि के साथ उपस्थित होने का निर्देश दिया था। अभी तक सुनवाई की तिथियों में हाजिर नहीं हुए। न ही वांछित अभिलेख पेश किये हैं। इस बाबत सेवा नियोजक प्रतिष्ठान श्रम प्रवर्तन अधिकारी चित्रकूट ने सर्वे कर प्रतिष्ठान की लागत छह करोड रुपये आंकी है। निर्माण अवधि के अनुसार छह करोड रुपये का व्यय होने का अनुमान है।

उपकर निर्धारण एवं संग्राहक अधिकारी/उप श्रमायुक्त एके सिंह ने नोटिस में कहा है कि छह करोड की धनराशि का एक प्रतिशत उपकर की धनराशि नियोजक को छह लाख रुपये जमा करना था। अभी तक कोई धनराशि नहीं जमा की गई। उपकर की धनराशि के रुप में छह लाख रुपये जमा करने के आदेश पारित किये जाते हैं। 15 दिन के भीतर उप्र भवन एवं अन्य सन्निर्माण कल्याण बोर्ड के पक्ष में बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में जमा करना सुनिश्चित करें। अन्यथा की दशा में भूराजस्व की भांति वसूली को विधिक कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने कहा है कि प्रतिष्ठान के कराये कार्य के सापेक्ष धनराशि जमा न करने पर अधिनियम की धारा आठ के तहत दो फीसदी ब्याज प्रतिमाह की दर से तथा धारा नौ के अधीन आदेशित धनराशि के बराबर दंड भी भोगना होगा। इस नोटिस के बाद स्कूल संचालक की हवा खिसकी हुई है। स्कूल संचालक ने इस कार्यवाही से बचने को सांसद आरके सिंह पटेल के तेल लगाना शुरू कर दिया है। इस कार्यवाही से स्कूल संचालक का बच पाना सम्भव नहीं प्रतीत हो रहा है। स्कूल संचालक के खिलाफ अन्य और भी कार्यवाहियां जारी हैं।

फटाफट खबरें

ललितपुर ने सुभाष क्लब को हरा सात विकेट से जीता मैच

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जन्म स्मृति में अखिल भारतीय क्रिकेट टूनार्मेंट 20 वर्ष मैं ग्रुप डी का दूसरा लीग मुकाबला सुभाष स्पोर्टिंग क्लब चित्रकूट बनाम ललितपुर के बीच हुआ। पहले टॉस जीतकर सुभाष स्पोर्टिंग क्लब ने निर्धारित 25 ओवर में मात्र 16 ओवर खेलकर 73 रन बनाए। सुभाष स्पोर्टिंग क्लब के बल्लेबाज करण पटेल ने 14 गेंदों पर 19 रन बनाए। अभय ने 22 गेंदों पर 10 रन बनाए। ललितपुर की अच्छी गेंदबाजी अभिषेक ने दो बाल में तीन रन खर्च कर-के दो विकेट लिए।

गुरुवार को हुए मैच में पीयूष ने चार ओवर में 11 रन देकर दो विकेट लिए। अमितेश ने चार ओवर में तीन रन खर्च करके दो विकेट लिए। अभिनय ने चार ओवर में पांच रन खर्च करके दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ललितपुर ने अच्छी बल्लेबाजी करते हुए सात विकटो से मैच जीत लिया। सुभाष क्लब के गेंदबाज विजय भारद्वाज ने चार ओवर में 14 रन देकर दो विकेट लिए और इरफान ने दो ओवर में 11 देकर एक विकेट लिए। मैच के अंपायर प्रेम नारायण, हैदर जान, स्कोरर दीपक मिश्रा, कॉमेंटेटर किशन बरार, नागराज, रामचंद्र कुरील, सौरभ नाहर, रानू, अभय, सिराज आदि टूनार्मेंट सफल बनाने में रहे। मीडिया मैनेजर नागेंद्र मिश्रा ने बताया कि कल का मैच चैथा क्वार्टर फाइनल मुकाबला बनारस बनाम ललितपुर के बीच खेला जाएगा।

विवेकानन्द यात्रा को सौंपी जिम्मेदारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। स्वामी विवेकानन्द जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस पर कामतानाथ प्रमुख द्वार के सत्संग भवन में हुई विचार गोष्ठी में संत मदनगोपाल दास महाराज की अध्यक्षता में जयंती मनाई। उन्होंने विवेकानन्द के चित्र पर माल्यार्पण कर गोष्ठी का शुभारम्भ किया।

गुरुवार को हुई गोष्ठी में 19-20 जनवरी को लखनऊ से आने वाली विवेकानन्द यात्रा के स्वागत एवं प्रबंध की जिम्मेदारी सौंपी गई। यात्रा स्वागत प्रमुख डॉ सचिन उपाध्याय, यात्रा व्यवस्था प्रमुख शानू गुप्ता, योग प्राणायाम प्रमुख ओमराज तिवारी, यात्रा व्यवस्था संयोजक अर्चन द्विवेदी, यात्रा स्वागत व्यवस्था अजीत सिंह को जिम्मेदारी सौंपी गई।

मदनगोपाल दास महाराज ने कहा कि 12 जनवरी 1863 में कलकत्ता में जन्मे युग प्रवर्तक स्वामी विवेकानन्द ने ओजस्वी विचारों से युवाओं को प्रेरणा दी है। युवाओं का भविष्य ऊंचाइयों तक पहुंचे। ऐसे विचारों को लेकर विवेकानन्द ने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। इस मौके पर सर्वेश त्रिपाठी, अजय मिश्रा, उर्वशी, अंजू वर्मा, देवांश व गौरव मौजूद रहे।

दिव्यांग विवि के ललित कला विभाग के छात्रों ने मारी बाजी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एकेएस यूथ फेस्टिवल सतना में जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय से ललित कला विभाग के छात्र-छात्राओं ने फाइन आर्ट विधा में हिस्सा लिया। छात्र-छात्राओं को पुरस्कार एवं मैडल दिये गये। विवि के कुलसचिव आरपी मिश्र एवं कुलपति प्रो योगेशचन्द्र दुबे ने खुशी जताई है। गुरुवार को कार्यक्रम समन्वयक डॉ गोपाल मिश्रा, डॉ सुनीता श्रीवास्तव, डॉ संध्या पाण्डेय को छात्रों के साथ कुलपति प्रो योगेशचन्द्र दुबे ने बधाई दी। उन्होंने कहा कि सामान्य बच्चों के साथ विभिन्न हालातों के बाद भी उनके विद्यार्थियों ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। लगातार समाज में हो रही गतिविधियों एवं कलाओं में प्रतिस्पर्धा का प्रदर्शन छात्र करते रहते हैं। उन्होंने विवि के उज्जवल भविष्य की कामना की। भविष्य में आगे होने वाली गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि छात्र-छात्रा सामाजिक गतिविधियों से जुडकर समाज के अभिन्न अंग बन सकें।

प्रेमी के विरुद्ध थाने में शिकायत करने पर प्रेमिका की निर्मम हत्या

मऊ। हलधरपुर थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर बरहिया ग्राम पंचायत के मुहवां विजयगढ़ में एक विवाहिता की निर्मम हत्या कर दी गई। घटना गुरुवार की सायं लगभग 6 बजे की है।

मृतका खुशबू (30) पत्नी रामानंद मुहवां विजयगढ़ की निवासी है और उसका पति पिछले 1 वर्ष से बाहर रहता है। खुशबू की गांव के ही एक युवक से प्रेम-प्रसंग पिछले 3 वर्ष से चल रहा था। गुरुवार की प्रातः प्रेमी-प्रेमिका के बीच किसी बात पर विवाद हो गया।

भिनकी पुर परमार्थ धाम हनुमान मंदिर परिसर में मनाई गई स्वामी विवेकानंद जयंती

अखंड भारत संदेश

सफीपुर उन्नाव । बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाई गई स्वामी विवेकानंद जयंती,परमार्थ धाम भिनकी पुर हनुमान मंदिर परिसर में स्थित रामस्वरूप ब्रह्मचारी के आश्रम पर स्वामी विवेकानंद का जन्म दिवस बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। उपस्थित लोगों सहित ब्रह्मचारी जी ने महापुरुष स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा भाव से सादर नमन किया। तत्पश्चात विवेकानंद जी के जीवन चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। तथा उनके द्वारा किए गए कई महत्वपूर्ण कार्यों अनेक बृत्तांतो के बारे में लोगों को बताया गया। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 18 सौ 63 को एक साधारण परिवार में हुआ था। उनकी बुद्धि बाल्यकाल से ही

बहुत तीव्र थी। तथा परमात्मा को पाने कि उनके मन में प्रबल अभिलाषा थी। वह सरल स्वभाव अत्यंत परोपकारी व्यक्ति थे। स्वयं को भूखा रखकर दूसरे को भोजन कराना पसंद करते थे। विद्वान बुद्धि जीवियों का कहना है कि स्वामी विवेकानंद को माता काली ने साक्षात दर्शन दिए थे। और उन्हें मां काली के चरणों की सिद्धि प्राप्त थी। परमार्थ धाम में आयोजित विवेकानंद जयंती कार्यक्रम के दौरान प्रभु पद प्रेम अटल अनुरागी- स्वामी रामस्वरूप ब्रह्मचारी, उदयवीर सिंह, विशाल शुक्ला, अनूप तिवारी, राजेश सिंह, गंगाचरण आदि लोग उपस्थित रहे।

विवेकानन्द के आदर्शों को जीवन में उतारें युवा: डॉ चतुर्वेदी

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। महामति प्राणनाथ महाविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द जयंती/राष्ट्रीय युवा दिवस/सडक सुरक्षा माह पर प्राचार्य डॉ संतोष कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द युवाओं के प्रेरणा सूत्र रहे हैं। उनके आदर्शों एवं संदेशों को युवाओं को जीवन में उतारना चाहिए।

गुरुवार को महामति प्राणनाथ महाविद्यालय में विवेकानन्द की जयंती पर प्राचार्य डॉ संतोष कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि भारत युवाओं का देश है। राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका अहम होती है। इस मकसद से स्वामी विवेकानन्द के विचार प्रासंगिक हैं। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ एस कुरील ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन एवं चरित्र पर विभिन्न

बिन्दुओं में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विवेकानन्द का मूलमंत्र था कि उठो जागो, तब तक न रुको जब तक अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर लो। जिस कार्य को अपने हाथ में लो, उस पर पूरी शक्ति लगा दो। निश्चित रुप से लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होगे। मानवता की सेवा से बडा दुनिया में कोई धर्म नहीं है। उन्होंने ये पाठ पढाते हुए कहा था कि पहले तुम अपने पर विश्वास करो, तब दूसरे पर विश्वास करोगे।

डॉ एस कुरील ने बताया कि विवेकानन्द गरीबों, कमजोरों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाकर राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए बडी पृष्ठभूमि तैयार करने का कार्य किया था, जो आगे चलकर देश की आजादी में मील का पत्थर साबित हुआ। हिन्दी के प्राध्यापक पूरन सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने धर्म व आध्यात्म की स्पष्ट परिभाषा देने का कार्य किया है। इसी क्रम में सरस्वती वन्दना अंजलि त्रिपाठी, रानू त्रिपाठी, सीमा देवी, स्वागत गीत रविता, राष्ट्र गीत दुर्गेश त्रिपाठी, राष्ट्रीय कविता मुस्कान चतुर्वेदी, भाषण पूर्व छात्र प्रद्युम्न सिंह, वर्तिका गुप्ता, रेनू वाजपेयी, काजल द्विवेदी, अर्पिता वाजपेयी, मानसी मिश्रा, हेमा मिश्रा, साक्षी द्विवेदी, प्रियांशी तिवारी, प्रतिभा शुक्ला, राजन कुमार पाण्डेय, हिमांशी पाण्डेय, अंकुर शुक्ला, आम्रपाली त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्रायें मौजूद रहे। संचालन डॉ एस कुरील ने किया।

चित्रकूट में मेडिकल कालेज के निर्माण आदि का सांसद ने सीएम के सामने रखा प्रस्ताव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सांसद एवं विधायकों के साथ प्रदेश हित में संचालित विकास योजनाओं की जारी श्रृंखला में सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चित्रकूटधाम मंडल की समीक्षा में क्षेत्रीय जनाकांक्षाओं पर जोर दिया।

गुरुवार को हुई समीक्षा बैठक में सांसद आरके सिंह पटेल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिये प्रस्ताव में कहा कि कर्वी-बूढा राजापुर मार्ग का चैडीकरण, पटेल तिराहे से देवांगना रोड को फोरलेन मार्ग बनायें। राजापुर-कमासिक मार्ग का चैडीकरण कर दो सौ सैय्या के निर्मित खोह अस्पताल को चालू करायें। चित्रकूट में मेडिकल कालेज बनाया जाये। बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे को भरतकूप से बढाकर राम-वन-गमन मार्ग से जोडकर खोह तक राष्ट्रीय राजमार्ग 35 पर बाईपास निर्माण एवं

भरतकूप हवाई पट्टी तक फोरलेन मार्ग का निर्माण किया जाये।

उन्होंने मुख्यमंत्री को दिये प्रस्ताव में कहा कि खोह रेलवे क्रासिंग पर ओवरब्रिज एवं अतर्रा बिसंडा मार्ग पर अतर्रा में ओवरब्रिज का निर्माण कराया जाये। कालिंजर से बांदा, चिल्ला, बिंदकी से चैडगरा तक फोरलेन निर्माण कार्य कराया जाये। मानिकपुर के चमरौंहा के पास मऊ गुरदरी के पास बरदहा नदी पर पुल का निर्माण, चिल्लीमल के पास यमुना नदी पुल निर्माण कर्वी के कसहाई कर्वी-बूढा रोड पर रेलवे लाइन पर फ्लाई ओवर का निर्माण, बांदा में कताई मिल के स्थान पर नई औद्योगिक इकाई की स्थापना, मानिकपुर के पाठा में एक नई पीएसी बटालियन की नई कम्पनी की स्थापना, मानिकपुर के पाठा में सोलर प्लांट लगाकर बिजली उत्पादन कराया जाये। बुन्देलखण्ड विकास निधि, राज्यांश से चित्रकूट एवं बांदा में नई सडकों के ग्रामीण मार्गों का निर्माण, राजापुर में तुलसीदास के मन्दिर तक पहुंच मार्ग एवं यमुना में कटाव दीवाल निर्माण मंजूर किया जाये। अतर्रा एवं बांदा में बाईपास निर्माण के साथ बांदा में राणा प्रताप की मूर्ति का अनावरण किया जाये। बैठक में बांदा विधायक प्रकाश द्विवेदी, मानिकपुर विधायक अविनाशचन्द्र द्विवेदी, नरैनी विधायक श्रीमती ओममणि वर्मा आदि मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

सरकार जाने के बाद आती है दलित-पिछडों की याद: आशीष पटेल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपना दल के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष/कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल ने कहा कि यूपीए सरकार में मुलायम सिंह जब गृहमंत्री थे, तब सैनिक स्कूल में पिछडे और दलित बच्चों के पढने को आरक्षण की याद क्यों नहीं आई।

गुरुवार को सूबे के कैबिनेट मंत्री/अपना दल के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष आशीष पटेल जिला मुख्यालय के वृन्दावन गार्डेन में कार्यकताओं को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जब सपा की सरकार आती है तो कुछ लोग ही याद आते हैं। सरकार जाने के बाद पिछडे और दलित वर्ग की याद आती है। सपा के बनारस के बयान पर कहा कि धार्मिक स्थल का विकास हो रहा है तो किसी को पीडा नहीं होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि अपनी सरकार में विकास किये होते तो दूसरों के विकास में श्रेय लेने का मौका नहीं मिलता। अपना दल के दूसरे गुट कृष्णा पटेल के विवाद पर बोले कि राजनीति की लडाई नहीं, बल्कि सम्पत्ति की लडाई है। जब सोनेलाल पटेल की छोटी बेटी को हिस्सा मिल जायेगा तो ये विवाद खत्म हो जायेगा। इस मौके पर मानिकपुर विधायक अविनाशचन्द्र द्विवेदी, मानिकपुर ब्लाक प्रमुख अरविन्द मिश्रा समेत अपना दल जिलाध्यक्ष सियाराम फौजी आदि तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

वन क्षेत्र में वन विभाग से एनओसी के बाद ही करें पट्टे: डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने तहसील कर्वी के गोण्डा गांव में गोंडा पहाड के गाटा संख्या 715 खण्ड संख्या 5बी एवं 6के रकबा 2.024 हेक्टेयर पत्थर खदानों के पट्टा स्थल का निरीक्षण किया।

गुरुवार को जिलाधिकारी ने पत्थर खदानों के पट्टा किये जाने के स्थल का निरीक्षण कर जिला खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह से कहा कि जो नये पट्टे होने हैं और जो पहले पट्टे किये गये थे, उसमें जितने पत्थर की खुदाई का कार्य हुआ है, उसकी लम्बाई की नाप हर हाल में की जाये। इससे एक अनुमान निकाला जायेगा कि जहां पर वन क्षेत्र नहीं है, वहां के पट्टे करवायें। जिन पट्टों का वन विभाग से एनओसी लेनी है, उसे प्रभागीय वनाधिकारी से सम्पर्क कर करायें।

उन्होंने कहा कि मुख्य मार्ग से ये सडक पहाड को जोडती है। इसका प्रस्ताव बनाकर बैठक में रखकर निर्माण कराया जाये। निरीक्षण दौरान उनके साथ एसडीएम सदर राजबहादुर, जिला खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह आदि मौजूद रहे।

मकर संक्रांति से पहले ठंड कम होने के आसार नहीं

मीरजापुर। कड़ाके की ठंड का दौर गुरुवार को भी बरकरार रहा। अधिकतम तापमान 24 और न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस रहा। कई दिनों से चल रही ठंड हवा की गति भी बरकरार है। इससे गलन में कोई कमी नहीं आई है। हालांकि दोपहर धूप निकलने पर कुछ हद तक राहत मिलने लगी है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि मकर संक्रांति से पहले ठंड से राहत के आसार नहीं हैं। ठंड का असर इतना ज्यादा है कि शाम होते ही लोग घरों में कैद हो जाते हैं। खासकर बुजुर्ग, महिलाएं एवं बच्चे बाहर नजर ही नहीं आ रहे हैं। हालांकि घरों में कमरे के अंदर भी तापमान में तेजी से गिरावट आई है। इसके चलते लोगों को रूम हीटर का सहारा लेना पड़ रहा है।

पेरिस के रेलवे स्टेशन पर चाकुओं से हमला, पुलिस ने हमलावर पर बरसाई गोलियां

पेरिस। फ्रांस की राजधानी पेरिस के एक व्यस्त रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति ने आधा दर्जन से अधिक लोगों को चाकुओं से हमला कर जख्मी कर दिया। हमलावर को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को उस पर गोलियां बरसानी पड़ीं।

फ्रांस की राजधानी पेरिस के व्यस्ततम रेलवे स्टेशनों में से एक गैर दु नार्द में सुबह हड़कंप मच गया। सुबह छह बजकर पैंतालीस मिनट पर एक हमलावर ने अचानक स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे लोगों पर चाकू चलाने शुरू कर दिये। चाकूबाजी में आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। अचानक हुई चाकूबाजी से स्टेशन पर भगदड़ मच गयी। लोग चीख-पुकार कर इधर उधर भागने लगे। हंगामे से सचेत हुई पुलिस ने हमलावर पर काबू पाने की कोशिश की किन्तु वह नियंत्रित नहीं हो रहा था। इस पर पुलिस को हमलावर पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी पड़ीं। कई चक्र फायरिंग के बाद हमलावर काबू में आया। गोलियां लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती

कराया गया है। हमलावर के शिकार चाकू से जख्मी लोग भी अस्पताल में भर्ती कराए गए हैं। गैर दु नोर्द स्टेशन फ्रांस ही नहीं, यूरोप के प्रमुख और व्यस्त स्टेशनों में से एक माना जाता है। यह स्टेशन पेरिस को लंदन और उत्तरी यूरोप से जोड़ता है। फ्रांस में रेल सेवाओं को संचालित करने वाले रेल ऑपरेटर एसएनसीएफ की ओर से जानकारी दी गयी कि इस हमले के बाद स्टेशन का यातायात बाधित हुआ। एसएनसीएफ के आधिकारिक ट्विटर एकाउंट से ट्वीट कर दावा किया गया कि इलाके में एक सुरक्षा घेरा तैयार किया गया है लेकिन स्टेशन सामान्य रूप से काम कर रहा है। पेरिस पुलिस ने एक बयान जारी कर कहा कि इस हमले में आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं, जिनमें एक काफी गंभीर है। पुलिस के मुताबिक अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि व्यक्ति ने चाकू से लोगों पर हमला क्यों किया। फ्रांस के गृह मंत्री जेराल्ड डर्मैनिन हमले के तुरंत बाद गैर दु नोर्द रेलवे स्टेशन पहुंचे और वहां की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। घटना की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि स्टेशन परएक व्यक्ति ने कई लोगों को घायल कर दिया। हालांकि, हमलावर पर कुछ ही देर में काबू पा लिया गया। हमले के बाद पुलिस ने पूरे इलाके की सुरक्षा बढ़ा दी है। रेलवे स्टेशन की सुरक्षा में लगे पुलिसकर्मियों को शाबासी देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने हमलावर को समय रहते काबू में कर लिया नहीं तो हमलावर कई और लोगों को नुकसान पहुंचा सकता था।

प्रचंड के प्रधानमंत्री बनते ही नेपाल ने फिर जताया भारतीय क्षेत्रों पर अपना दावा

काठमांडू। नेपाल में पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचंड के प्रधानमंत्री बनते ही भारत विरोधी सुर सुनाई देने लगे हैं। नेपाल की नई सरकार के न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के उत्तराखंड राज्य में स्थित लिम्पियाधुरा, कालापानी और लिपुलेख को वापस लेने का वादा किया गया है।

नेपाल के नए प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड को चीन का करीबी माना जाता है। अब प्रचंड के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत विरोध पर आधारित नेपाली राष्ट्रवाद को हवा देने की फिर से शुरुआत हो गई है। नई नेपाल सरकार के न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अंतर्गत जारी दस्तावेजों में कहा गया है कि भारत ने कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा इलाकों पर अवैध कब्जा कर रखा है। वादा किया गया है कि नई सरकार इन इलाकों को वापस लाएगी।

उल्लेखनीय है कि पहले भी

नेपाल इन इलाकों पर अपना दावा पेश करता रहा है। ये इलाके उत्तराखंड सीमा पर नेपाल से सटे हुए हैं। खास बात ये है कि जिन इलाकों पर नेपाल कब्जा जमाना चाहता है, उन इलाकों को साल 2019 और साल 2020 के राजनीतिक नक्शे में भारत अपनी सीमा के अंदर बता चुका है। इस बात पर उस समय नेपाल और भारत के बीच काफी विवाद भी देखने को मिला था। अब न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अंतर्गत नेपाल सरकार ने क्षेत्रीय अखंडता, संप्रभुता और स्वतंत्रता को मजबूत करने की बात कही है। इसके अंतर्गत प्रचंड सरकार ने भारत को तो निशाने पर लिया है, किन्तु चीन के साथ सीमा विवाद का जिक्र न्यूनतम साझा कार्यक्रम में नहीं किया गया है। न्यूनतम साझा कार्यक्रम के दस्तावेजों में यह जरूर कहा गया है कि नेपाल सरकार दोनों पड़ोसी देशों, भारत और चीन से संतुलित राजनयिक संबंध चाहती है। दावा किया गया है कि नेपाल की दहल सरकार सबसे दोस्ती और किसी से दुश्मनी नहीं वाले मंत्र के साथ आगे बढ़ेगी।

नेपाल के नए प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड को चीन का करीबी माना जाता है। अब प्रचंड के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत विरोध पर आधारित नेपाली राष्ट्रवाद को हवा देने की फिर से शुरुआत हो गई है।

पंजाब विधानसभा में मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही ने विश्वास मत किया हासिल

लाहौर। पाकिस्तान की पंजाब विधानसभा में मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही ने आधी रात को विश्वास मत हासिल किया। पाकिस्तान मुस्लिम लीग- (नवाज) के पंजाब के गवर्नर बालीगुर रहमान ने विधानसभा भंग होने से रोकने के लिए पिछले महीने मुख्यमंत्री इलाही को विश्वास मत साबित करने को कहा था। इसके बाद उनके आदेश का पालन न करने पर उन्होंने इलाही और उनके मंत्रिमंडल को भंग कर दिया था। हालांकि लाहौर उच्च न्यायालय ने यह फैसला पलट दिया था। लाहौर उच्च न्यायालय ने बुधवार को इस मामले में सुनवाई की और कहा कि मुख्यमंत्री को विश्वास मत हासिल करना होगा। अदालत के आदेश के बाद इलाही ने विपक्ष के विरोध के बीच बुधवार देर रात एक बजे तक चले सत्र में पंजाब विधानसभा से आवश्यक 186 वोट हासिल किए।पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष सिब्तैन खान ने सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि मुख्यमंत्री इलाही को विश्वास मत हासिल करने के लिए आवश्यक 186 वोट मिल गए हैं। पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) के नेतृत्व में विपक्ष ने सत्र का बहिष्कार किया और विश्वास मत प्रक्रिया को अदालत में चुनौती देने की घोषणा की। गौरतलब है कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान ने अपनी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) की हुकूमत वाले प्रांतों (पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा) की विधानसभाओं को भंग करने की घोषणा की थी, ताकि पीएमएल-एन के नेतृत्व वाले संघीय गठबंधन पर मध्यावधि चुनाव कराने का दबाव बनाया जा सके।

पाक के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधा

लाहौर। पाकिस्तान के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान ने सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है और अब वे दुनिया से भीख मांग रहे हैं। पाकिस्तान और संयुक्त राष्ट्र की मेजबानी में जिनेवा मेंहुए दानदाताओं के सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने पिछले साल आई भीषण बाढ़ के बाद आर्थिक संकट से जूझ रहे देश को जलवायु अनुकूल तरीके से पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए 10 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक धनराशि देने का वादा किया है, जिसके बाद खान की यह टिप्पणी आई है। अपनी पार्टी के सांसदों को वीडियो के जरिए संबोधित करते हुए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष ने पाकिस्तान के मुकाबले भारत और बांग्लादेश की प्रगति के बारे में भी बात की। खान ने कहा, 'केवल आईटी क्षेत्र का उदाहरण लें भारत का आईटी निर्यात 2000 में एक अरब अमेरिकी डॉलर था और आज यह 140 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। और देखें कि हम आज कहां खड़े हैं। दो परिवार - शरीफ और जरदारी - जो 35 साल तक सत्ता में रहे हैं, लेकिन उन्होंने कभी निर्यात पर ध्यान नहीं दिया।' खान ने कहा कि यह केवल इसलिए हुआ है क्योंकि धोखेबाजों का एक समूह हम पर थोप दिया गया है। खान ने कहा, शहबाज के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है और अब वे संघर्षरत अर्थव्यवस्था के लिए दुनिया से भीख मांग रहे हैं।

कोविड-19 से मरने वालों की संख्या को कम बता रहा चीनः डब्ल्यूएचओ

जेनेवा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने दावा किया है कि चीन कोविड-19 से मरने वालों की संख्या को कम करके बता रहा है।

डब्ल्यूएचओ ने कहा कि चीन कोविड-19 महामारी पर पहले की तुलना में अधिक जानकारी देने के बावजूद अभी भी महामारी से होने वाली मौतों की संख्या बेहद कम करके बता रहा है। कोविड-19 तकनीकी प्रमुख, मारिया वान केरखोव ने कहा कि चीन से मिलने वाली जानकारी में काफी खामियां हैं। इन खामियों को दूर करने के लिए हम चीन के साथ काम कर रहे हैं। दरअसल, पिछले साल दिसंबर में शून्य-कोविड उपाय समाप्त किए जाने के बाद चीन में कोविड-19 का संक्रमण बढ़ गया है।

चीन हालांकि इस बात से इनकार कर रहा है कि उसके द्वारा कोविड मौतों के आंकड़े छिपाया जा रहा है, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित विश्वभर के विशेषज्ञ यह मान रहे हैं कि चीन जानबूझकर कोविड से होने वाली मौतों की संख्या कम दिखा रहा है। चीन में कोविड के बढ़ते संक्रमण के चलते भारत सहित कई देशों ने चीन से आने वाले यात्रियों पर प्रतिबंध लगा दिया है। बीजिंग ने इस कदम

को राजनीतिक रूप से प्रेरित बताते हुए इसकी आलोचना की है। कोविड के मामलों में उछाल के बावजूद चीन में किसी नए कोविड वेरिएंट का पता नहीं चला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ऐसा परीक्षणों में कमी के कारण हुआ है। चीन में करीब एक महीने पहले शून्य कोविड नीति खत्म कर दी गई थी। इससे यहां कोविड मामलों में तेजी से उछाल आया और रिपोर्टों के अनुसार अस्पतालों और श्मशान घाटों तक की कमी हो गई। दिसंबर में चीन ने कोविड से होने वाली मौतें चिह्नित करने के मानदंड बदल दिए। इससे सरकारी आंकड़ों के अनुसार कोविड से मरने वालों की संख्या में काफी कमी आई।

'समोसा कॉकस' ने नए भारतीय अमेरिकी सांसद थानेदार का किया स्वागत

वाशिंगटन। 'समोसा कॉकस' के भारतीय अमेरिकी सांसदों ने अमेरिकी प्रतिनिधिसभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं के एक विशेष समूह में श्री थानेदार के शामिल होने का स्वागत किया है। थानेदार पिछले साल नवंबर में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए पांचवें भारतीय-अमेरिकी हैं। वह उद्यमी से नेता बने हैं। थानेदार की जीत चार भारतीय अमेरिकी डेमोक्रेटिक सांसदों- डॉ एमी बेरा, प्रमिला जयपाल, रो खन्ना तथा राजा कृष्णमूर्ति के अमेरिकी प्रतिनिधिसभा के लिए पुनर्निर्वाचन के बाद हुई है। 'समोसा कॉकस' भारतीय-अमेरिकी सांसदों का एक अनौपचारिक समूह है जो या तो प्रतिनिधि सभा का हिस्सा हैं अथवा सीनेट का।इस शब्द (टर्म) सांसद राजा कृष्णमूर्ति ने दिया था जिसका मकसद अमेरिकी कांग्रेस में ''देसी'' सांसदों की बढ़ती संख्या को रेखांकित करना था। सांसद बेरा ने कहा, '' जब मैंने 2013 में कार्यभार संभाला था, तब मैं कांग्रेस में इकलौता भारतीय अमेरिकी सदस्य था और इतिहास में तीसरा। उस दिन के बाद से मैं इस बात के लिए प्रतिबद्ध था कि हम कांग्रेस में अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाएं।'' उन्होंने कहा, '' पिछले दशक में मेरे साथ भारतीय अमेरिकी -जयपाल, खन्ना और कृष्णमूर्ति शानदार सहयोगी बने और इसके लिए मुझे गर्व है। 118वें कांग्रेस के गठन के साथ हमारा संगठन विस्तृत हुआ है क्योंकि इसमें थानेदार शामिल हुए हैं।'' सांसद जयपाल ने कहा, '' जब हमारे पास सबसे विविध कांग्रेस है, मुझे एहसास है कि देश भर में प्रत्येक समुदाय तथा संस्कृति के लिए प्रतिनिधित्व कितना मायने रखता है।

एफएए पर साइबर हमले के कोई सबूत नहीं : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस ने कहा कि पायलटों और अन्य कर्मियों को हवाई मुद्दों के बारे में अलर्ट करने वाली एक प्रणाली में तकनीकी खराबी आने के मामले में किसी साइबर हमले के कोई सबूत नहीं हैं। तकनीकी खराबी आने के चलते अमेरिका में सैकड़ों विमानों का परिचालन रोक दिया गया था। उड़ानों पर नजर रखने वाली कंपनी 'फ्लाइट अवेयर' के अनुसार इस खराबी के कारण घरेलू, अमेरिका आने तथा यहां से जाने वाली 9,500 से अधिक उड़ानों के परिचालन में देरी हुई, जबकि 1,300 उड़ाने रद्द की गईं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन ज्यां-पियरे ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, '' फिलहाल साइबर हमले का कोई सबूत नहीं है।राष्ट्रपति ने परिवहन मंत्रालय को कारणों की पूरी जांच करने और इसके बार में जानकारी देने का निर्देश दिया है। प्रतिदिन हवाई सफर करने वाले अमेरिकियों की सुरक्षा शीर्ष प्राथमिकता है। '' उन्होंने कहा, '' हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि वे सुरक्षित हों। यह राष्ट्रपति, परिवहन मंत्रालय खास तौर पर एफएए की शीर्ष प्राथमिकता है। हम कारणों के बारे में जानना चाहते हैं ताकि ऐसा दोबारा न हो।'' परिवहन मंत्री पेटे बटिगिएग ने कहा कि उन्होंने मूल कारणों को जानने के लिए एक प्रक्रिया का निर्देश दिया है और आगे की कार्रवाई के संबंध में कुछ सिफारिशें भी की हैं।

अमेरिका में पांच घंटे बाद शुरू हुआ विमान सेवाओं का संचालन, सिस्टम में खराबी से ठप रहीं उड़ानें

वाशिंगटन। अमेरिका में कंप्यूटर सिस्टम में गड़बड़ी के बाद ठप हुईं विमान सेवाएं पांच घंटे बाद शुरू हो गई। संघीय एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) ने इस गड़बड़ी को ठीक करने के बाद संचालन शुरू किया गया। एफएए ने संचालन शुरू होने की जानकारी ट्वीट कर दिया गया, नोटिस टू एयर मिशन सिस्टम के रातभर के आउटेज के बाद पूरे अमेरिका में सामान्य हवाई यातायात संचालन धीरे-धीरे फिर से शुरू हो गया। इसके बाद ग्राउंड स्टॉप को हटा लिया गया है। इससे पहले प्रशासन ने कहा था कि वह अपने नोटिस टू एयर मिशन सिस्टम को बहाल करने के लिए काम कर रहा है। उन्होंने बताया था कि नेशनल एयरस्पेस सिस्टम में संचालन प्रभावित हैं। इधर, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने परिवहन विभाग को आउटेज की जांच करने का आदेश दिया और कहा कि इस समय विफलता का कारण अभी स्पष्ट है। इस खराबी के पीछे कोई साइबर हमला होने संबंधी एक सवाल के जवाब में बाइडेन ने व्हाइट हाउस में संवाददाताओं से कहा कि हमें इसके बारे में कोई

जानकारी नहीं, हम नहीं जानते हैं।

वहीं, एफएए ने कहा कि ऐसी प्रणाली को बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं, जो पायलटों को खतरों और हवाई अड्डे की सुविधाओं और प्रक्रियाओं में बदलाव के बारे में जानकारी देगी, जिसे बंद कर दिया था। मालूम हो कि एफएए अभी भी आउटेज के बाद नोटिस टू एयर मिशन सिस्टम (एनओटीएएम) प्रणाली को पूरी तरह से बहाल करने के लिए काम कर रहा है। बता दें कि कंप्यूटर सिस्टम में गड़बड़ी के कारण पूरे अमेरिका में उड़ान सेवाएं प्रभावित हुई थीं। इससे पूरी तरह से विमानों का संचालन बंद हो गया था। इसकी जानकारी मिलते ही एफएए ने कमान संभाली और समस्या को खत्म करने में जुट गई थी, जिसे अब सामान्य कर लिया गया है। हालांकि, पूर्ण रूप से अभी तक विमानों का संचालन शुरू नहीं हो सका है।

काबुल में विदेश मंत्रालय के सामने आत्मघाती धमाका, 20 से ज्यादा की मौत

काबुल। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के विदेश मंत्रालय भवन के सामने हुए आत्मघाती धमाके में 20 से ज्यादा लोगों की मौत हो गयी। जिस समय धमाका हुआ, उस समय अफगानी विदेश मंत्रालय के भीतर चीन के प्रतिनिधियों के साथ बैठक चल रही थी।

अफगानिस्तान में तालिबान की सत्ता आने के बाद भी आतंकी गतिविधियां थमने का नाम नहीं ले रही हैं। राजधानी काबुल स्थित विदेश मंत्रालय के कार्यालय परिसर में चीन से जुड़े मसले पर बैठक चल रही थी। बैठक में तालिबान के साथ चीनी प्रतिनिधि भी शामिल थी। इसी दौरान परिसर के बाहर तेज धमाके सुनाई देने लगे। धमाकों से आग लग गयी और चीख-पुकार सुनाई देने लगी। पता चला कि एक आत्मघाती हमलावर ने विस्फोट कर पूरे क्षेत्र को दहला दिया था। इस कारण वहां लाशें बिछी दिखाई दीं। बताया गया कि बीस से अधिक लोगों की मौत हुई है। भारी संख्या में लोग घायल भी हुए हैं।

धमाके के बाद वहां भगदड़ मच गयी। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां आग बुझाने के लिए बुलाई गयीं, वहीं घायलों को अस्पताल पहुंचाने के लिए एंबुलेंस

बैठक में तालिबान के साथ चीनी प्रतिनिधि भी शामिल थी। इसी दौरान परिसर के बाहर तेज धमाके सुनाई देने लगे। धमाकों से आग लग गयी और चीख-पुकार सुनाई देने लगी।

पहुंचीं। अफगानिस्तान के आंतरिक मंत्रालय के प्रवक्ता नफी तकूर ने घटना की पुष्टि की। घटना में बीस से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, वहीं भारी संख्या में लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है। घायलों में कुछ की हालत गंभीर बताई गयी है, इसलिए मृतक संख्या बढ़ने की संभावना जताई जा रही है।

भारत और अमेरिका डब्ल्यूटीओ विवादों का चाहते हैं समाधान: पीयूष गोयल

नई दिल्ली/वाशिंगटन। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत और अमेरिका लंबे समय से चले आ रहे डब्ल्यूटीओ विवादों का द्विपक्षीय समाधान चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अगला जी-20 शिखर सम्मेलन भारत के लिए अपनी कई क्षमताओं को दिखाने और कई चुनौतियों का नेतृत्व करने का एक ह्लबहुत बड़ा अवसरह्व है। वाशिंगटन में 13वें भारत-अमरीका व्यापार नीति मंच की बैठक के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में गोयल ने बुधवार को यह बात कही। वाणिज्य मंत्री गोयल अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन ताई के साथ भारत-अमेरिका व्यापार नीति मंच की बैठक की सह-अध्यक्षता की।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

यूनान के अंतिम राजा कान्स्टेंटाइन द्वितीय का निधन, जीता था ओलंपिक स्वर्ण पदक

एथेंस। यूनान के अंतिम राजा कान्स्टेंटाइन द्वितीय का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वर्ष 1964 में 23 वर्ष में यूनान के राजा बनने वाले कान्स्टेंटाइन द्वितीय ने ओलंपिक स्वर्ण पद भी जीता था। यूनान के पूर्व व अंतिम राजा कान्स्टेंटाइन द्वितीय का एथेंस के एक निजी अस्पताल में 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अस्पताल की ओर से जानकारी दी गयी कि सघन चिकित्सा कक्ष में इलाज के दौरान उनका निधन हुआ। वर्ष 1964 में 23 साल की उम्र में कान्स्टेंटाइन द्वितीय ने यूनान के राजा के रूप में काम संभाला था।

इससे पहले नौकायन में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने के कारण वह पहले ही बहुत लोकप्रिय थे और राजा बनने के बाद उनकी शोहरत में इजाफा

हुआ। कान्स्टेंटाइन द्वितीय का जन्म दो जून 1940 को एथेंस में हुआ था। उनके पिता प्रिंस पॉल और मां हनोवर की राजकुमारी फेडेरिका थीं। वर्ष 1967 में सैन्य तख्तापलट के बाद कान्स्टेंटाइन ने यूनान के सैन्य शासकों से लोहा लिया किन्तु उन्हें निर्वासन का सामना करना पड़ा। तानाशाही ने 1973 में राजशाही को समाप्त कर दिया और 1974 में लोकतंत्र बहाल होने के बाद हुए जनमत संग्रह ने कान्स्टेंटाइन द्वितीय के फिर से शासन करने की हर उम्मीद को तोड़ दिया। इसके बाद के दशकों में उनकी यूनान यात्राओं में बेहद कमी आई और हर बार उनकी यात्रा के दौरान राजनीतिक तूफान ही खड़ा हुआ। जीवन के आखिरी कुछ वर्षों में वह अपने गृह देश में बसने में कामयाब हुए।